वर्ष : 35, अंक : 136, (अक्तूबर–दिसंबर, 2012)

राजभाषा भारती

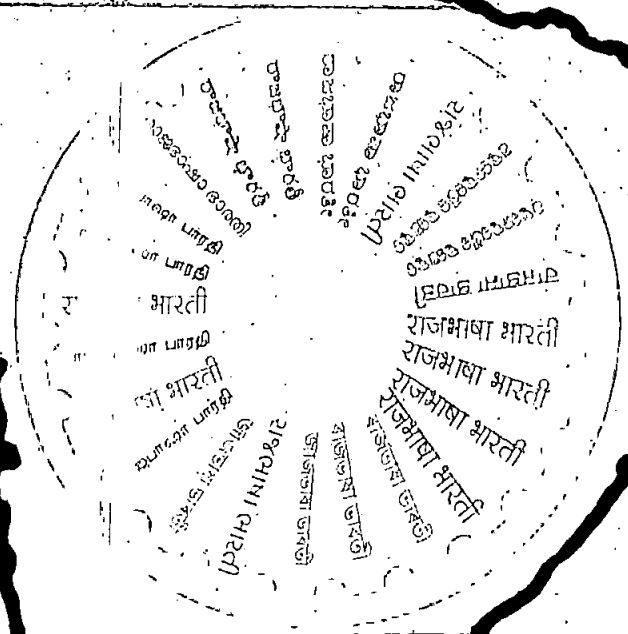

राजभाषा विभाग,
गृह मंत्रालय, भारत सरकार,
नई दिल्ली

जन जन की भाषा है हिंदी

अंडमान तथा निकोबार प्रशासन पोर्टब्लेयर में 'कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने का प्रशिक्षण' में गृह मंत्रालय के कंप्यूटर विशेषज्ञ श्री केवल कृष्ण, तकनीकी निदेशक (एनआईसी) संबोधन करते हुए। मंच पर बाएं से राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के प्रतिनिधि श्री हरि ओम शर्मा, अंडमान निकोबार प्रशासन, सूचना प्रौद्योगिकी के विशेष सचिव श्री उत्पल शर्मा, तथा डॉ. जयदेव सिंह, प्राचार्य, टैगोर राजकीय शिक्षा महाविद्यालय।

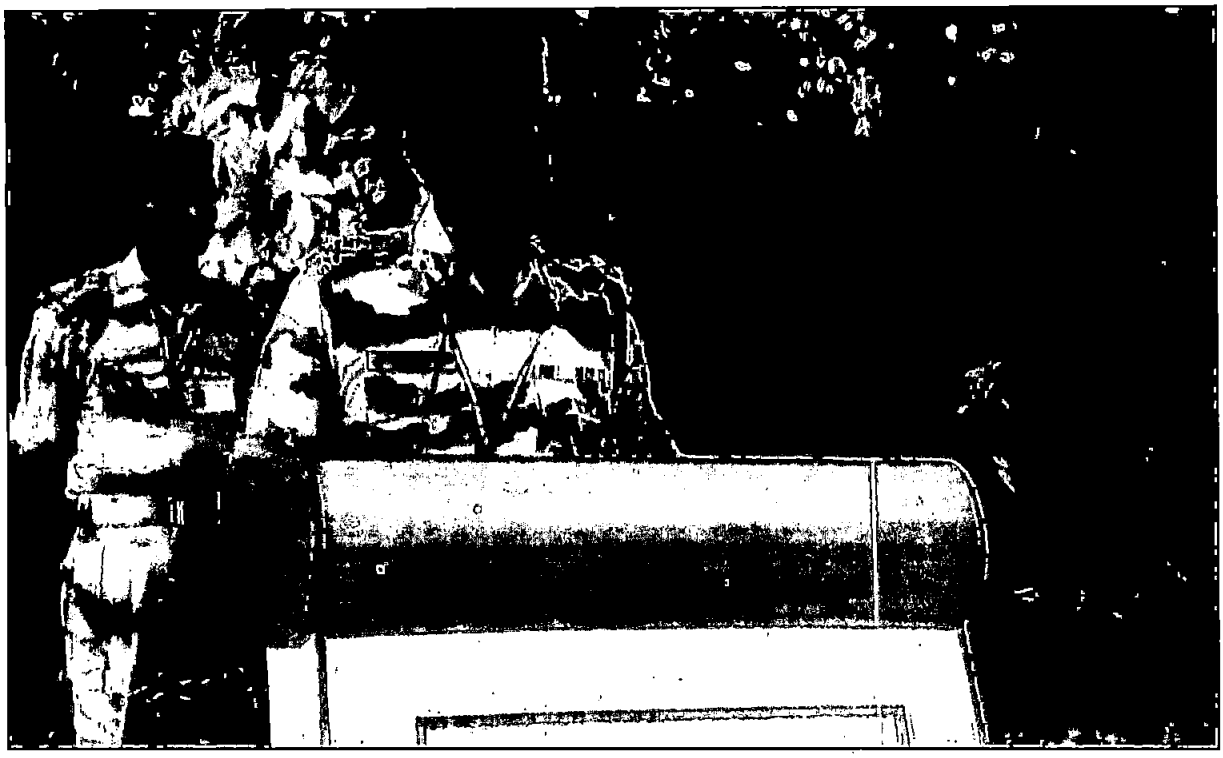

भारत तिब्बत सीमा पुलिस महानिदेशालय, नई दिल्ली में हिंदी पखवाड़े के दौरान संबोधित करते हुए श्री बी. के. मौर्य, महानिरीक्षक।

भारति जय विजय करे, कनक-शस्य-कमल धरे

—निराला

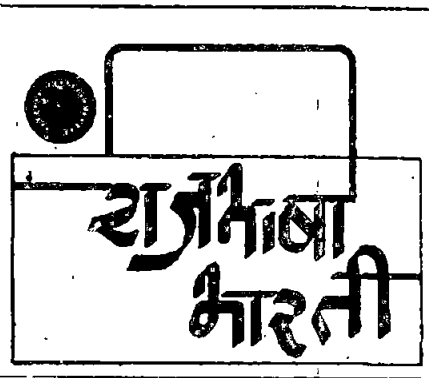

राजभाषा विभाग की त्रैमासिकी

वर्ष : 35

अंक : 136

(अक्तूबर—दिसंबर, 2012)

❑ संरक्षक :
अरुण कुमार जैन आई.ए.एस.
सचिव, राजभाषा विभाग

❑ परामर्शदाता :
डी.के. पाण्डेय
संयुक्त सचिव (रा.भा.-I)
आर.के. कालिया
संयुक्त सचिव (रा.भा.-II)

❑ संपादक :
हरिन्द्र कुमार
निदेशक कार्यान्वयन
दूरभाष : 011-23438129

❑ सहायक संपादक :
शांति कुमार स्याल
दूरभाष : 011-23438137

❑ संपादन सहयोग :
हरीश कुमार
अनिल कनौजिया

❑ नि:शुल्क वितरण के लिए :
पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं । सरकार अथवा राजभाषा विभाग का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

❑ अपना लेख एवं सुझाव भेजें :
संपादक, राजभाषा भारती,
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,
एन डी सी सी-II भवन, चौथा तल,
बी विंग, जय सिंह रोड,
नई दिल्ली-110001
ईमेल—patrika—ol@nic.in
पोर्टल—www.rajbhasha.gov.in.

विषय-सूची

		पृष्ठ
❑ संपादकीय		(iii)
❑ चिंतन		
1. हिंदी को राष्ट्रीय संस्कृति बनानी होगी	—डॉ. एम.डी. थॉमस	1
2. हिंदी भाषा का अन्य भारतीय भाषाओं से संबंध और अंतरभाषीय अनुवाद	—प्रो. त्रिभुवन नाथ शुक्ल	6
3. भाषा एक समझौता है	—डॉ. माणिक मृगेश	11
4. हिंदी : तब से अब तक	—ओम मल्होत्रा	13
5. राजभाषा कार्यान्वयन का दायित्व—कार्यपालकों की भूमिका	—दिलीप कुमार	16
6. विधि के क्षेत्र में राजभाषा हिंदी	—डॉ. एम.सी. पांडेय	19
❑ साहित्यिकी		
7. चौरसिया के चार रस	—ब्रज किशोर शर्मा	21
8. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता की वैचारिक अवधारणा	—अंनीता पंडा	24
❑ पुरानी यादें-नए परिप्रेक्ष्य में		
9. तुलसी और एषुत्तच्छन	—डॉ. एन. मोहनन	27
❑ पर्यावरण		
10. ग्लोबल वार्मिंग से बदलता पृथ्वी का मिजाज	—डॉ. दीपक कोहली	32
❑ राजभाषा संबंधी गतिविधियां		34
(क) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें		34

'ग' क्षेत्र : आयकर आयुक्त, शिलांग; आकाशवाणी, कोलकाता; सिंडीकेट बैंक, मणिपाल; पावर ग्रिड, जम्मू; खादी और ग्रामोद्योग आयोग, हैदराबाद;

'ख' क्षेत्र : आयकर निदेशक, लुधियाना; आयकर आयुक्त, लुधियाना; कर्षक मशीन कारखाना, नाशिक रोड; केंद्रीय उत्पाद तथा सीमा शुल्क, नाशिक; आकाशवाणी, राजकोट; दूरदर्शन केंद्र, जालंधर;

4780 HA/12—1A

'क' क्षेत्र : केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क आयुक्तालय, मेरठ; पूर्व मध्य रेल, हाजीपुर; केंद्रीय उत्पादन सीमा शुल्क एवं सेवाकर, भोपाल;

(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें 39

'क' क्षेत्र : जयपुर; आकाशवाणी, छत्तरपुर; फरीदाबाद;

(ग) कार्यशालाएं 40

'ग' क्षेत्र : मुख्य आयकर आयुक्त, शिलांग; सीमा शुल्क आयुक्त, शिलांग; हवाई अड्डा, चेन्नई; भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, कोलकाता; एनएचपीसी लि., कोलकाता; नराकास दावणगेरे; दूरसंचार, दावणगेरे;

'ख' क्षेत्र : गोला बारूद फैक्टरी, पुणे; आकाशवाणी, भुज; नाईपर, एस.ए.एस. नगर; आकाशवाणी, नागपुर; दूरदर्शन केंद्र, जालंधर;

'क' क्षेत्र : रेलवे बोर्ड, नई दिल्ली; आकाशवाणी, नई दिल्ली; राष्ट्रीय जन सहयोग एव बाल विकास संस्थान, नई दिल्ली; बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केंद्र, बालाघाट; एनएचपीसी, फरीदाबाद;

(घ) हिंदी दिवस 45

'ग' क्षेत्र : केरिपुबल, शिलांग; दक्षिण पूर्व रेलवे, कोलकाता; परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद; वैमानिक गुणता आश्वासन, हैदराबाद; दूरदर्शन केंद्र, गान्तोक; दूरदर्शन केंद्र, कोहिमा; आकाशवाणी एवं दूरदर्शन, गुवाहाटी; आकाशवाणी और दूरदर्शन, कोलकाता; आकाशवाणी, कडपा केंद्र; आकाशवाणी, हैदराबाद; आकाशवाणी, कोलकाता; आकाशवाणी, कटक; दूरसंचार, दावणगेरे; दूरसंचार, आलप्पुषा; दूरसंचार, सेलम; भासंनिलि, मदुरै; टेलीफोन, चेन्नई; कर्मचारी राज्य बीमा निगम, गुवाहाटी; कर्मचारी राज्य बीमा निगम, कोयम्बत्तूर; कर्मचारी राज्य बीमा निगम, सनतनगर; कर्मचारी राज्य बीमा निगम, जम्मू; एनएचपीसी लि., कोलकाता; केंद्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर; भारतीय खाद्य निगम, कोलकाता; खादी और ग्रामोद्योग आयोग, हैदराबाद; खादी और ग्रामोद्योग आयोग, गुवाहाटी; तमिलनाडु केंद्रीय विश्वविद्यालय तिरुवारूर;

'ख' क्षेत्र : राष्ट्रीय बचत संस्थान, नागपुर; पश्चिम रेलवे, दाहोद; गोला बारूद फैक्टरी, पुणे; पश्चिम रेलवे, भावनगर, परा; रेलवे स्टाफ कालेज, बडोदरा; परमाणु ऊर्जा विभाग, नवी मुंबई; दूरदर्शन केंद्र, नागपुर; आकाशवाणी सोलापुर; नाईपर, एसएएस नगर; सेमी-कंडक्टर लेबोरेटरी, एस ए एस नगर; भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़, रूप नगर, केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधानशाला, पुणे; कर्मचारी राज्य बीमा निगम, लुधियाना; कर्मचारी राज्य बीमा निगम, पणजी; दि न्यू इंडिया एश्योरेन्स कं. लि., लुधियाना; जवाहर लाल नेहरू पत्तन न्यास, नवी मुंबई;

'क' क्षेत्र : केरिपुबल, भोपाल; आयकर आयुक्त, भोपाल; खान सुरक्षा महानिदेशालय, ग्वालियर; उत्तर पश्चिम रेलवे, जोधपुर; फिल्म प्रभाग, नई दिल्ली; केरिपुबल, सोनीपत; भा.ति.सी.बल., महानिदेशालय, नई दिल्ली; कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नोएडा; क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र, रांची; राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान, नई दिल्ली; कोयला खान भविष्य निधि, रांची; हवाई अड्डा, रांची; दूरदर्शन केंद्र, दिल्ली; दूरदर्शन केंद्र, लखनऊ; आकाशवाणी, जोधपुर; सिंडीकेट बैंक, गाजियाबाद; हवाई अड्डा, जयपुर; कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नोएडा; कर्मचारी राज्य बीमा निगम मुख्यालय, नई दिल्ली;

❑ संगोष्ठी/सम्मेलन 67

9वां विश्व हिंदी सम्मेलन; दक्षिण मध्य रेलवे, सिकंदराबाद; मध्य रेल, पुंणे; एनआईटीटीटीआर, भोपाल; बैंक ऑफ इंडिया, नई दिल्ली; भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून;

❑ प्रतियोगिता/पुरस्कार 72

सिंडिकेट बैंक, मणिपाल; आकाशवाणी. पणजी; एनएचपीसी लि., कोलकाता;

❑ प्रशिक्षण 73

❑ कार्यालय-ज्ञापन 90

❑ पाठकों के पत्र 91

संपादकीय

14 सितंबर, 1949 को हिंदी राजभाषा घोषित हुई । तब से 14 सितम्बर को हिंदी दिवस मनाया जाता है । इस दिन खासतौर पर केंद्र सरकार के कार्यालयों और संस्थाओं में तथा हिंदी संस्थानों में एक भव्य समारोह होता है । कुछ निजी प्रतिष्ठानों तथा हिंदी के विद्वानों के जमघटों में भी गोष्ठी परिसंवाद का रूप लेती है । यह समारोह 'हिंदी सप्ताह', 'हिंदी पखवाड़ा' और 'हिंदी माह' के रूप में भी व्यापक हो गया है । हिंदी दिवस संबंधी प्राप्त रिपोर्टों से पता चलता है कि मानो पूरा देश हिंदीमय हो गया है । देश में ही नहीं अब अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भी हिंदी भाषा पहुंच गई है । 22-24 सितंबर, 2012 को त्रिदिवसीय 9वां विश्व हिंदी सम्मेलन महात्मा गांधीजी की कर्म भूमि दक्षिण अफ्रीका के 'जोहान्सबर्ग' शहर में आयोजित किया गया । इस समारोह में देश-विदेश के हिंदी विद्वानों ने भाग लिया । इस सम्मेलन का मुख्य विषय वस्तु "भाषा की अस्मिता और हिंदी का वैश्विक संदर्भ" था । इस संबंध में पूरी रिपोर्ट 'संगोष्ठी/सम्मेलन' स्तंभ में देखी जा सकती है ।

'राजभाषा भारती' परिवार सदैव प्रयत्नशील रहा है कि राजभाषा भारती अपने उद्देश्यों में सफलता प्राप्त करे । यद्यपि, हमारा प्रयास रहा है कि सर्वोत्तम रचनाओं को ही पत्रिका में स्थान दिया जाए लेकिन साथ ही यह भी ध्यान दिया जाता है कि नए रचनाधर्मियों की नवांकुरित रचनाओं को भी जगह मिले ।

प्रस्तुत अंक में 'चिंतन' स्तंभ के अंतर्गत डॉ. एम.डी. थामस ने हिंदी को राष्ट्रीय संस्कृति बनाने के नुस्खे दिए हैं । वहीं प्रो. त्रिभुवन नाथ शुक्ल ने हिंदी व भारतीय भाषाओं और अंतरभाषीय अनुवाद के संबंध में चर्चा की है । इसी तरह 'भाषा एक समझौता है' पर डॉ. माणिक मृगेश ने प्रकाश डाला है । 'हिंदी : तब से अब तक का इतिहास' तथा 'राजभाषा कार्यान्वयन पर श्री ओम प्रकाश ने कार्यपालकों की भूमिका के बारे में जानकारी दी है । विधि के क्षेत्र में राजभाषा हिंदी पर डॉ. एम.सी. पांडेय ने प्रकाश डाला है । 'साहित्यिक' स्तंभ के अंतर्गत चौरसिया के चार रस और और स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता की वैचारिक अवधारणा पर शोध लेख दिए गए हैं । 'पुरानी

यादें-नए परिप्रेक्ष्य में' इस बार तुलसी और एषुत्तच्छन का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। डॉ. दीपक कोहली ने 'ग्लोबल वार्मिंग से बदलता पृथ्वी का मिजाज' पर चिंता व्यक्त की है ।

सितम्बर माह में आयोजित हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़ा आदि से संबंधित रिपोर्टें जो समयावधि में प्राप्त हो गई थी, उन्हें पिछले अंक में दे दिया गया था । कुछ को इस अंक में अधिकाधिक स्थान देने का प्रयास किया गया है । शेष सामग्री को अगले अंक में स्थान देने का प्रयास किया जाएगा ।

इसके अतिरिक्त, राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के प्रति राजभाषा भारती की प्रतिबद्धता के अनुरूप राजभाषा संबंधी गतिविधियां तथा अन्य नियमित स्तंभ भी सदैव की भांति इस अंक में दिए जा रहे हैं ।

आशा है इस अंक को भी पाठकगण रुचिकर और उपयोगी पाएंगे । प्रबुद्ध पाठकों का सहयोग व उनकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी ।

—संपादक

चिंतन

हिंदी को राष्ट्रीय संस्कृति बनानी होगी

–डॉ. एम. डी. थॉमस*

हिंदी एक समृद्ध भाषा

भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है । अपने विचार दूसरों के सामने भली भांति प्रकट करना ही नहीं, दूसरों के विचार स्पष्टतया समझना भी भाषा का प्रयोजन है । इस माध्यम का दायरा जितना व्यापक है ठीक उतना ही मानव समाज में एकता होगी । गुणवत्ता के साथ-साथ दायरा बढ़ाते जाना भी भाषा के विकास की अहम प्रक्रिया है और यह प्रक्रिया किसी समुदाय, देश या विश्व के स्तर पर सामाजिक सरोकार कायम करने का बुनियादी कारक भी है । हिंदी एक सक्षम और समर्थ भाषा है । यह एक मानक जीवन भाषा है । यह अनेक बोलियों के सम्मिश्रण से बनी है । इसमें अनेक क्षेत्रों की संस्कृतियों को आत्मसात् करने की अद्‌भुत क्षमता है । एक विचार को व्यक्त करने के लिए हिंदी में कई शब्द मिलते हैं । आंलकारिक शैली हिंदी की एक बड़ी खासियत है । काव्यात्मक स्वभाव की वजह से भी हिंदी एक समृद्ध भाषा है । हिंदी जनभाषा के रूप में आम लोगों की भाषा भी है ।

हिंदी का विश्व रूप

हिंदी विश्व की भाषाओं में अहम् जगह रखती है । बोलनेवालों की तादाद के विचार से हिंदी दुनिया की चौथी बड़ी भाषा है । हिंदी भारत के कुछ 40 फीसदी लोगों की मातृभाषा है । यह 60 से 70 फीसदी भारतीयों द्वारा पढ़ी, समझी और बोली जाती है । भारत में हिंदी जानने वालों की संख्या अंग्रेजी से कुछ पांच गुना अधिक है । संस्कृत के शब्दों के साथ-साथ अरबी-फारसी और अन्य कई देशी तथा विदेशी भाषाओं के शब्दों के मिलन से हिंदी में व्यापकता और कुशलता आई है । खास तौर पर अरबी-फारसी के लफ्जों की बदौलत हिंदी काव्य विश्व के समूचे काव्यों में शुमार हुई है । पुरानी संस्कृत सम्मत शैली की जगह हिंदी बेहद उर्दू सम्मत होती भी जा रही है । साथ ही, नागरी लिपि में वैज्ञानिक लिपि की विशेषताएँ मौजूद हैं । इस कारण यह भाषा अंतरराष्ट्रीय संदर्भ में भी मान्यता हासिल करती जा रही है । विश्व हिंदी सम्मेलनों के द्वारा विविध देशों के हिंदी विद्वानों को हिंदी की अंतर्राष्ट्रीय संभावनाओं को साकार करने के मंच भी मिलते हैं । हिंदी भाषा अपनी बहुतरे निहित खूबियों के कारण व्यापक स्तर पर आपसी सरोकार की एक सशक्त कड़ी के रूप में विकसित हो रही है ।

राष्ट्र-भाषा हिंदी

राष्ट्र भाषा के रूप में हिंदी स्वाधीनता का प्रतीक है । भारत की अपनी भाषा को राष्ट्र स्तर पर औपचारिक स्वीकृति मिलना अंग्रेजी दासता से मुक्ति पाने की निशानी है । हिंदी में स्वदेशी शासन का भाव झलकता है । हिंदी स्वदेशी विचारों, आचारों, वेश भूषा तथा समूची जीवन शैली का संवाहक है । इस रूप में हिंदी राष्ट्रीय पहचान एवं गौरव के चिन्ह के रूप में स्थापित है । हिंदी देश की एकता का प्रतीक भी है । यह 'एक देश, एक औपचारिक भाषा' के सूत्र का परिचायक है । जब हिंदी को राष्ट्र भाषा का दर्जा मिला था तब हिंदी महज भारत की सबसे बड़ी भाषा थी । लेकिन, अब दक्षिण से लेकर उत्तर तक और पश्चिम से लेकर पूर्व तक भारत में पहले से कहीं बहुत ज्यादा हिंदी का प्रयोग हो रहा है । रेलवे का त्रिभाषा प्रयोग, हिंदी फिल्मों की लोकप्रियता, हिंदी प्रचार संस्थानों का प्रयास, रोजगार तथा सैर सपाटे के लिए लोगों का प्रवास, आदि से वर्तमान समय में हिंदी बखूबी प्रचारित और लोकप्रिय हुई है, यह बात बेहद सराहनीय

* बी. 503, संघ मित्र अपार्टमेंट्स, प्लाट-20, सवैक्टर-4, द्वारका, नई दिल्ली-110078

4780 HA/12—2A

है । इस लिहाज से हिंदी का भविष्य उज्जवल है, इसमें दो राय नहीं है ।

हिंदी की भूमिका

हिंदी की भूमिका को समझने के लिए 'हिंदू, हिंदी, हिंदुस्तान' के नारे को सही मायने में समझना होगा । 'हिंदी' इस नारे का केंद्र है । 'हिंदू' किसी एक संप्रदायविशेष का द्योतक न होकर भारत के उन तमाम लोगों पर लागू होता है 'जो हिंदी बोलता हो या समझता हो' । हिंदुस्तान वह जगह है जहाँ राष्ट्रीय तौर पर हिंदी सीखी, समझी, बोली और लिखी जाती है' । इस अर्थ में हिंदी भारत है और भारत हिंदी है, ऐसा कहने में अतिशयोक्ति नज़र नहीं आती है । हिंदी सिर्फ एक भाषा नहीं, एक राष्ट्र, धर्म, संस्कृति और चिंतन का परिचायक है । लेकिन, हिंदी को 'भारत में सब की भाषा हिंदी हो' और हिंदी के अलावा और कोई भाषा न रहे, ऐसे खूबसूरत, आदर्शवादी और खोखले विचार के मायाजाल से बाहर आना होगा । हिंदी को व्यावहारिक होकर मुख्य भाषा होने के साथ-साथ एक संयोजक भाषा के रूप में उभरना होगा । एक सफल संयोजिका की भूमिका को निभाने से ही हिंदी पूरे भारत को एक सूत्र में बांध पाएगी । इसी में राष्ट्र भाषा हिंदी का उज्ज्वल भविष्य है ।

हिंदी और अंग्रेजी

हिंदी को राष्ट्र भाषा के रूप में स्थापित करने का मतलब यह नही है कि हिंदी अंग्रेजी का दुश्मन बन कर उसकी खिलाफत करे । करीब दो दशक पहले कुछ हिंदी प्रेमी अति-आवेश में आकर 'अंग्रेजी हटाओ, हिंदी बढ़ाओ' का नारा लगाते थे । अभी भी कई लोग अंग्रेजों और अंग्रेजी का भला बुरा कहने में कोई कसर नहीं छोड़ते । परंतु यह नकारात्मक रवैया बेतुक और हिंदी के लिए अहितकर है । अंग्रेजी को हटाने से हिंदी बढ़े, यह कतई जरूरी भी नहीं है । साथ ही, दबाए जाने से कोई चीज दबती नहीं है । अंग्रेजी को हटाने के लिए जितना प्रयास किया जा रहा है उतना प्रयास हिंदी के विकास के लिए किया जाए तो निश्चित ही हिंदी के लिए बेहतर होगा । दूसरी भाषा का विरोध करने से हिंदी को कतई फायदा नहीं है । अंग्रेजी भाषा के प्रति पूर्वाग्रह रखना हिंदी के हित में नहीं है । 'कौन विदेशी, कौन स्वदेशी' यह चर्चा भाषा के संदर्भ में शोभा नहीं होती है । भारत में अंग्रेजों की शासन तवारीख के पन्नों पर ही अंकित नहीं होकर भारत के कोने कोने में जीवित है । हमें आदर्शात्मक रूख के स्थान पर यथार्थपरक रूख को अपनाना होगा । भाषा कोई भी हो, अगर सीखी जाए तो एक नई जनता और संस्कृति से जुड़ने में सहूलियत मिलेगी । भाषाएँ एक दूसरे की पूरक हैं और हिंदी और अंग्रेजी को इस कसौटी पर खरी उतरनी ही होगी ।

अंग्रेजी तो हटने की बजाय अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय दोनों स्तर पर लगातार बढ़ती रहती है । अंग्रेजी अंतरराष्ट्रीय संपर्क भाषा होने के साथ-साथ भारत की भी काफी हद तक संपर्क भाषा है । राष्ट्रीय स्तर पर काम चलाने के लिए भारत में हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी भी चाहिए । बोलने वालों की संख्या के आधार पर अंग्रेजी विश्व में प्रथम भाषा है । सिर्फ छब्बीस वर्णों की भाषा होने की वजह से सीखने, प्रयोग करने तथा प्रचलित होने में उसमें जो सुविधा है उसका कोई मुकाबला नहीं है । चिकित्सा, विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं यांत्रिकी के क्षेत्र में अंग्रेजी का योगदान कतई भुलाया नहीं जा सकता है । भारत में अंग्रेजी माध्यम के राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विद्यालयों की भरमार है । इतना ही नहीं, भूमण्डलीकरण के इस दौर में अंग्रेजी में झलकती अंतर्राष्ट्रीय विचारधारा और संस्कृति भी बेहद दुनिया के लिए अनिवार्य लगता है । हिंदी के उज्ज्वल भविष्य के रास्ते में रोड़ा अंग्रेजी न होकर हिंदीभाषियों की कमजोर मानसिकता और हिंदी पर राजनीति का दुष्प्रभाव है और उसे दूर करना हिंदी की भलाई के मद्देनजर सख्त आवश्यक है ।

हिंदी और प्रांतीय भाषाएं

कुछ लोगों का सोचना है कि हिंदी के विकास में भारत की प्रांतीय भाषाएं खतरा साबित होती हैं । लेकिन, प्रांतीय भाषाओं की अपनी-अपनी वजूद है और वे भारत की राष्ट्रीय पहचान के अभिन्न अंग हैं । प्रांतीय भाषाओं में प्रांतीय संस्कृतियाँ छिपी हुई हैं और प्रांतीय संस्कृतियों के समवाय में ही भारतीय प्रांतीय संस्कृति की कल्पना पूरी होती है । प्रांतीय संस्कृतियों से मिलकर राष्ट्र भाषा हिंदी एक 'साझी संस्कृति' का प्रतीक बन जाती है । इस लिए प्रांतीय भाषाओं का विकास और राष्ट्रभाषा हिंदी का विकास एक दूसरे के पूरक हैं । प्रांतीय भाषाओं पर हिंदी को जबरन लादी नहीं जानी चाहिए । उत्तर भारत के कुछ प्रांतों को छोड़कर अन्य प्रांतों के लोगों के साथ सार्थक रूप से संपर्क करने के लिए वहाँ की भाषाएं भी जरूरी हैं । हिंदी को भारत की सभी प्रांतीय भाषाओं के साथ मैत्रीपूर्ण भाव बनाए रखना और

4780 HA/12—2B

उनके साथ कदम में कदम मिलाकर चलना होगा । राष्ट्रभाषा हिंदी को यथार्थपरक रवैया, राष्ट्रीय भावना और समन्वयवादी दृष्टिकोण को अपनाते हुए भारतीय संस्कृति के सर्व समावशी रूप को निखारनी होगी । तभी हिंदी राष्ट्र भाषा के रूप में राष्ट्र संस्कृति बन सकेगी ।

हिंदी का राष्ट्रीय स्वरूप

हिंदी की अस्मिता राष्ट्रीय मानसिकता को अपनाने में निहित है । भारत की सभी भाषाओं और बोलियों को अपनी समझने और उनके स्वतंत्र विकास के लिए वातावरण निर्मित करने में यह मानसिकता प्रतिफलित होती है । हिंदी को भारत के सभी धर्म संप्रदायों के धर्मग्रन्थ, विचारधारा, जीवनदृष्टि, कला, जीवन शैली, आदि को हिंदी भाषा और साहित्य के अंग बनाना होगा । भारत में जो कुछ है वह सब कुछ हिंदी में लाए जाएं और उसे अपनापन प्रदान किया जाए, यह राष्ट्र भाषा का दायित्व है । हिंदी को सर्वधर्म, सर्व दर्शन और सर्व संस्कृति भाषा के रूप में विकसित होना अभी भी शेष है । आजादी के चिन्हों में राष्ट्रभाषा के अलावा राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान भी है । इन चिन्हों को राष्ट्रीय स्वीकृति देने के साथ-साथ ऐसी नीतियाँ बनायी जानी चाहिए जिनमे प्रांतीय भाषाओं के अच्छे तत्वों को हिंदी में और हिंदी की अच्छी चीजों को प्रांतीय भाषाओं में उपलब्ध किया जा सकें । हिंदी को राष्ट्रीय भावनाओं, विचारधाराओं और संस्कृतियों का संवाहक बनना होगा । भारत की एकता और अखंडता को बनाए रखने का यही एक कारगर रास्ता है ।

हिंदी और अहिंदीभाषी

भारत और विदेश के गैर हिंदीभाषी लोगों द्वारा हिंदी के लिए योगदान असल में बहुत ही निर्णायक और प्रशंसनीय रहा है । शब्दकोश, व्याकरण, आदि के निर्माण में विदेशी अग्रगण्य रहे । कतिपय भारतीय भाषाओं की लिपि भी विदेशियों का योगदान है । मिसाल के तौर पर, हिंदी के सबसे प्राचीन और प्रामाणिक व्याकरण दीशित्ज़ नामक रूसी विद्वान के नाम पर चलता है । कामिल बुलके द्वारा बनाए गए अंग्रेजी हिंदी शब्दकोश की एक अहम् मान्यता है । प्रामाणिक किताबों और लेखों के अलावा साहित्य के विविध विधाओं में भी विदेशी हिंदी विद्वानों की उनकी रचनाएँ अनगिनत हैं । गैर हिंदी मूल के भारतीय विद्वानों ने भी हिंदी को समृद्ध करने में काफी काम किया है । सैकड़ों की तादाद में गैर हिंदीभाषिओं ने हिंदी साहित्य के मौलिक विषयों पर शोध प्रबंध तैयार कर मूल्यवान योगदान भी दिए हैं । हिंदी के त्रुटिरहित वर्तनी के साथ साथ शुद्ध उच्चारण में अधिकांश अंहिंदीभाषी विद्वान काबिल-ए तारीफ हैं । अंहिंदीभाषी तथा पश्चिमी विद्वानों के ज़रिए उनकी अपनी भाषा और संस्कृति के मेल से हिंदी की विचारधाराओं तथा संस्कृति में बड़ी मात्राओं में विकास, संतुलन तथा पूर्णता भी आयी है, इस को भुलाया नहीं जा सकता । ऐसी वैचारिक और सांस्कृतिक समन्वय, असल में, राष्ट्र भाषा हिंदी की पूँजी हैं ।

हिंदी और हिंदीभाषी

हिंदी की गरिमा के लिये हिंदीभाषियों में ही सर्वाधिक सुधार लाने की जरूरत है । हिंदी क्षेत्र में ऐसे बेशुमार नमूने पाए जाते हैं जहाँ हिंदी गलत लिखी जाती है । स्थानीय बोली के प्रभाव से बहुत हिंदीभाषी लोग, अध्यापक भी, कतिपय शब्दों का गलत उच्चारण करते हैं । बाजार में ही नहीं, कक्षाओं और अखबारों में भी, हिंदी का गलत प्रयोग देखने को मिलता है । गैर हिंदीभाषियों से हिंदी के इस्तेमाल में कुछ गलतियाँ हो जाएं तो ताज्जुब की कोई बात नहीं है । लेकिन, हिंदीभाषियों द्वारा अपनी ही भाषा में वर्तनी और उच्चारण को ये गलतियाँ वास्तव में अक्षम्य ही नहीं, शर्मनाक भी है । इतना ही नहीं, हिंदीभाषी लोगों में अंग्रेजी के प्रति जितना मोह दिखाई दे रहा है, उतना अन्य भाषाभाषियों में नहीं है । कतिपय लोगों की ऐसी नौबत है कि हिंदी में दी गई बात का जवाब अंग्रेजी में मिलता है । कई हिंदीभाषियों की इस आदत से हिंदी का ही नहीं, उनका भी अपमान होता है जिनसे बातचीत होती है । साथ ही, हिंदी में बोलते समय बीच में कुछ शब्द, वाक्यांश या वाक्य अंग्रेजी में बोलना हिंदी के लिए कहाँ प्रतिष्ठा की बात है? राष्ट्र भाषा हिंदी को अपनी उचित गरिमा से युक्त करने के लिए हिंदीभाषियों में हिंदी के बोलने और लिखने में शुद्धता और हिंदी की गुण्वत्ता के प्रति प्रतिबद्धता लाने की जरूरत है । कहना पड़ रहा है कि इसके लिए हिंदीभाषियों में मानसिक बदलाव की सख्त आवश्यकता है ।

हिंदी और विविध समुदायों की भाषाएँ

आखिर भारतीयता क्या है? भारत में द्रविड़ भी है, आर्य भी है । अलग अलग जातियाँ, वर्ग, विचारधाराएँ, खान-पान, रहन-सहन, रीति-रिवाज, संस्कृतियाँ, आदि भारत देश के अंग है । ये बातें किसी न किसी समुदाय

की पहचान भी बनी हुई है? जाहिर है कि भारत के मूल निवासी आदिवासी या जनजाति या द्रविड लोगों के पूर्वज थे । हिंदू समुदाय हजारों-हजारों साल पहले से भारत में मौजूद हैं । जैन समुदाय ईसा पूर्व नौवीं और छठी शती के बीच से, बौद्ध समुदाय ईसा पूर्व छठी और चौथी शती के बीच से, यहूदी समुदाय ईसा पूर्व पांचवी शती से, ईसाई समुदाय पहली शती से और इस्लामी समुदाय सातवीं आठवीं शती से, पारसी समुदाय ग्यारहवीं शती से, सिक्ख समुदाय सोलहवीं शती से बहाई समुदाय उन्नीसवीं शती से भारत में वजूद रखते हैं । उपर्युक्त सभी समुदायों की अपनी-अपनी परंपरागत भाषाएं या बोलियाँ हैं । इन भाषाओं में तत्संबंधी समुदाय या परंपरा की विचारधारा और संस्कृति भी विद्यमान हैं । इस कारण उन्हें बढ़ने का पूरा अधिकार है । इन भाषाओं का संप्रदायीकरण होना नहीं चाहिए । वरन, राष्ट्र भाषा हिंदी को उन विचारधाराओं को आत्मसात कर अपनी सहज हृदय विशालता का परिचय देना होगा । हिंदी का सुनहरा भविष्य भी इसी मानसिकता में निहित है ।

हिंदी और आम आदमी

भाषा शब्द का मूल अर्थ 'बोलना' है, जो कि संस्कृत के 'भाष' धातु से निकलता है । भाषा इन्सान के विचार और भाव को इजहार करने का जरिया है । सभी भाषाएँ इन्सान की अभिव्यक्तियाँ है । सब भाषाओं का स्रोत भी मोटे तौर पर एक है । आम आदमी भाषा के दैनिक प्रयोग का खास केंद्र है । उसकी भावना और भाषा को इस्तेमाल करने की उसकी क्षमता दोनों के अनुसार भाषा में तब्दीली आती रहती है । उदाहरण के लिए, उज्जैन की पवित्र नदी 'क्षिप्रा' शब्द का उच्चारण आम आदमी के लिए मुश्किल होने के कारण 'शिप्रा' शब्द प्रयोग में आया है । इसी प्रकार अंग्रेजी शब्द 'ग्यारण्टी' के लिए समानांतर शब्द 'प्रत्याभूति' हिंदी में मौजूद होकर भी इस्तेमाल करने की सहूलियत को ध्यान में रखकर लोग अंग्रेजी शब्द 'गूयारंटी' शब्द ही ज्यादातर बोलते हैं । खास रूप से आम आदमी के प्रयोग की सरलता के विचार से हिंदी में, अन्य भाषाओं में भी, काफी बदलाव आता हुआ दिखायी देता है । यह बात भाषा की जीवंतता का परिचायक है । इस संदर्भ में, विशाल दायरे को खुद में समेटनेवाली हिंदी को विशेष तौर पर आम आदमी की भाषा कहना समीचीन लगता हैं ।

राष्ट्र-भाषा और 'वसुधैवकुटुंबकम्' की भावना

राष्ट्रभाषावाद की इमारत 'विविधता में एकता' के दर्शन की बुनियाद पर बनाई जानी चाहिए । इस दर्शन की रौशनी में भाषा संबंधी नीतियों को लागू किया जाना चाहिए। नागरिकता, इन्सानियत, आदि किसी एक कौम की बपौती न होकर किसी देश या विश्व की सार्वभौम धरोहर है । खण्डित मानसिकता से गिरफ्त न होकर मानवतावाद का ध्येय रखना समाज की भलाई के लिए दरकार है । कट्टर राष्ट्रवाद राष्ट्र के विनाश का कारण बन सकता है । जाति, नस्ल, वर्ग, प्रदेश, मजहब, संप्रदाय, भाषा, विचारधारा, संस्कृति, आदि पर आधारित राष्ट्रवाद मानवता के खिलाफ है । जो देश के प्रति समर्पित है, उसे इन्सानियत के प्रति भी समर्पित होना चाहिए । हकीकत में, सब मनुष्य विश्व मानव समाज के नागरिक हैं । विश्व समुदाय के प्रति प्रतिबद्धता इन्सान होने के नाते पहला कार्य है । सभी राष्ट्र एक दूसरे के पूरक हैं । राष्ट्रों को आपस में सहयोग करना चाहिए । समाज या देश की विभिन्न इकाइयों में आपसी निर्भरता, स्वीकृति तथा समन्वय से ही विश्व मानवता का कल्याण होगा । राष्ट्रों में आपसी सहभागिता और 'हम की भावना' हो तथा विभिन्न राष्ट्रों के दरमियान मानवीय नैतिक आध्यात्मिक मूल्यों को बढ़ावा मिले, यह मानव संस्कृति के लिए अहम् है । अलग-अलग दृष्टिकोणों के सम्मिश्रण से ही मानवता में समृद्धि आती है । आवश्यकता इस बात की है कि राष्ट्र और समुदाय श्रेष्ठता-हीनता की भावना से ऊपर उठें और विश्व समुदाय की भावना हासिल करें । ऐसी विशाल प्रतिबद्धता का नाम है 'बसुधैवकुटुम्बकम्' । इस आध्यात्मिक आदर्श में इन्सानियत की गरिमा निहित है । राष्ट्र भाषा हिंदी पर ऐसी बुलंद ऊँचाई को छूने की जिम्मेदारी है ।

हिंदी का सर्वसमावेशी स्वरूप

राष्ट्र भाषा का सरकारीकरण या राजनीतिकरण गलत है । भाषा अपना स्वतंत्र वजूद रखे, विकास करे, एवं अन्य भाषाओं के साथ तालमेल रखे, यही विकास के तरीके हैं । शिक्षा, संस्कृति, मानविकी, कृषि, विज्ञान, समाज प्रशासन, विधि, उद्योग व तकनीकी, आदि क्षेत्रों में हिंदी के व्यवहार हेतु नवीन शब्दावली उपलब्ध हो गई है । ऐसी शब्दावली प्रांतीय भाषाओं में भी विकसित की जानी चाहिए । सभी प्रांतीय भाषाओं में अपनी-अपनी विशिष्ट भाषाई तथा साहित्यिक विधियाँ हैं और उन्हें अन्य भाषाओं में उपलब्ध करवाना चाहिए । हिंदी की विशिष्ट कृतियों को अन्य

भाषाओं में अनूदित किया जाना चाहिए और अन्य भाषाओं की विशिष्ट कृतियों को हिंदी में भी । हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में तथा अन्य भारतीय भाषाओं के आपस में पारिवारिक भावना रहे, यह हिंदी को सर्व समावेशी स्वभाव को बुलंद करने के लिए बेहद जरूरी है । हिंदी को खण्डित मानसिकता से पूरी तरह से अछूता रहकर समूचे भारत और उसकी सभी सच्चाइयों को समेटने का कद हासिल करना होगा ।

हिंदी एक राष्ट्रीय संस्कृति

हिंदी को हिंदी भाषियों की निजी बपौती नहीं समझी जानी चाहिए । गाँधी टोपी को भारतीयता की पहचान हासिल हुई है । लेकिन वह मध्यपूर्व से आई है । पाइजामा कुर्ता भारतीय पोशाक मानी जाती है । लेकिन, वह फारस से आया । आधुनिक हिंदी में अरबी-फारसी से आये उर्दू शब्दों का भरमार है । आखिर, भाषा कला संकाय में शामिल है । वह संस्कृति का अंग भी है । वह किसी भी संस्कृति में प्रवेश करने का द्वार है । वह सबकी है और उस पर किसी का संकीर्ण दावा न होना चाहिए । साथ ही, भाषा संस्कृति का प्रतीक भी है । हिंदी सिर्फ एक भाषा न होकर एक संस्कृति है । उसे प्रदेश, प्रांत, समुदाय, देश, आदि की चारदीवारियों में बाँटा नहीं जाना चाहिए । भाषा आपसी बातचीत, सरोकार और रिश्ते का ज़रिया है । वह इन्सान के विश्व समाज का धरोहर है । देश और विश्व के स्तर पर सहयोगात्मक रवैये को कायम रखने में भाषा की प्रासंगिकता है । यह अपने आप में एक तहजीब है । समन्वयवादी दृष्टि, तालमेल की मानसिकता और आपसी सम्मान इस तहजीब के महत्वपूर्ण अंग हैं । राष्ट्रभाषा के रूप में वह भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती ही नहीं, विश्व मानव संस्कृति में सहभागिता रखती और उसे अपने अनूठे योगदान से समृद्ध करती भी है । इस अर्थ में, राष्ट्रभाषा हिंदी को राष्ट्रीय संस्कृति बननी होगी । ■

सांविधानिक उपबंध सार

—संविधान सभा ने दिनांक 24 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया था ।

—भारत के संविधान के भाग-5 (अनुच्छेद 120) भाग-6 (अनुच्छेद 210) और भाग-17 (अनुच्छेद 343 से 351, 350 को छोड़कर) तक में हिंदी संबंधी प्रावधान हैं ।

—अनुच्छेद 343 के तहत संघ की राजभाषा हिंदी होगी और लिपि देवनागरी होगी, अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप होगा ।

—हिंदी संघ की राजभाषा दिनांक 26 जनवरी, 1950 से बनी ।

—अनुच्छेद 343 के तहत गठित राजभाषा आयोग के अध्यक्ष बी.जी. खेर थे ।

—अनुच्छेद 344 (4) के तहत खेर आयोग की सिफारिशों पर निर्णय के लिए गठित तीस सदस्यीय समिति के अध्यक्ष जी.बी. पंत थे ।

—संसद में प्रयुक्त होने वाली भाषा के बारे में भाग-5, अनुच्छेद 120 (1) में लिखा गया है कि संसदीय कार्य हिंदी में या अंग्रेजी में किया जाएगा ।

—राज्य के विधानमंडल में कार्य के बारे में भाग-6ए अनुच्छेद 210 में लिखा गया है कि राज्य विधानमंडल में कार्य राज्य की राजभाषा या भाषाओं में या हिंदी/अंग्रेजी में किया जाएगा

4780 HA/12—3A

हिंदी भाषा का अन्य भारतीय भाषाओं से संबंध और अंतरभाषीय अनुवाद

–प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल*

अधुनातन वैज्ञानिकों जीन्सगत अध्ययन के आधार पर यह सिद्ध कर दिया है कि आर्य एवं द्रविड़ भाषापरिवार के बोलने वालों का मूल स्रोत एक ही है। पाश्चात्य भाषावैज्ञानिकों तथा उनका अक्षरशः अनुकरण करने वाले कुछ स्वनामधन्य भारतीय भाषावैज्ञानिकों ने इस संदर्भ में जो भ्रमात्मक तथ्य प्रस्तुत किए उससे हमारे देश में भाषीय वैमनस्य की स्थिति पैदा हो गई। जबकि वस्तुस्थिति इसके बिल्कुल विपरीत है। इसी से जुड़ा हुआ सवाल आर्यों के आगमन का है। भाषा के आधार पर पुरातत्त्ववेत्ताओं, भाषाचिंतकों ने भी यह सिद्ध कर दिया है कि महाप्राण ध्वनियों का प्रयोग केवल आर्यभाषा परिवार के लोग ही कर सकते हैं। अतः इनका बाहर से आया हुआ मानना असंगत है।

ध्वनिरूप और वाक्यगत संरचना के आधार पर विचार करने से यह ज्ञात होता है कि भारतीय भाषाओं में असमानता के तत्व अल्प ही हैं। यही नहीं लिपि के स्तर पर देवनागरी में कुछ ध्वनियों को छोड़कर शेष सब कुछ समान है। इस प्रकार कुछ ध्वनियों को जोड़कर देवनागरी में सभी भारतीय भाषाओं को लिखा जा सकता है। जाति भाषा, संस्कृति और इतिहास के आधार पर भारत की राष्ट्रीय अखंडता को ध्वस्त करने के जो षड़यंत्र पिछली शताब्दियों में हुए हैं, आज उनका पर्दाफाश करने की आवश्यकता है। इस भाषीय एकता के मूल में हमारी अक्षुण्ण सांस्कृतिक एकता विद्यमान है। उत्तर की मथुरा, दक्षिण की 'मदुरा' है। इसीलिए महाकवि सुब्रमण्यम भारती ने अपनी मातृभूमि कविता में लिखा है –

> इसके करोड़ों मुख है, परंतु दिल एक है,
> इसकी अनेक भाषाएँ हैं, परंतु मन एक है।

केरल के शंकराचार्य, तमिलनाडु के रामानुजाचार्य तथा कर्नाटक के माध्वाचार्य ने उस युग में अपने सिद्धांतो का प्रचार-प्रसार उत्तर भारत में किया। केरल के. राजा तिरुनाल का आज से 250 वर्ष पूर्व किया गया प्रयास स्मरणीय है। डॉ. गोपीनाथन ने अवने शोध ग्रंथ - 'केरलियों की हिंदी को देन' में लिखा है - "हिंदी काव्यभाषा के इतिहास में महाराजा का भाषापरक दृष्टिकोण बड़ा ऐतिहासिक महत्त्व रखता है। वस्तुतः ब्रजभाषा के समय खड़ीबोली के रूपों को भी काव्य में प्रश्रय देते हुए उन्होंने हिंदी का अखिल भारतीय समन्वित स्वरूप सामने रखा है।"

ये गीत भक्तिरस पूर्ण हैं और श्रीकृष्ण, रामचन्द्र पर लिखे गए हैं –

> रामचन्द्र प्रभु तुम बिन प्यारे कोन खबर ले मेरी।
> बाग रही जिसकी नगरी माँ सदाधरम की भेरी
> जाके चरण कमल की रज से तिरिया तलक फेरी
> और न कछु और भरोसा, हमें भरोसा तेरी।
> पदमनाभ प्रभु फणि पर शयी-कृपा करो क्यों देरी।

इस संदर्भ में महर्षि अरविन्द 'आन द वेद' में दी गई दो टिप्पणियाँ बहुत उपयुक्त हैं –

1. तमिष संख्यावाची ही आर्य भाषा के भी प्राचीन संख्यावाची रहे हैं जिनका संस्कृत ने परित्याग कर दिया पर जिन्हें आज भी वेदों में ढूढ़ा जा सकता है अथवा जो विभिन्न आर्यभाषाओं में बिखरे या दबे पड़े हैं, और तमिष सर्वनाम भी इसी प्रकार आदिम आर्यभाषा के भी निर्देशक रहे हैं जिसके चिह्न इस प्राचीन भाषा में आज तक बने रह गए हैं, जिन्हें तमिष माना जाता है, पर जो सामूहिक रूप में भले ही इकाइयों के रूप में नहीं, आर्य परिवार के शब्द समूहों से अभिन्न हैं।

* निदेशक, राज्य साहित्यक अकादमी, मुल्ला रबू जी, संस्कृति भवन, वाण गंगा, भोपाल-462003

4780-HA/12—3B

2. तमिष भाषा के शब्दों की परीक्षा करने पर वे संस्कृतीकृत शब्दों से रूप और प्रवृत्ति से इतने भिन्न प्रतीत होते हैं फिर भी संस्कृत तथा इनकी दूरस्थ भगिनी लातिन के बीच, और कभी-कभी ग्रीक और संस्कृत के बीच, नए संबंध स्थापित करने में मुझे निरंतर ऐसे शब्दों या शब्द-समूहों से मार्गदर्शन मिलता रहा जिन्हें विशुद्ध तमिष माना जाता है और इस द्रविड़ भाषा के माध्यम से ही मैं सर्वप्रथम उस तत्व का साक्षात्कार कर सका हूँ जो मुझे आर्य भाषाओं का ध्रुवनियम प्रतीत होता है, जिसमें ही आर्यभाषाओं के उद्भव के स्रोत छिपे हैं मानों हम इन्हें रूपाकार ग्रहण करते देख रहे हैं ।

महर्षि अरविन्द उपर्युक्त दोनों अभिमतों से यह स्पष्ट हो जाता है आर्यभाषाएँ और द्रविड़ भाषाएँ दो भिन्न भाषा परिवारों की है ही नहीं । इन दोंनो का विकास एक ही भाषिक स्तर पर मात्र भारतीय भौगोलिक परिवेश में हुआ है ।

डॉ. रामविलास शर्मा ने (1979 : 5) भी पृथक परिवारों की विचारधारा का खंडन करते हुए आन्द्रोनोव के विचारों को प्रस्तुत किया है – "इनकी सामान्य विशेषताएँ इतनी ज्यादा हो गई हैं अथवा परस्पर आदान-प्रदान इतना बढ़ रहा है कि आर्य द्रविड़ परिवारों की जगह एक ही भारतीय भाषा परिवार की कल्पना करना उचित होगा । अभी नहीं तो कुछ दिन बाद यह भारतीय भाषा परिवार ऐतिहासिक भाषाविज्ञान की अकाट्य सच्चाई बन जाएगा ।"

इनकी स्थापना है कि द्रविड़ों ने आर्यों से शब्द उधार लिए हैं और आर्यों ने द्रविड़ों से संरचनात्मक तत्त्व ।

डॉ. काडवेल ने कम्पेरेटिवग्रामर ऑफ ड्रविडिन लैंग्वेज (1913) लिखा । इन्होंने द्रविड़ भाषाओं की खूब पक्षधारता रखी है । मगर वे भी सच को छुपा नहीं पाए और लिखा (19:3:579-30,566-586) कि दोनों परिवारों के एक स्रोत आज भी हो सकते हैं । इस संदर्भ में डॉ. रामविलास शर्मा (1973:53,69,73) के निष्कर्ष इस प्रकार हैं –

1. भारत में आर्य-द्रविड़ भाषा-परिवारों का विकास परस्पर एक दूसरे के संपर्क से ही हुआ है ।
2. इन परिवारों ने पूरी तरह विकसित हो जाने के बाद एक दूसरे पर प्रभाव डालना प्रारंभ ही नहीं किया वरन् परिवार रूप में इनका विकास ही एक दूसरे के संपर्क से हुआ ।
3. दोनो (भाषाओं) परिवारों के समानार्थक शब्दों में केवल ध्वनि ही साम्य नहीं, वरन् उनके अर्थविकास की प्रक्रिया भी मिलती जुलती है और यह प्रक्रिया उनके परस्पर संपर्क की धारणा की पुष्टि करती है ।
4. आर्य-द्रविड़ परिवारों का विकास उनके संपर्क का परिणाम है, अलगाव का नहीं ।

इन साक्ष्यों से स्पष्ट है कि हमारी सांस्कृतिक अखंडता की तरह हमारी भाषिक समानता भी मूल रूप से समस्रोतीय ही है । इधर इस दिशा में शासकीय और स्वतंत्र शोधों के माध्यम से यह स्पष्ट हो चुका है कि शब्दावली के स्तर भारतीय भाषाओं में अत्यधिक समानता है । भारत सरकार द्वारा समान शब्दावलियाँ जिन भाषाओं की तैयारी की गई थीं, वे हैं - हिंदी-असमिया (सन् 1958), हिंदी-बँगला (सन् 1957), हिंदी-उड़िया (सन् 1959), हिंदी-तमिल (सन् 1957), हिंदी-मलयालम (सन् 1957), हिंदी-(सन् 1958), हिंदी-कन्नड़ (सन् 1962) ।

2. अंतर भाषीय अनुवाद की स्थिति

भाषीय दृष्टि से भारत एक महाद्वीप है । इसमें बोली जाने वाली भाषाओं एवं हिंदी की बोलियों से अनुवाद की स्थिति साध्य है, कारण कि हमारी सांस्कृतिक एकता एक से, एक सी सोच, एक सी अभिव्यक्ति में थोड़े बहुत स्थानीय विभेद के बावजूद भी एक है । इनमें परस्पर अनुवाद की वह कठिनता नहीं है, जो विदेशी भाषाओं से अनुवाद में है । मैं एक उदाहरण द्वारा इस बात को स्पष्ट करना चाहूँगा । 'तर्पण' शब्द है पितरों के श्राद्धकर्म के लिए अब इसका अँगरेजी अथवा किसी भी भाषा में अनुवाद करना कठिन होगा । क्योंकि विदेशी भाषाओं में तर्पण अथवा श्राद्धकर्म होता ही नहीं है । जबकि सभी भारतीय भाषाओं में यह शब्द अपने यत्किंचित रूप परिवर्तन के साथ मिलेगा ही ।

हाँ, एक बात अवश्य है कि भारतीय भाषाओं में समरूपीय भिन्नार्थी शब्द के अनुवाद की स्थिति थोड़ी अवश्य जटिल हो जाती है जैसे - तमिल 'अवसरम' का

अर्थ 'जल्दी' है और हिंदी में उसका अर्थ 'अवसर' (मौका) है। इसी भाषा के कुछ अन्य उदाहरण हैं -पशु (गाय) हिंदी (जानवर), अश्रद्धा (लापरवाही), हिंदी अर्थ (श्रद्धा का अभाव), आदर (सहारा) हिंदी अर्थ (सम्मान)। अतीत (बहुत, बड़ा), हिंदी अर्थ (बीता हुआ, भूत), जमा (मित्र; हिंदी अर्थ (जमा किया हुआ)। नेपाली से कुछ उदाहरण हैं - थोक (चीज, वस्तु) हिंदी अर्थ (समूह, ढेर), हिकमत (हिम्मत, साहस) हिंदी अर्थ (उपाय), जवान (व्यक्ति) हिंदी अर्थ (युवा)। जहान (परिवार, पत्नी) हिंदी अर्थ (संसार, जगत्)। उड़िया में उजला - (धोबी, उज्जवल) हिंदी अर्थ (उज्जवल), बही (पुस्तक) हिंदी अर्थ (हिसाब लिखने की पंजी), बनिया (सुनार) हिंदी अर्थ (वैश्व, व्यवसायी)। पंजाबी में सड़ना (जलना) हिंदी अर्थ (सड़-गल जाना), कनक (गेहूँ) हिंदी अर्थ (सोना), बंदा (व्यक्ति) हिंदी अर्थ (बंदगी करने वाला, जैसे भगवान का बंदा)। बंगला में -दमन (नियंत्रण) हिंदी अर्थ (दमन करना), दलील (विशिष्ट कागज, जिसे बिल डीड कहते हैं) हिंदी अर्थ (तर्क)। गुजराती में आँचल (स्तन) हिंदी अर्थ (साड़ी का अग्रभाग), माथा (सिर) हिंदी अर्थ ललाट। अंतर भाषीय अनुवाद की स्थिति को भाषानुसार विवेचित करना उपयुक्त होगा।

2.1 असमिया से हिंदी

1. असमिया की क्रिया में लिंग-वचन का भेद नहीं होता। 'जाओ' क्रिया के चार अर्थ होंगे – मैं जाता हूँ, मैं जाती हूँ, हम जाते हैं, हम जाते हैं और हम जाती हैं। इसमें अनुवाद के स्तर पर ज्यादा असुविधा तो नहीं होती, किन्तु कभी-कभी भ्रम हो जाता है।
2. श, ष, स का उच्चारण 'ख' या 'ह' जैसा होता है।
3. अनुस्वार का उच्चारण हिंदी जैसा न होकर इंग जैसा होता है।
4. असमिया की वाक्य-रचना कई बार हिंदी की प्रकृति के अनुकूल नहीं होती। अनुवाद के समय हिंदी प्रकृति और मुहावरे का ध्यान रखना चाहिए।

कुल मिलाकर पर्याप्त समानता के कारण हिंदी अनुवाद में कठिनाई नहीं होती। कुछ उदाहरण हैं – डरकर का अनुवाद होगा 'भय खाई' उसे शैशव की बात याद आई का अनुवाद होगा 'शैशव कथा मनत परिलताइर'।

2.2 उड़िया से अनुवाद की स्थिति

सबसे अधिक कठिनाई शब्दावली की है। शब्द के स्तर पर समानांतर इकाई ढूँढना प्रथम और मूलभूत समस्या है। किन्तु दोनों का मूलस्रोत संस्कृत होने के कारण यह कोई बड़ी समस्या है नहीं।

2.3 कन्नड़ से हिंदी अनुवाद की स्थिति

कन्नड़ और हिंदी में पर्याप्त समानताएँ हैं। दोनों की वर्णमाला एक जैसी है। केवल स्वरों में हस्व 'ए' और दीर्घ 'ए' का अंतर है। कन्नड़ में अकारांत का पूरा उच्चारण किया जाता है। जबकि हिंदी की प्रकृति व्यंजनांत है।

केवल रिश्ते परक शब्दों के अनुवाद में थोड़ी कठिनाई आती है। इसका कारण है कि कर्नाटक में कुछ ऐसे रिश्ते हैं जो हिंदी प्रदेश में प्रचलित नहीं हैं। जैसे वहाँ बहिन, बुआ, मामा की लड़की से विवाह होता है। अत: कभी-कभी भांजा ही दामाद बन जाता है। भांजी ही बहू बन जाती है और बुआ-फूफा सास-ससुर बन जाते हैं। मामा-मामी भी सास-ससुर बन जाते है। कन्नड़ में चाचा और मौसा के लिए एक ही शब्द 'चिक्कप्पा' है। अत: हिंदी में प्रसंग देखकर कहीं चाचा और कहीं मौसा का प्रयोग करना पड़ता है।

2.4 कश्मीरी से अनुवाद की स्थिति

कश्मीरी से हिंदी में अनुवाद की प्रक्रिया स्वतंत्रता के पश्चात् प्रारंभ हुई है। अनेक साहित्यिक रचनाओं का अनुवाद हिंदी में हुआ है। शिबनकृष्ण रैना ने कश्मीरी के क्रमश: रामचरित 'राम अवतारचरित' का देवनागरी में लिप्यंतरण एवं हिंदी में अनुवाद किया है। कश्मीरी से हिंदी में अनुवाद की मुख्य कठिनाई दोनों भाषाओं की संरचनात्मक भिन्नता हैं यह भिन्नता - ध्वनि, रूप, वाक्य एवं अर्थ के सार पर देखी जा सकती है। इसके कई सांस्कृतिक शब्दों के पर्याय हिंदी में नहीं मिलते। शिबनकृष्ण रैना ने अपनी पुस्तक 'प्रतिनिधि संकलन : कश्मीरी (नई दिल्ली, 1973) में कश्मीरी की रचनाओं का हिंदी में अनुवाद प्रस्तुत किया है। कुछ वाक्यों के उदाहरण इस प्रकार हैं

1. मुझ बेसहारा के कुछ देना खुदासाहब के नाम पर (पृ. 46)

2. उनणे आहद साहब की धान्धली का विद्रोह किया (पृ. 63)

2.5 गुजराती से अनुवाद की स्थिति

गुजराती से हिंदी के अनुवाद की स्थिति अच्छी कही जा सकती है । मगर शब्द और व्याकरण के स्तर पर कठिनाइयाँ भी अनेक हैं । यथा - 1. गुजराती में तीन लिंग, 2. गुजराती में पुल्लिंग और स्त्री लिंग के कुछ ऐसे शब्द हैं, जिनके अनुवाद में अर्थ की दृष्टि से कठिनाई आती है । उदाहरण गुजराती 'आमळु' नपुंशकलिंग का शब्द है, हिंदी में आँवला है । गुजराती का 'आमष्ठो' शब्द आमुल का ही पुल्लिंग रूप प्रतीत होता है, किन्तु इसका अर्थ है - ऐठन, मरोड़ या अभिमान इसी प्रकार 'मूलो' शब्द का हिंदी अनुवाद होगा मूली परंतु गुजराती 'मूली' स्त्रीलिंग का अनुवाद होगा - मूल की छोटी शाखाएँ । 3. गुजराती में एक विशेषण क्रिया रूप है - 'आवजो' गुजरात में जब किसी व्यक्ति को विदा देते हैं और भविष्य में प्रेम तथा इज्जत से बुलाना चाहते है, तब 'आवजो' का प्रयोग करते हैं गुजराती में आवजो' का अनुवाद होगा 'तुम आना' ।

2.6 तमिल से अनुवाद की स्थिति

तमिल प्राचीनतम जीवंत भाषा है । इससे हिंदी में बहुत से अनुवाद हुए हैं और हो रहे हैं । तमिल में एक ही शब्द के परिवेशगत अर्थान्तर भावभेद होते हैं । ऐसे शब्दों के हिंदी अनुवाद की समस्या खड़ी हो जाती है । जैसे जल के लिए तमिल में - तण्णीर, नीर, जलम्, तीर्थम् प्रचलित है । तण्णीर - ठण्डे पानी के लिए, नीर - हाथ-मुँह धोने के लिए, जलम् - पेय जल के लिए, तीर्थम - देवालय में प्रसाद स्वरूप जल के लिए प्रयुक्त होता है ।

2.7 तेलुगु से अनुवाद की स्थिति

तेलुगु भाषा ने तत्सम शब्दों के साथ अपने प्रत्यय जोड़कर उन्हें अपनी भाषा के शब्द बनाए हैं । जैसे - स्नेह से स्नेहमु, चित्र - चित्रमु, वृक्षमु, ग्राम-ग्राममु आदि ।

तेलुगु भाषा में कर्म के कारण क्रिया रूप में कोई परिवर्तन नहीं होगा । इसीलिए तेलगू भाषा को हिंदी में अनुवाद करते समय कठिनाई होती है ।

वाक्य रचना में भी हिंदी और तेलगू भाषाओं के बीच पर्याप्त अंतर पाया जाता है । जैसे तेलगु - गोपालुडु बडिकी वेल्लुताननि चेफनु । (गोपाल ने स्कूल जाने की बात कही)

2.8 पंजाबी से हिंदी में अनुवाद की स्थिति

पंजाबी में रोटी सड़ जाती है और हिंदी में जल जाती है । पंजाबी हिंदी की निकटतम भाषा है । प्रसिद्ध पंजाबी कवयित्री अमृता प्रीतम की चुनी हुई कविताएँ हिंदी में आई हैं । उदाहरण स्वरूप एक मूल पंजाबी पंक्ति है - चल नी ज़िंदे जलीए सानूँ सद्दण आईआँ होणगीआ । हिंदी में इसका अनुवाद होगा – चलूँ आज तकदीर मुझे बुलाने आई है ।

2.9 बंगाल से हिंदी में अनुवाद की स्थिति

बँगला की 'दिबो' क्रिया के हिंदी में चार अर्थ होंगे - 1. दूँगा 2. दूँगी 3. देंगे (हम) प. देंगी (हम) ।

रवीन्द्र बाबू की एक कविता का शीर्षक है - जेते नाहि दिबो । इसका हिंदी में अनुवाद होगा - जाने नहीं दूँगी ।

कहीं-कहीं सांस्कृतिक वैशिष्ट्मयी कठिनाई उत्पन्न करता है । फिर भी बँगला में अनुवाद की स्थिति संतोषप्रद है ।

2.10 मराठी से हिंदी में अनुवाद की स्थिति

मराठी से हिंदी और हिंदी से मराठी अनुवाद विपुल मात्रा में है । मराठी से अनुवाद के समय भाषाई समस्या से जूझना पड़ता है । कई बार समान शब्दों का अर्थ नितांत भिन्न और विपरीत होते हैं जैसे 'चेष्टा' शब्द का अर्थ मराठी में दिल्लगी - ठिठोली है तो हिंदी में प्रयास । ऐसे अनेक शब्द है, जिनसे अनुवादक को परिचित होना पड़ता है । यथा - आपत्ति का मराठी में अर्थ 'संकट' है और हिंदी में 'आक्षेप' । 'सहवास' का मराठी अर्थ 'सानिध्य' है और हिंदी अर्थ है - 'स्त्री पुरुष प्रसंग ।

मराठी और हिंदी परंपरया पर्याप्त निकट है । मराठी से हिंदी और हिंदी से मराठी अनुवाद की स्थिति बहुत सुदृढ़ कही जा सकती है । 'मराठी' से हिंदी में अनुदित साहित्य शीषर्क से (डॉ. प. वी. जोशी) पूणे विद्यापीठ में शोधकार्य भी हो चुका है । मराठी से हिंदी में अनुवाद करते समय समरूपीय शब्दों में अर्थगत भिन्नता की समस्या अधिक आती है । उदाहरणार्थ आपत्ति शब्द का मराठी अर्थ 'संकट' है और हिंदी आक्षेप । मराठी में संधि का अर्थ 'अक्सर' है

4780 HA/12—4A

और हिंदी अर्थ 'समझौता' ऐसे अनेक शब्द हैं, जो अनुवाद के सामने कठिनाई खड़ी करते हैं ।

इसी प्रकार मराठी के कई स्त्रीलिंगवाची शब्द हिंदी में पुल्लिगंवाची हैं यथा - कमाल, चक्कर, झुंड, थप्पड़ और छाता आदि । वर्तनीगत अंतर के कारण भी अनुवाद में कठिनाई होती है । यथा - मराठी में 'कठीण' और हिंदी में 'कठिन' । मराठी में 'भीक' और हिंदी में 'भीख' । मराठी में 'पोशाख' और हिंदी में 'पोशाक' ।

इसी प्रकार भाववाची संज्ञाओं में ठीक-ठीक पर्यायावाची के अभाव की भी कठिनाई आती है ।

2.11 मलयालम से हिंदी में अनुवाद की स्थिति

मलयालम के ऐसे बहुत से शब्द हैं, जिनका प्रयोग हिंदी क्षेत्र में नहीं होता । ऐसे शब्द आंचलिक और सांस्कृतिक हैं । जैसे - 'कप्पा', 'कायल', 'अवियल', 'पूरम' और 'शेषक्कारन्' 'कप्पा' केरल का एक विशेष कंदह' । वहाँ के जनजीवन से इसका गहरा संबंध है । अँगरेज़ी में 'टैपियोका' कहते हैं । हिंदी भाषा इससे पूरी तरह अपरिचित है । 'कायल' केरल की एक खास झील है । इसे अँगरेजी में 'बैक वाटर्स' कहते हैं ।

इसी तरह के अन्य शब्द भी हैं । इनका हिंदी में ज्यों का त्यों प्रयोग कठिन है । अनुवाद की अन्य कठिनाइयों में तत्सम शब्दों में रूप सादृश्य के कारण लिप्यंतरण की भी । फिर भी अनेक महत्वपूर्ण ग्रथों के हिंदी से मलयालम में अनुवाद हुए हैं । इधर यह प्रवृत्ति और बढ़ रही है ।

2.12 संस्कृत से हिंदी में अनुवाद की स्थिति

स्वतंत्रता के बाद संस्कृत से हिंदी में अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ अनूदित हुए हैं । मुख्य समस्या लिंग की है । जैसे - संधि और समास की बहुलता के कारण भी अनुवाद में कठिनाई आती है ।

2.13 सिंधी से हिंदी में अनुवाद की स्थिति

सिंधी में अनुवाद की स्थिति बहुत संतोषप्रद नहीं कही जा सकती है फिर भी हिंदी और सिंधी में अनूदित कार्य हो रहे हैं । सांस्कृतिक, शब्दावली और भाषिय संरचना की विभिन्नता से इसमें अनुवाद की कठिनाई होती है । मुख्य कठिनाई ध्वनि के स्तर पर है कारण कि कुछ ध्वनियाँ ऐसी हैं, जो हिंदी में नहीं पाई जाती हैं ।

कुल मिलाकर भारतीय भाषाओं में समानता और अंतरभाषीय अनुवाद की स्थिति आशाजनक है । इस स्थिति को और अधिक दृढ़तर करते हुए भाषीय सार राष्ट्रीय सद्भाव की दिशा में उत्तमोत्तम प्रयास करने की आवश्यकता है ।

राजभाषा अधिनियम की झलक

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(5) में अन्य बातों के साथ ही यह प्रावधान है कि जब तक वे सभी राज्य अपने विधान मंडलों में अंग्रेजी भाषा की समाप्ति संबंधी संकल्प पारित नहीं कर देते जिनकी राजभाषा हिंदी नहीं है और इन संकल्पों पर विचार के बाद संसद द्वारा अंग्रेजी समाप्त करने संबंधी संकल्प पारित नहीं किया जाता, तब तक हिंदी के साथ अंग्रेजी भी प्रयोग होती रहेगी ।

राजभाषा अधिनियम की धारा 4 के तहत 30 सदस्यीय संसदीय राजभाषा समिति बनाई गई । इस समिति की रिपोर्ट पर राज्य सरकारों की राय जानने के बाद राष्ट्रपति जी के द्वारा आदेश जारी किए जाते हैं । अब तक इस समिति ने अपनी सिफारिश के सात खंड राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत कर दिए हैं ।

अधिनियम की धारा 5 में प्रावधान है कि केंद्रीय अधिनियम या अध्यादेश का हिंदी पाठ प्राधिकृत माना जाएगा । संसद में विधेयक और संशोधन आदि अंग्रेजी और हिंदी दोनों में प्रस्तुत करने होंगे । धारा 6 के अनुरूप यदि किसी राज्य द्वारा अपने अधिनियमों आदि के लिए हिंदी को छोड़कर कोई अन्य भाषा निर्धारित की है तो उन्हें उस अधिनियम का हिंदी और अंग्रेजी पाठ भी अपने राजपत्र में प्रकाशित करना होगा । यह जम्मू कश्मीर पर लागू नहीं है ।

4780 HA/12—4B

भाषा एक समझौता है

–डॉ. माणिक मृगेश*

जब ध्वनियों व लिपि का विकास नहीं हुआ था । आदमी इशारों से संकेत से एक दूसरे की बात समझता था। प्यास लगी तो सीधे हाथ का चुल्लू बना दिया, भूख लगी तो पहले दो अँगुली व अँगूठे को मुख की ओर बढ़ाकर इशारा कर दिया । आप सड़क पर जा रहे हैं और आगे रेलवे फाटक है तो आपको एक क्रॉसिंग का संकेत दिखाई पड़ेगा और आप समझ जाएँगे कि आगे रेलवे क्रॉसिंग है । सिगरेट बनाकर उसके ऊपर क्रॉस लगा दिया समझ लो यहाँ धूमपान वर्जित है । ज्यों - ज्यों मानव सभ्यता का विकास होता गया, बहुत सारे इशारों की जरूरत पड़ी और यहीं से ध्वनियों का विकास शुरू हुआ और बाद में लिपि का । आज भी संसार में बहुत सारे ऐसे समूह हैं जिनके पास न लिपि है और न ध्वनि चिह्न लेकिन अपना काम चलाते हैं । भाषा की परिभाषा भाषा वैज्ञानियों ने दी "भाषा ध्वनि प्रतीकों की यादृच्छिक (बनाई हुई) व्यवस्था है जिसके माध्यम से एक भाषाई समाज के लोग आपस में वार्तालाप करते हैं, विचारों का विनिमय करते हैं ।" एक भाषाई समाज इसलिए कहा गया कि कोई अमुक शब्द किसी एक भाषा में एक अर्थ देता है तो दूसरी भाषा में दूसरा । और दूसरा ही नहीं बिल्कुल विपरीत अर्थ देता है यथा - लहँगा । यह उत्तर भारत में महिलाओं का परिधान है जबकि गुजरात में यह पुरूषों का परिधान पायजामा का वाचक हो जाता है । राजीनामा का अर्थ हिंदी क्षेत्र में सहमति है तो गुजरात में असहमति है । गुजरात में पति पत्नी के बीच राजीनामा हुआ है तो समझ लो कि तलाक हो गया है । गुजराती में कहें तो छुटटा-छेड़ा हो जाता है । गुड्डू पप्पू का अर्थ हिंदी में नन्हें मुन्ने के लिए होता है तो तेलुगु में अंडा-दाल के लिए होता है । चेष्टा का अर्थ हिंदी में कोशिश करना है तो मराठी में मसकरी करना है । तात्पर्य यही है कि भाषा ध्वनि प्रतीकों की बनाई हुई व्यवस्था है एक समाज के बीच ।

ध्वनि प्रतीक बनते रहते हैं बिगड़ते रहते हैं, संधि होते रहते हैं, मिटते भी रहते हैं । शब्दों की निर्माण कहानी बड़ी अजब है । कुछ इतिहास से जुड़े हैं, कुछ समाज से, कुछ स्थान से, कुछ सादृश्य से बने । आगे इस लेख में हम शब्दों के निर्माण की चर्चा करेंगे । भाषा एक बहता नीर है प्रवाह है जो व्याकरण के नियमों को नहीं मानता । यही कारण रहा है कि वैदिक संस्कृत के मुकाबले तत्कालीन समय में देशज भाषा संस्कृत को महर्षि बाल्मीकि ने वेद व्यास ने अपनाया जबकि पाणिनी ने संस्कृत को व्याकरण के नियमों से बांधा तो भाषा बंधन को तोड़ते हुए पालि (पालि-गाँव या कस्बे की भाषा) आंध्र प्रदेश में पालि का अर्थ कस्बे से है (रामपल्ली, त्रिचरापल्ली, लिंगम्पल्ली आदि) कवि गुरू रवींद्र नाथ टेगौर ने पल्ली गीत (लोक गीत) लिखे हैं । पालि के बाद प्राकृत अपभ्रंश होते हुए हिंदी का विकास हुआ । यह अपभ्रंश वैदिक संस्कृत वाली धारा में ही नहीं आगत शब्दों से हुआ ।

स्वजन	सज्जन	सजन	साजन
अध्यापक	अज्झापक	अज्झा	झा
बल्लभ	बल्लम	बलम	बालम
स्वामी	सामी	साईं	सैंया
दुर्लभ	दूलभह	दूल्हण	दूल्हा

अन्य भाषाओं के जो शब्द हिंदी में आए उनका भी अपभ्रंशीकरण हुआ -

गैसलाइट	गैसलैट	घासलेट
ऑर्डरली	आर्डल्ली	अर्दली
प्लाटून	पलाटून	पलटन
कैप्टेन	कप्तान	कप्तान
नाइट्रोजन	नत्रजन	
ट्रेजेडी	त्रासदी	
एकेडमी	अकादमी	
हू कम्स देअर		हुकुम सदर

काफी शब्द मुख सुख के कारण अपभ्रंश हो जाते हैं -

स्कंध	कंधा	
उपर्युक्त	उपरोक्त	उक्त
स्थाली	थाली	

* मृगेशायन, 22 बी मनोरथ सोसाइटी, न्यू सभा रोड, वडोदरा

स्तन (महिला) थन (भैंस, गाय, बकरी) मूलतः कोई अंतर नहीं कुछ शब्द सूक्ष्मता के कारण बन जाते हैं, मालूम ही नहीं पड़ता

शुक्ल दिवस -सुदी

बहुल कृष्ण दिवस -बदी

कुछ शब्दों के अमानक रूप ज्यादा बल व बहुप्रयोग के कारण मानक मान लिए जाते हैं - सुस्वागतम। सही शब्द है स्वागतम है सु+आगतम। दूसरे सु की आवश्यकता है ही नहीं। पाव रोटी। पाव का अर्थ ही खमीर वाली रोटी होता है। रोटी जोड़ने की जरूरत ही नहीं है। श्रेष्ठ अपने आप में श्रेष्ठ है लेकिन फिर भी लोग सर्वश्रेष्ठ और बाद में तम प्रत्यय जोड़कर श्रेष्ठतम बना देते हैं। कुछ शब्दों के पीछे मूल कारण थे। बाद में मूल कारणों का पता न होने के कारण शब्दों का अर्थ विस्तार हो गया -सूत्रपात (सूत का गिरना) मकान बनाने के लिए दीवार चिनने के लिए राज मिस्त्री डोरी डालकर दीवार की सीधाई नापते थे आज भी नापते हैं लेकिन अब सूत्रपात किसी भी नए काम करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। गवेष्णा - गाय के ढूँढने के लिए प्रयुक्त होता था लेकिन आज गंभीर बहसों/अध्ययन का नाम गवेष्णा है। पुण्य करने वाला ही निपुण कहलाता था। आज फर्नीचर बनाने वाले भी निपुण कहलाता है। हलवाई केवल हलुआ बनाने वाले कारीगर को कहा जाता था अब हलवाई बालूशाही, सोहन पपड़ी और जलेबी भी बना रहा है। क्लाइंट का अर्थ दास या नौकर था। अब ग्राहक वाचक है, लेडी का अर्थ रोटी बनाने वाली महिला को कहते थे आज शायद ही कोई लेडी रोटी बनाती है।

बाइबिल की कहानी बड़ी रोचक है। मिश्र में पेपीरस पौधे से कागज बनाते थे बाइलौस शहर से अधिकांशतः कागज निर्यात होता था। अब बाइलौस कागज का पर्याय बन गया। बाइलौस कागज पर लिखी छोटी किताब (गुटका) को यूनानियों ने बिबिलयोज कहा जो कालांतर में ईसा की मृत्यु के बाद उनके धर्म और जीवन पर लिखित पुस्तक "बाइबिल" कहलाई।

कुछ शब्दों का अर्थादेश हो जाता है जैसे कुंजर जो कुंजों में चले। कोई भी पशु जानवर हो सकता है लेकिन केवल हाथी के लिए सीमित कर दिया है। समुद्री सीमा के अंत पर स्तंभ गाढ़ा गया। स्तंभ से खंभ और खंभा और खंभा से खंभात (खंभात की खाड़ी) शब्द बना।

मृग- जंगल के जानवरों के लिए प्रयुक्त होता था जैसे

मृगेश- सिंह, मृगों का राजा

तृण मृग- गिलहरी, धारियों वाला, पेड़ के तनों पर चलने वाला जानवर

शाखा मृग- बंदर (शाखाओं पर उछलकूद करने वाला जानवर।)

हस्तिन मृग- हाथी (जिस पशु के हाथ हो, हाथी की सूँड उसका हाथ ही होता है) संस्कृत में शेर के लिए हिंस्रक शब्द है यानी जो हिंसा में विश्वास करें पता नहीं कब और कैसे हिंसक सिंह हो गया।

दुहिता का अर्थ दूध दुहने वाली बेटी से था। आज हरेक बेटी दुहिता है कक्ष में घोड़े बांधे जाते थे आज अधिकारी विराजते हैं। कुछ शब्दों का अपकर्ष हो गया है जैसे 'नग्न लुंचित' शब्द से नंगा लुच्चा जोकि सामाजिक दृष्टि से ठीक नहीं है लेकिन जैन मुनियों के बालों को नोचकर उखाड़ने की एक धार्मिक प्रक्रिया है। मुनि उस धार्मिक नेता को कहा जाता था जोकि बिल्कुल मौन रहे लेकिन आज कई मुनि जोर-जोर से चिल्लाकर अपनी बात कहते हैं फिर भी मुनि हैं।

पहले कांस्टेबल का अर्थ ऑफीसर था बाद में सिपाही वाचक हो गया। मैथुन जोड़े (मिथुन) द्वारा किया गया कोई भी कार्य था। अब मात्र संभोग के रूप में लिया जाता है। धान्य का अर्थ अनाज, धान्य से धान बना जोकि चावल के पौधे को कहा जाता है। पंजाब में चोहना भी कहते हैं, गुजराती में डांगर। यज्ञ कराने को यजमान कहते थे लेकिन अब धार्मिक ग्राहक है।

वेद-वेदांगों का अध्येता उपाध्याय था इससे अपभ्रंश हुआ ओझा। झाड़ फूँक करने वाले का वाचक हो गया। गिलास-काँच का बना होता था अब स्टील व प्लास्टिक का भी गिलास है। पेन यानी पंख से बनी कलम को कहा जाता था आज स्टील की बन रही है। कुछ शब्दों का इतिहास होता है वडोदरा वड़ वृक्षों की बहुतायत के करण बना, गोधरा (गायों की धरा) धांगध्रा (चट्टानों की धारा) दाहोद-दो हद गुजरात और मध्य प्रदेश की हदें मिलती हैं इसलिए दोहाद से बिगड़कर दाहोद हो गया।

गुवाहाटी (गुवा-सुपाड़ी, हाट-बाजार)

शिलाँग-शिवलिंग से बना

इस तरह हम देखते हैं कि शब्दों का निर्माण समाज, काल स्थिति, स्थान आदि के कारण तथा मुख सुख के कारण बदलते रहते हैं। शब्दों के निर्माण की कोई ठोस या व्यवस्थित प्रक्रिया नहीं है। ■

हिंदी : तब से अब तक

–ओम मल्होत्रा*

हिंदी का इतिहास

आज हिंदी को जिस रूप में हम देखते हैं उसकी बाहरी आकृति भले ही कुछ शताब्दियों पुरानी हो, किन्तु उसकी जड़ें संस्कृत, पाली, प्राकृत और अपभ्रंश रूपी गहरे धरातल में फैली हैं । वैज्ञानिक आधार पर विश्व स्तर पर किए गए भाषा -परिवारों के वर्गीकरण के अनुसार हिंदी को भारतीय आर्य भाषा -परिवार से उत्पन्न माना जाता है । इस क्रम में हिंदी आनुवंशिक रूप से आर्य भाषा-संस्कृत से सम्बद्ध है । भारतीय भाषाओं के इतिहास का पुनर्लेखन करते हुए भाषा वैज्ञानिक डॉ. जॉन बीम्स ने भारतीय आर्य परिवार की भाषाओं में हिंदी के अलावा पंजाबी, सिंधी, गुजराती, मराठी, उड़िया और बांग्ला भाषाओं को समाहित करते हुए लिखा है कि -"हिंदी राष्ट्र के अंतरंग की भाषा है । हिंदी संस्कृत की वैध उत्तराधिकारी है और आधुनिक भारतीय भाषा व्यवस्था में उसका वही स्थान है जो प्राचीन काल में संस्कृत का था ।"

संस्कृत और हिंदी के बीच जो आनुवंशिक क्रम भाषा वैज्ञानिक ग्रियर्सन ने निर्धारित किया है उसके अनुसार-आर्य परिवार की भाषाओं का क्रम इस प्रकार बनता है -

1-वैदिक संस्कृत 2-लौकिक संस्कृत 3- पाली (बौद्ध युग) 4-साहित्यिक प्राकृतें (प्राकृत युग) 5-अपभ्रंश भाषाएं (अपभ्रंश युग) तथा 6-आधुनिक भारतीय भाषाएं (आधुनिक युग) खड़ी बोली हिंदी सहित ।

वैदिक संस्कृत में ऋग्वेद की रचना होना माना जाता है । ऋग्वेद की रचनाओं में हमें प्राचीनतम आर्यभाषा की बानगी मिलती है । उस समय साहित्यिक संस्कृत और बोलचाल की लौकिक संस्कृत के बीच अंतर बढ़ रहा था किन्तु साहित्यिक संस्कृत के रूप में व्याकरण के नियम भी विकसित हो रहे थे । कालांतर में संस्कृत व्याकरण के नियम कठोर होने के कारण लोक व्यवहार में इसकी जीवंतता क्षीण होती चली गई और संस्कृत से इतर बोलचाल की अन्य भाषाएं सामाजिक व्यवहार को सम्प्रेषित करने लगीं । तत्पश्चात भगवान बुद्ध के उपदेशों और अशोक की धर्मलिपियों से यह अनुमान लगता है कि पाली उस समय की बोलचाल की और साहित्यिक भाषा का मिश्रित रूप थी जो मूलत: मगध और कौशल की बोली का परिवर्तित रूप था । बौद्ध उपदेशों को अधिकतम प्रचारित करने के उद्देश्य से तत्कालीन पाली भाषा को अधिक से अधिक सरल बनाने पर जोर दिया जाता रहा था । फलस्वरूप यहां आते -आते संस्कृत के अनेक जटिल स्वरूप लुप्त हो गए और उच्चारण में भी परिवर्तन आ गया ।

अगला काल प्राकृत भाषाओं का काल कहा जाता है जिसमें पश्चिमी भाग के मुख्य रूप में शौरसेनी प्राकृत तथा पूर्वी भाग का मुख्य रूप मागधी प्राकृत माना जाता है । संस्कृत नाटकों में प्राकृत के साहित्यिक रूप को देखा जा सकता है । साहित्यिक प्रयोग के कारण ये प्राकृत भाषाएं भी व्याकरण के कठिन और अस्वाभाविक नियमों में बांध दी गई, परिणाम स्वरूप उनका साहित्यिक विकास रुक गया किन्तु बोलचाल में इनका मनमाने ढंग से प्रयोग होता रहा ।

फलस्वरूप भाषाओं का जो बिगड़ाव हुआ या उनमें जो परिवर्तन आया, उसके चलते इन बोलचाल की भाषाओं को अपभ्रंश या बिगड़ी हुई भाषा कहा जाने लगा । इन अपभ्रंशों का विकास विभिन्न प्रदेशों में बोली जाने वाली प्राकृतों से ही हुआ । धीरे-धीरे ये अपभ्रंश भाषाएं भी साहित्यिक भाषाएं बनती चली गईं। व्याकरण की अत्यधिक

* प्रभारी हिंदी अधिकारी, आकाशवाणी, बीकानेर -334001 (राजस्थान)

4780 HA/12—5A

जटिलता और नियमबद्धता के कारण इन अपभ्रंश भाषाओं से पुनः स्थानीय बोलचाल की भाषाओं का जन्म हुआ जिन्हें हम आज की आधुनिक भारतीय भाषाओं के रूप में जानते हैं। इनका वर्गीकरण इस प्रकार सामने आता दिखाई देता है -

- शौरसेनी अपभ्रंश से - हिंदी, राजस्थानी, पंजाबी, गुजराती और पहाड़ी भाषाएं
- महाराष्ट्री अपभ्रंश से - मराठी
- मागधी अपभ्रंश से - बिहारी, बंगला, असमिया और उड़िया
- अर्धमागधी अपभ्रंश से - पूर्वी हिंदी
- ब्राचड़ अपभ्रंश से - आधुनिक सिंधी
- केकय अपभ्रंश से - लहंदा यानी गुरुमुखी

हिंदी भाषा का विकास :

हिंदी भाषा के विकास की प्रक्रिया आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास के साथ ही प्रारंभ होती है। खड़ी बोली या खिचड़ी भाषा के रूप में पहचानी जाने वाली हिंदी भाषा का वास्तविक विकास इन चार चरणों में हुआ माना जा सकता है -

1-आदिकाल (मुगलकाल से पूर्व का हिंदू शासन काल)

2-मध्य काल (मुस्लिम शासन काल)

3-आधुनिक काल (ब्रिटिश शासन काल) और

4-वर्तमान काल (आजादी के बाद का काल)

संस्कृत और प्राकृत की छुट-पुट रचनाओं के साथ अपभ्रंश भाषाओं का प्रयोगकाल आदिकाल में रहा। दिल्ली के महाराजा पृथ्वीराज चौहान और महमूद गजनवी के आक्रमण पश्चात् कवि चंदबरदाई रचित काव्य पृथ्वीराज रासो इस काल की पुष्ट रचना माना जाता है। संत गोरखनाथ के छंद और जैनाचार्य हेमचंद की रचनाओं पर भी इस काल की खड़ी बोली हिंदी की छाया दिखाई देती है।

मध्यकाल के पूर्व भाग में निर्गुण निराकार ईश्वरोपासक संत कवियों की रचनाओं की प्रधानता देखने को मिलती है जिनमें मुख्य हैं - संत कबीर, संत रैदास, गुरु नानक, दादू, ज्ञानेश्वर, नामदेव आदि। इन सबकी रचनाओं में पंजाबी, ब्रज, अवधी और राजस्थानी आदि का मिलाजुला रूप सामने आता है। उत्तर भारत में इस समय उर्दू ने भी जन्म लिया और खड़ी बोली दक्षिणांचल में जाकर दक्खिनी कहलाई। इसी क्रम में उत्तर मध्यकाल में फारसी जहां राजकाज की भाषा बनी वहीं साहित्य में ब्रज और अवधी का वर्चस्व रहा। इस काल को भक्ति काल और रीतिकाल के रूप में भी जाना जाता है जिसमें हिंदी भाषा को साहित्य और कला के रूप में जमकर प्रोत्साहन मिला। यहां आते-आते हिंदी ने अरबी, फारसी और तुर्की के शब्दों को आत्मसात करना प्रारंभ कर दिया क्योंकि मुगलकाल में दिल्ली व्यापार का बड़ा केंद्र बन गया था जहां मुस्लिम व्यापारियों ने बाजार के साथ-साथ पूरे जन-जीवन को प्रभावित किया था। फलस्वरूप यहां आकर हिंदी ने उर्दू और हिंदुस्तानी जैसे दो रूपों में अपने आपको प्रस्तुत किया।

खड़ी बोली का आधुनिक काल भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना से शुरू होता है। उन्नीसवीं सदी में खड़ी बोली के प्रसार में सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक संस्थाओं के प्रचार और उद्‌बोधन साहित्य का बहुत बड़ा योगदान रहा। आर्य समाज का आन्दोलन हो या स्वामी दयानंद सरस्वती का वैदिक धर्म आन्दोलन या फिर देवकीनंदन खत्री की रोचक तिलस्मी और अय्यारी कथाएं इन सबने अपने भाषणों, ग्रंथों और प्रकाशनों तथा प्रचार साहित्य में खड़ी बोली का प्रयोग किया क्योंकि देश की अधिकांश जनता भारतीय भाषाओं के इस स्वरूप को अच्छी तरह जानती -समझती थी। उधर स्वतंत्रता आन्दोलन की मांग थी कि जन-चेतना का संवाद किस भाषा में स्थापित हो ? उस समय देश में अंग्रेजी जानने वाले 3 प्रतिशत लोग थे तो ब्रज केवल काव्य की ही श्रेष्ठ भाषा बनकर रह गई थी, अतः आम बोलचाल में इसका प्रयोग न के बराबर था। खड़ी बोली हिंदी या हिंदुस्तानी ही सामान्य बोलचाल की एकमात्र ऐसी भाषा थी जो किसी न किसी रूप में देश के ज्यादातर भागों में समझी और बोली जाती थी। सो एक राष्ट्र और एक राष्ट्रभाषा की भावना यहां जागृत हो उठी और हिंदी सबसे आगे निकलकर राष्ट्र भाषा, सम्पर्क भाषा और मानक भाषा बनती चली गई। इस अभियान में गांधी जी की भूमिका अहम रही जिन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में राजनीतिक और सामाजिक मान्यता और संरक्षण प्रदान किया तथा इसका परिणाम यह रहा कि उत्तरी भारत में हिंदी साहित्य सम्मेलन और दक्षिण भारत में हिंदी प्रचार सभा जैसी हिंदी

4780 HA/12—5B

सेवी संस्थाओं का जन्म हुआ, जिनके माध्यम से हजारों अहिंदी भाषी भारतीयों ने स्वैछिक तौर पर हिंदी को सीखना और अपनाना शुरू किया ।

तत्कालीन सभी साहित्यकारों, पत्रकारों, लेखकों और सामाजिक कार्यकर्त्ताओं ने मुद्रण सुविधा का लाभ उठाकर हिंदी में अपनी रचनाएं लिखीं । हिंदी साहित्य के अनेक मूर्धन्य लेखकों-साहित्यकारों ने कालजयी रचनाएं इसी काल में रचीं जिनमें भारतेन्दु हरिशचन्द्र, प्रताप नारायण मिश्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, मैथिलीशरण गुप्त, महादेवी वर्मा, प्रेमचंद, रामचंद्र शुक्ल और कामता प्रसाद आदि प्रमुख रहे ।

1947 से लेकर अब तक का समय हिंदी का वर्तमान काल कहलाता है । देश की आजादी के साथ ही हमें भौगोलिक स्वतंत्रता के साथ ही साथ भाषागत स्वतंत्रता भी प्राप्त हुई । इस काल में हिंदी का आधुनिकीकरण और मानकीकरण हुआ । किन्तु इन सबसे पहले देश की वैधानिक व्यवस्था में हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकारने का सर्वोच्च कर्तव्य पूरा हुआ । संविधान की धारा 343 के अंतर्गत हिंदी भारतीय संघ की राजभाषा घोषित हुई और धारा 353 में हिंदी विकास की दिशा भी तय की गई जिसमें शासन की ओर से हिंदी के विकास के लिए किए जाने वाले प्रयासों को भी तय किया गया । इन प्रयासों का विधान इन शब्दों में रचा गया :-

"संघ का यह कर्त्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए और उसका विकास करे ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्तानी के और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं के प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए तथा जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उनके शब्द भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे ।"

तो साथियों इस प्रकार आज हिंदी न केवल पूरे भारत की राष्ट्रभाषा है बल्कि वह समूचे देश के शासकीय कामकाज की पूर्ति के लिए हमारी राजभाषा भी है । साथ ही साथ एक सम्पर्क भाषा, एक जन भाषा होने से भी पहले हिंदी हमारी मातृभाषा है । मातृभाषा यानी मां की भाषा - मायड़ भाषा जिसने हमें बोलना सिखाया, अभिव्यक्त करना सिखाया । हमारे जीवन में संस्कारों की पूंजी निवेश करने का श्रेय भी इसी हिंदी को जाता है ।

हिंदी साहित्य के सुप्रसिद्ध समालोचक डॉ. देवी प्रसाद गुप्त के शब्दों का मैं यहां स्वागत करना चाहूंगा जिन्होंने गंगा मैया और गौ माता की तरह हिंदी को भी हिंदी माता कहकर उसे मातृभाव भाव से सम्मानित किया है और हमारी हजारों वर्ष पुरानी वैदिक संस्कृति में व्यक्त देवभाव यथा - पितृ देवो भव: और मातृ देवो भव: के समान ही हिंदी देवो भव: व्यक्त कर हिंदी के प्रति देवत्व भाव प्रकट किया है । अस्तु, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र और विषय को अभिव्यक्त करने में सक्षम हिंदी आज ज्ञान-विज्ञान जैसे जटिल विषयों को अभिव्यक्त करने की भाषा भी बनती चली जा रही है । वैज्ञानिक आधार पर यह तो बहुत पहले ही सिद्ध हो चुका है कि हिंदी दुनिया की सरलतम भाषाओं में से एक है क्योंकि इसकी विशेषता यह है कि यह जैसी बोली जाती है वैसी ही लिखी भी जाती है ।

अत: आओ साथियों, हम सब मिलकर अपनी इस महान भाषा हिंदी को आत्मसात करें, इस रूप में कि हमारे जीवन के समस्त कार्य कलापों का यह एक अभिन्न अंग बन जाये । तभी हम विश्व-मंच पर अपनी पहचान बना पाएंगे और बुलंद आवाज में यह कहने का अधिकार रख पाएंगे कि हिंदी आज जहां विश्व के 130 विश्वविद्यलयों में पठन-पाठन और अनुसंधान का विषय बन चुकी है, वहीं हिंदी संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनने की भी योग्यता और पात्रता रखती है । सो, एक बार पुन: इस संकल्प के साथ कि आज से नहीं बल्कि अभी से, हम हिंदी के हैं और हिंदी हमारी है, हमें सम्वेत स्वरों में उद्घोष करना होगा ■

हिंदी पथ पर चलते रहना ।
यात्रा यह पूरी करके रहना ।।

राजभाषा कार्यान्वयन का दायित्व-कार्यपालकों की भूमिका

–दिलीप कुमार*

स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर जोर दिया गया और सन्, 1947 में भारत में आजादी का सूर्य उदय हुआ । विभिन्न पहलुओं पर विचार करने के बाद यह निर्णय लिया गया कि राष्ट्रीय स्वाभिमान एवं लक्ष्य के प्राप्ति के लिए एक संपर्क भाषा होना जरूरी है । 14 सितम्बर, 1949 के दिन संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया था । उस ऐतिहासिक दिन की स्मृति में ही हर वर्ष 14 सितम्बर का दिन 'हिंदी दिवस' के रूप में मनाया जाता है । सो हिंदी शायद दुनिया की इकलोती ऐसी भाषा है, जिसका अपना जन्म दिन है, और कृतज्ञ राष्ट्र सोलाल्स एवं सोद्दश्य से ये जन्म दिन मनाता है । राजभाषा हिंदी ही क्यों ? अक्सर ये प्रश्न उठाया जाता है ? उत्तर स्पष्ट है — हिंदी भारतीय आस्मिता की द्योतक है। विश्व में हमारी पहचान है, हमारी समृध्द संस्कृति की वाहिका है, संस्कृत की बड़ी बेटी और कुशल उत्तराधिकारिणी है । अधिसंख्य भारतीय जनता की अभिव्यक्ति का माध्यम बनी हिंदी भारत की राजभाषा राज्यभाषा, मातृभाषा, संपर्कभाषा, राष्ट्रभाषा से आगे बढ़ते हुए विश्वभाषा बनने की ओर अग्रसर है ।

आइए अब जरा भाषाओं के बारे में कुछ जान लें । भाषा मनुष्य के भावों -विचारों के आदान-प्रदान का सशक्त साधन है । पूरे विश्व में बोली जाने वाली लगभग तीन हजार भाषाओं को बारह भाषा परिवारों में रखा जाता है । हमारी हिंदी उसी **भारोपीय** (भारत+यूरोपीय) भाषा परिवार में आती है । जिसमें अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, फारसी, रूसी आदि भाषाएं शामिल हैं ।

भाषा में 1700 ई. पू. के आसपास प्रयोग की जाने वाली संस्कृत आर्यभाषाओं का प्राचीनतम रूप है । लगभग 3700 वर्षों की दीर्घ अवधि में संस्कृत के वैदिक और लौकिक रूप से कालान्तर में पाल, प्राकृत और अपभ्रंश विकसित हुई । अपभ्रंश के विभिन्न रूपों से आज से लगभग 1000 वर्ष पूर्व आधुनिक भारतीय भाषाएं पंजाबी, मराठी, गुजराती, हिंदी, बंगाली आदि विकसित हुई । इतना ही नहीं द्रविड़ कुल की चारों भाषाओं तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम के भी संस्कृत से ही विकसित होने के कारण, उनमें अनेक संस्कृत शब्द थोड़ा रूप बदलकर प्रयुक्त होते हैं । अनेक संस्कृत शब्द थोड़ा रूप बदलकर प्रयुक्त होते हैं । अनेक संस्कृत शब्द जैसे मातृ, भ्रातृ, दोहित्र, त्रि, सत, अपर, नव, दश आदि अंग्रेजी में भी पाए जाते हैं । फ्रेंच, जर्मन, रूसी आदि में भी अनेक शब्द खोजे गए हैं । खड़ी बोली हिंदी का विकास लगभग 1000 ईस्वी के आसपास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ । तब से लेकर अब तक हिंदी अपनी पांच उपभाषाओं पश्चिमी हिंदी, पूर्वी हिंदी, राजस्थानी, बिहारी, पहाड़ी तथा सोलह बोलियों (ब्रज, अवधी, मारवाड़ी, कुमॉउनी आदि) की सहायता से इतनी विकसित हुई कि आज उसकी गणना विश्व की प्रमुख भाषाओं में होती है । अपनी विकास यात्रा में हिंदी ने अरबी, फारसी तथा अंग्रेजी से शब्द ग्रहण कर स्वयं को समृद्ध तथा सजीव भाषा बनाया । इसी हिंदी में विश्व की श्रेष्ठ रचनाएं जैसे पृथ्वी राज रासो (चंदरबरदाई) मुकरियॉ-पहेलियां (अमीर खुसरो), रामचरित मानस (तुलसीदास), सूरसागर (सूरदास), पदमावत (जायसी), पदावली (विद्यापति) कामायनी (प्रसाद), उर्वशी (दिनकर), साकेत (मैथिलीशरण गुप्त), गोदान (प्रेमचन्द) आदि लिखी गयी है । गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भारत को महामानव तीर्थ कहा है । महामानव के इस तीर्थ पर जिस जल में हम अवगाहन करते हैं वह हिंदी ही है । संस्कृतिक रूप से एकात्मक एवं भाषिक रूप से वैविध्यपूर्ण भारत को हिंदी एक सूत्र में जोड़ती है । हिंदी एक भाषा है, जुबान है, मगर इसकी खासियत इस श्लोक के मार्फत देखिये

''मुंडे मुंडे मतिर्भिन्ना कुंडे कुंडे नव पय:
जातौ जातौ नवचारा: नवा वाणी मुखे मुखे''

(अर्थात् लोगों की सोच में विभिन्नता होती है, कुंओं में अलग-अलग स्वाद का जल होता है । जातियां अलग-अलग तरह से व्यवहार करती है तथा हर मुख अपने-अपने तरीके से उच्चारण करता है।) ठीक यही बात राजभाषा हिंदी की है। हिंदी व्याकरणों के कवच पहनकर तन नहीं जाती, बल्कि हर भाषा के लिये ठहरने भर की जगह देकर उसे अपने ही रंग से सरोबार कर देती है । भारत की भौगोलिक,

* फ्रैडंस आफ लाइफ़ निकट एल आई सी मालती कुंज कालोनी, बलरामपुर (उ. प्र.) -271201

जलवायविक नृतात्विक, भाषिक आदि विविधताओं ने यहां के निवासियों को यह बोध करा दिया कि राजभाषा हिंदी दृढ़ता नहीं, तन्यता दिखाएगी । जीवनशैली की भांति राजभाषा ने जाना है कि जीवन की सफलता के लिए विविधता का आश्रय लेना होगा । यही इस भाषा के जीवन्तता का आधार एवं प्रगति का कारण है । भारत की भांति राजभाषा हिंदी में भी विरोधी विचारों के प्रति असिहष्णुता की जगह सहयोग का दर्शन विकसित हुआ । सामंजस्य तथा सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे संतु निरामया: का भाव बहुलवाद की स्वीकृति के बिना सम्भव ही नहीं था । हिंदी भाषा भारत की भाषाई धरोहर से नि:स्तृत होकर विकसित हुई । यह प्राचीन ब्राह्मी लिपि से विकसित देवनागरी वर्णमाला में लिखी गई । देवनागरी लिपि में हिंदी आपकी राजभाषा है । इसने मध्यकालीन भारतीय समाज के सांस्कृतिक क्षितिज को छूने की कामना की । इसे हिंदी की भाषा के रूप में पहचाना गया तथा 'हिन्दवी' के नाम से जाना गया । भारतीय शैली और फारसी शब्दावली के मिश्रण से तेरहवीं सदी में जन्में संस्कृति पुरुष अमीर खुसरो (तोता-ए-हिन्द) ने हिन्दवी भाषा को समृद्ध किया । तत्कालीन भारत की वाणी के रूप में विकसित इस भाषा में लिखने तथा बात करने में उन्होंने गर्व का अनुभव किया । उनकी उक्ति प्रसिद्ध है -

''तुर्क हिन्दुस्तानियम, मन हिन्दवी गोयम जवाब।
जो मन हिन्दवी पुर्स ता नग्ज गोयम।''

सल्तनत काल में जिस भाषा ने हिन्दवी के रूप में अपना दुलार भरा बचपन बिताया था आगे की पीढ़ियों ने उसे भरपूर अपनापन दिया । मगर स्वतंत्र भारत के समक्ष ये प्रश्न खड़ा हुआ कि सरकारी राजकाज की भाषा कौन सही हो ? हिंदी ही क्यों ? अंग्रेजी या हिन्दुस्तानी (हिंदी-उर्दू का मिला-जुला रूप) क्यों नहीं । तर्क वितर्क, विचार-विमर्श, पक्ष-विपक्ष, लाभ-हानि का समग्र विश्लेषण-विवेचन करने के पश्चात् ही 14 सितम्बर, 1949 को सर्वसम्मति से हिंदी को राजभाषा घोषित कर दिया गया । संविधान के अनुच्छेद 343 में लिखा गया ''देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी संघ की राजभाषा होगी।'' कालान्तर में राजभाषा अधिनियम 1963 तथा राजभाषा नियम-1976 पारित हुए । हिंदी के विरुद्ध षड्यंत्र, कुचक्र निरन्तर चलते रहे, फिर भी हिंदी आगे बढ़ती रही । यह सत्य है कि भारतीय बैंकों के कार्यालयों में अभी अंग्रेजी का बोलबाला है, मगर एक सच्चाई यह भी है कि बैंकों को अपने नीति, निर्देश, व्यापार को जनसामान्य तक पहुंचाने के लिए, आम उपभोक्ता की सोच और आवश्यकताओं को पहचानने के लिये हिंदी का सहारा लेना पड़ रहा है । भले ही उस हिंदी में अंग्रेजी का छौंक लगा हो । आज अपने व्यापार को सफल बनाने के लिए हिंदी को अपनाना बैंकों की नैतिकता तो है ही, विवशता भी है । यही विवशता हिंदी की शक्ति एवं सामर्थ्य का द्योतक है । कम्प्यूटर के बेताज बादशाह बिल गेट्स ने स्वयं हिंदी को सर्वश्रेष्ठ भाषा माना है । क्योंकि हिंदी की लिपि देवनागरी सर्वाधिक वैज्ञानिक है । इसकी सबसे बड़ी विशेषता है - जैसा बोलते हैं, वैसा लिखते हैं । अपनी इसी विशेषता के कारण 'स्पीच टू टेक्सट' एवं 'टेक्सट टू स्पीच' जैसे साफ्टवेयर के लिए हिंदी, अंग्रेजी की तुलना में कहीं अधिक उपयोगी है । 'सी-डेक' पुणे हिंदी में इस साफ्टवेयर को विकसित करने में लगा है । जब यह साफ्टवेयर उपलब्ध तथा प्रचलित हो जाएगा तो हिंदी के पक्ष में कम्प्यूटर और इन्टरनेट पर एक जबरदस्त क्रान्ति होगी । ऐसे में निश्चित रूप से इक्कीसवीं सदी भारत की हिंदी की होगी ।

अब रहा सवाल कार्यपालकों की राजभाषा का

''निज भाषा उन्नति अर्ह, सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटय न हिय को सूल''

कार्यपालक अपनी सोच को काम में निम्न प्रकार से परिवर्तित करें । कम्प्यूटर में हिंदी में दो प्रकार का कार्य हो सकता है। क-शब्द संसाधन (वर्ड प्रोसेसिंग) अर्थात् पत्र टिप्पणी, लेख, प्रारूप, रिपोर्ट आदि तैयार करना । आंकड़ा संसाधन (डाटा प्रोसेसिंग) अर्थात् वेतन पर्ची, परीक्षा परिणाम, भविष्य निधि लेखा पर्ची सामान सूची, पुस्तक सूची आदि तैयार करना । इसके अतिरिक्त कम्प्यूटरों का प्रयोग हिंदी में कुछ विशेष प्रकार के कार्यों जैसे टेलेक्श्स-संदेशों का आदान-प्रदान, इलेक्ट्रानिक पत्र-व्यवहार, टेली-का-फ्रेंसिंग, नेटवर्क सुविधा आदि के लिए भी किया जाता है । कम्प्यूटर पर द्विभाषिक शब्द के लिए कई पैकेज बाजार में उपलब्ध है जैसे सुलिपि, आकृति, लीला, हिंदी प्रबोध (डास), बैंक मित्र, श्री लिपि प्रकाशक, सुविन्डो गुरु आदि । लेखक, हिंदी वाणी, अनुसारका, देशिका, आकृति आदि भी हिंदी में काम करने में सहायक साफ्टवेयर है । वृहद अमेरिकी साफ्टवेयर कम्पनी माइक्रोसाफ्ट कारपोरेशन ने अपना पहला हिंदी साफ्टवेयर ''हिंदी वर्ड 2000'' जारी किया । जिससे हिंदी में वेवर पेज तैयार करना, ई पत्र (मेल) भेजना और हिंदी में इंटरनेट पर गप्पे लड़ाना भी सम्भव हो गया हे । वर्डवाला डाट काम, नेट जाल डाट काम तथा पहले हिंदी

4780 HA/12—6A

सर्च इंजन तलाश के आ जाने से अब हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाएं भी अंग्रेजी की सी स्पष्टता और तीव्रता से इंटरनेट पर उपलब्ध होगी । हिंदी के अनेक समाचार पत्र-पत्रिकायें भी इंटरनेट पर उपलब्ध हैं । नेट काम इण्डिया द्वारा एक वास्तविक इंटरनेट अखबार नेट दैनिक डाट काम, तथा कम्प्यूटर जगत की पहली हिंदी और मराठी 'पत्रिका, कम्प्यूटर संचार सूचना' भी विद्यमान है । विश्व में हिंदी का पहला पोर्टल का दावा करने वाला ''बेव दुनिया डाट काम 1999'' में शुरू हुआ । ''अनुभूति'' तथा ''अभिव्यक्ति डाट काम'' विदेशों में रहने वाले भारतीयों ने हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु शुरू किया । वैसे राजभाषा अधिनियम में की गई व्यवस्थाओं को कार्यपालकों को लागू करने के लिये राजभाषा अधिनियम की धारा 3(4) के अनुसार 1976 में राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिये) नियम 1976 का पालन करना चाहिए । थोड़ा सा राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा के मामूली फर्क को भी जान लें । राजभाषा शब्द भाषा के सीमित प्रयोग का परिचायक है । जबकि ''राष्ट्रभाषा'' शब्द भाषा के व्यापक प्रयोग को अभिव्यक्त करता है । कार्यपालकों को प्रेमचन्द की इस बात का ख्याल रखना चाहिए ''राष्ट्रभाषा केवल रईसों, अमीरों की भाषा नहीं हो सकती । उसे किसानों और मजदूरों की भी बनना पड़ेगा । जैसे रईसों और अमीरों से ही राष्ट्र नहीं बनता, उसी तरह उनकी गोद में पली हुई भाषा राष्ट्र की भाषा नहीं हो सकती । बेशक राष्ट्रभाषा बाजारों और गलियों में बनती हैं । मगर सभाओं में बैठकर हम उसकी चाल जरूर तेज कर सकते हैं ।

राज एवं राष्ट्र एक दूसरे के लगभग पर्याय हैं ।

राजभाषा का प्रयोग प्रशासन द्वारा आम आदमी से सम्पर्क के लिए किया जाता है । अत: राजभाषा का स्वरूप साहित्य की भाषा का स्वरूप नहीं हो सकता है । राजभाषा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए जो सारे देश के हिंदी भाषी और हिंदीतर भाषी, सभी लोगों को आसानी से समझ में आ पाए । इस भाषा में वे सभी शब्द शामिल किए जाने चाहिए जो जनता में प्रचलित हो गए हों । राजभाषा संविधान द्वारा बनाई गई एक व्यवस्था है जिससे केंद्र सरकार के शासन में एकरूपता संभव हो, एवं केंद्र सरकार के कर्मचारी का कर्तव्य है कि वह अपना काम राजभाषा में करे । वही उसकी सांस्कृतिक धरोहर भी है । अधिकारी इसके अधिकाधिक प्रयोग से नजीर तो दिखा ही सकते हैं, फिर कर्मचारी क्यों ना अनुसरण करेंगे । कार्यापालकों को यह बात ध्यान में रखनी चाहिएं कि कोई भी शब्द प्रारम्भ में लोकप्रिय तथा प्रचलित नहीं होता । क्योंकि प्रयोग व व्यवहार ही शब्द को जीवन्तता प्रदान करता है । अत: प्रारम्भ में उचित शब्द न मिलने पर इसके अंग्रेजी शब्दों के लिप्यंतण की प्रवृत्ति बढ़नी होगी । साथ ही शब्दों के सरल व सहज हिंदी पर्याय भी आपसी विचार-विमर्श से ढूंढने होंगे । शब्दों का निर्माण वातानुकूलित कक्षों में नहीं, अपितु कार्यव्यवहार के रणक्षेत्र में सम्बन्धित विषयों के विशेषज्ञों की साझेदारी से होना चाहिए ।

इसके साथ ही इन कठिनाइयों से निजात पाने के लिए कुछ महत्वपूर्ण सुझाव भी देना चाहता हूँ ।

1. कर्मचारियों के हिंदी प्रशिक्षण-हिंदी शिक्षण योजना तथा विभागीय व्यवस्था का सुदृढ़ीकरण होना चाहिए ।

2. हिंदी प्रशिक्षण के लिए अत्यधिक प्रोत्साहन व्यवस्था ।

3. आकाशवाणी, दूरदर्शन द्वारा हिंदी पाठ्यक्रमों का प्रसारण ।

4. हिंदी कार्यशालाओं एवं संगोष्ठियों का समय-समय पर आयोजन ।

5. भर्ती के लिए साक्षात्कार का हिंदी में विकल्प।

6. देश के सभी प्रशिक्षण संस्थानों में हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण ।

7. राजभाषा हिंदी का कार्यालय में निरीक्षण तथा मानीटरिंग ।

8. वार्षिक कार्यक्रम का यथा समय संवितरण एवं कड़ाई से अनुपालन करना ।

9. कोड-मैनुअल और अन्य कार्यविधि साहित्य का अनुवाद ।

10. हिंदी के सभी स्वीकृत पदों को भरना ।

इस प्रकार हम पाते हैं कि उपरोक्त कारणों से राजभाषा के कार्यान्वयन में कठिनाइयां आती हैं, मगर हम अपने आचरण, प्रयोग, निष्ठा व व्यवहार की उर्वरता से इसे आसानी से हल कर सकते हैं। याद रखिए राजभाषा फारसी, मुगल सल्तनत की राष्ट्रभाषा कभी नहीं बन पाई । इसलिए मैं पुन: अपनी बात कहता हूँ कि राजभाषा एक दूसरे के पर्याप्य हैं, होने ही चाहिए । क्योंकि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने कहा था

''राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है ।''

■

4780 HA/12—6B

विधि के क्षेत्र में राजभाषा हिंदी

–डॉ एम. सी. पांडेय*

भारत देश के लिए राजभाषा की संकल्पना ही स्वयं में अतिशयोक्तिपूर्ण है । सर्वविदित है कि स्वतंत्रता के 65 वर्षों के बाद भी आज हम अंग्रेजियत की गुलामी की जंजीरों से मुक्त नहीं हो पाए हैं । हमारी मानसिकता, मनोवृत्ति और मनोभावना आज भी अंग्रेजियत ही स्वीकार करती है । भारत के संविधान के अनुसार हमारे देश में संघ की राजभाषा हिंदी है फिर भी व्यावहारिक रूप से संघ की राजभाषा अंग्रेज़ी ही है और क्यों न हो; क्योंकि हमारे संविधान निर्माताओं ने ही एक ओर संविधान के भाग 17 में हिंदी को संघ की राजभाषा बनाई और दूसरी ओर संविधान के उसी भाग में यह उद्घोषित किया कि उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों में और अधिनियमों, विधेयकों आदि के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा अंग्रेजी होगी ।

राजभाषा वह भाषा होती है जिस भाषा में सरकार का सारा सरकारी कामकाज संपन्न होता है । सरकारी कामकाज किसके लिए, किसके संबंध में और किसकी जानकारी के लिए होता है, निश्चित ही यह जनसाधारण के लिए है । जनसाधारण वह आम नागरिक होता है जो केवल और केवल अपनी मातृभाषा को ही समझता है जब तक वह अन्यथा पढ़ा लिखा न हो । इस प्रकार यह स्पष्ट है कि अधिनियम, विधेयक तथा उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों के निर्णय जैसे विधिक दस्तावेजों की शुचिता और प्रामाणिकता अंग्रेज़ी भाषा में ही है ।

संविधान, राजभाषा अधिनियम, 1963 राजभाषा नियम, 1976 संसदीय संकल्प के क्रियान्वयन में भारत सरकार के विधि और न्याय मंत्रालय के विधायी विभाग के अधीन दो इकाईयों अर्थात् राजभाषा खंड और विधि साहित्य प्रकाशन सरकार की उक्त विधिक दस्तावेजों की औपचारिकताओं को पूरा करने में जुटी हैं । राजभाषा खंड, राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 और धारा 5 के उपबंधों के क्रियान्वयन में सन्नद्ध है । पिछले 52 वर्षों से यह खंड अधिसूचनाओं, विधेयकों, अधिनियमों आदि का हिंदी पाठ तैयार करने में जुटा है । भारत सरकार के विधि, न्याय और कंपनी कार्य मंत्रालय के विधायी विभाग के इस खंड द्वारा विधि शब्दावली 'Legal Glossary' तैयार की गई है जो विधि के क्षेत्र में हिंदी भाषा के प्रचार और प्रसार की उपयोगिता की दृष्टि से मील का पत्थर है । यह विधि शब्दावली उन सभी लोगों के लिए अति उपयोगी है जिनका भी विधि साहित्य, विधिक व्यवसाय और विधिक पठन-पाठन से संबंध है । विधि शब्दावली के निर्माण में अंग्रेजी शब्दों के पर्याय के निर्धारण में यह प्रयास किया गया है कि भारत की प्रमुख भाषाओं के शब्दों का आत्मसात् किया जाए । इस प्रकार यह शब्दावली संविधान की आठवीं अनुसूची में वर्णित सभी भाषाओं से किए गए शब्दों से निर्मित होने के कारण विधि के क्षेत्र में भारत का चेहरा है । यह शब्दावली संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुसार हिंदी भाषा के विकास से संबंधित संघ के कर्तव्य का निर्वहन करती है क्योंकि इस शब्दावली में भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों को समाविष्ट करने का प्रयास किया गया है । तथा मूलतः हिंदुस्तानी और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण किया गया है । यह खंड केवल राजभाषा अधिनियम, 1963 के उपबंधों का पालन करने की औपचारिकता को ही पूरा कर रहा है किन्तु जन सामान्य में हिंदी भाषा में विधि संबंधी जानकारी का आलम स्वतंत्रता के पूर्व जैसा ही है । उसे छोटी से छोटी विधिक जानकारी के लिए अधिवक्ता के पास ही जाना पड़ता है क्योंकि सारे विधिक दस्तावेज और उनके निर्वचन के सिद्धांतों की जानकारी केवल अंग्रेजी भाषा में ही है । इस प्रकार, राजभाषा खंड के कार्यों की उपादेयता तब तक जन सामान्य के लिए नगण्य सी ही हैं जब तक न्यायालय की कार्यवाहियां हिंदी में नहीं होती ।

राजभाषा खंड के अंतर्गत ही प्रादेशिक भाषाओं की भी एक इकाई है जो संविधान की आठवीं अनुसूची की

*संपादक, विधि साहित्य प्रकाशन, विधायी विभाग, विधि और न्याय मंत्रालय, आई.एल.आई. भवन, भगवान दास रोड, नयी दिल्ली-110001

22 भाषाओं में से मात्र ग्यारह भाषाओं में इस समय कार्य का संपादन कर रही है । इस इकाई का कार्य केंद्रीय अधिनियमों का प्रादेशिक भाषा में संपन्न हुए अनुवाद की विधीक्षा कर उन्हें प्रकाशित कराना है । राजभाषाओं में प्रकाशित केंद्रीय अधिनियमों के बेचने और प्रचारित करने का कार्य उस राजभाषा से संबंधित राज्य सरकारों का है । इस प्रकार केंद्रीय सरकार संघ की राजभाषा हिंदी और संविधान की आठवीं अनुसूची की भाषाओं के विकास और प्रचार-प्रसार के कार्य में जुटी है ।

विधि और न्याय मंत्रालय का विधि साहित्य प्रकाशन विधि के क्षेत्र में राजभाषा हिंदी का प्रचार और कार्य कर रहा है । उपरोक्त कार्य के अभिवर्धन में यह प्रकाशन तीन विधि पत्रिकाएं अर्थात् उच्चतम न्यायालय निर्णय पत्रिका, उच्च न्यायालय सिविल निर्णय पत्रिका और उच्च न्यायालय दांडिक निर्णय पत्रिका संपादित और प्रकाशित करता है । यह प्रकाशन उक्त पत्रिकाओं के प्रकाशन के साथ-साथ विधि पुस्तकों का भी संपादन और प्रकाशन करता है । विधि पुस्तकों के प्रकाशन के साथ-साथ यह संगठन विद्वान लेखकों द्वारा राजभाषा हिंदी में लिखित और प्रकाशित विधि पुस्तकों को पुरस्कृत भी करता है । विधि मंत्रालय द्वारा संचालित इस पुरस्कार योजना के अधीन यह संगठन पुरस्कार योजना के संबंध में प्रत्येक वर्ष विधि पुस्तकों को पुरस्कृत करने की स्कीम को समाचार पत्रों और वेबसाइट पर विज्ञप्ति देता है । विधि साहित्य के संपादन और प्रकाशन के साथ-साथ विधि साहित्य का भारत के आम जन मानस तक प्रचार और प्रसार का कार्य भी यही प्रकाशन करता है । आम जनता तक हिंदी भाषा के माध्यम से विधि साहित्य उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी केंद्रीय सरकार की है । केंद्रीय सरकार के इस उत्तदायित्व को पूरा करने का कार्य विधि साहित्य प्रकाशन का विक्रय अनुभाग करता है । इस प्रकाशन का विक्रय-अनुभाग केंद्रीय अधिनियमों, संहिताओं, मैनुअलों और विधि पुस्तकों का विक्रय कार्य का निष्पादन करता है । केंद्रीय अधिनियमों की पुस्तिकाएं द्विभाषिक अर्थात् अंग्रेजी और हिंदी में साथ-साथ होती हैं और इनका विक्रय मूल्य बाजार मूल्य की तुलना में बहुत कम होता है । इस प्रकाशन द्वारा बेची जाने वाली पुस्तकों पर अब काफी रिबेट दिया जाता है । जो पुस्तकें पांच या दस वर्ष से अधिक पुरानी हैं उन पर 20% से 30% तक रिबेट दिया जा रहा है । इस प्रकार, यह अनुभाग अपने कार्य का निष्पादन काफी सफलतापूर्वक कर रहा है । अत:, यह कहा जा सकता है कि विधि साहित्य प्रकाशन विधि के क्षेत्र में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के कार्य में पूरी निष्ठा के साथ जुटा है फिर भी, किसी न किसी कारण से अपना निर्धारित लक्ष्य नहीं प्राप्त कर पा रहा है ।

यह विडम्बना ही है कि विधि के क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार का कार्य विधि मंत्रालय के पास है जबकि राजभाषा हिंदी के क्रियान्वयन का कार्य गृह मंत्रालय के अधीन गठित राजभाषा विभाग का है । प्रचार-प्रसार और क्रियान्वयन में पर्याप्त अंतर है । क्रियान्वयन की उत्तरदायी संस्था के पास अपने निदेश या आदेश को लागू करवाने की पर्याप्त संविधायी शक्ति होती है जबकि प्रचार-प्रसार वाली उत्तरदायी संस्था की उपादेयता मात्र अनुनय-विनय तक ही है । हमें यह जानकर बड़ा खेद होता है कि विधि के क्षेत्र में हिंदी के विकास में लगभग 62 वर्षों से जुटी संस्था की आवश्यकता मात्र सांविधिक औपचारिकता तक ही सिमट कर रह गयी है । यदि सांविधिक औपचारिकता न होती तो उपरोक्त संस्थाएं अभी तक अपना दम तोड़ चुकी होती ।

अत:, गृह मंत्रालय के विभाग से इस लेख के माध्यम से मेरा यह अनुरोध है कि वह विधि के क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के विकास में भी अपनी क्रियान्वयन शक्ति का उचित प्रयोग करे और भारतीय विधिज्ञ परिषद्, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, उच्च न्यायालय और उच्चतम न्यायालय को उचित निदेश दे जिससे कि हमारी राष्ट्रभाषा और राजभाषा हिंदी का लोकहित में उचित विकास और प्रचार-प्रसार हो सके । ■

राजभाषा हिंदी में करते रहो हर काम ।
फल निश्चित ही मिलेगा । होगा खूब नाम ।।

साहित्यिकी

चौरसिया के चार रस

–ब्रजकिशोर शर्मा*

समस्त भारत में पान लोकप्रिय है। सामान्यतया उत्तर भारत में इसे चूना, कत्था और सुपारी के साथ सेवन करते हैं। कुछ लोगों को इतने से तृप्ति नहीं होती। वे इसमें तंबाकू और किमाम डालकर सेवन करते हैं। कुछ सुगंधित द्रव्य डालते हैं। कुछ इसमें गुलकंद या कुछ मीठा भी डाल लेते हैं। हालांकि कुछ लोग इसे पान का अपमान मानते हैं।

पान का व्यापार करने वाली जाति को उत्तर भारत में तमोली, तंबोली, बरई, पनवाड़ी और चौरसिया कहते हैं। तमोली शब्द संस्कृत के ताम्बूलिक से निःसृत है।

''चौरसिया'' वह जाति या व्यक्ति है, जो चार रसों का काम या व्यापार करने वाला है। ये चार रस हैं-चूना, कत्था, पान और सुपारी। चौरसिया और ''चरसिया'' में भेद करना आवश्यक है। चरस का सेवन करने वाला चरसिया है। यह भी संभव है कि ''चर्व्य रसिक'' से चौरसिया बना हो। पान चबाया जाता है इसलिये चर्व्य है।

पान शब्द पर्ण से आया है। इसी से कागज या पुस्तक का ''पन्ना'' भी निकला है। कथा है कि नागलोक से नागवल्ली अर्थात् 'नागबेल' पृथ्वी पर आई। पाताल लोक में अमृत कुंभ से इसका उद्भव हुआ। वहां इसकी रक्षा नाग करते हैं। इसीलिए यह नागवल्ली है। अद्भुत वल्ली है। न फूल लगते हैं न फल। बस पान ही पान हैं। इस पान का सेवन स्वास्थ्य के लिए होता है, स्वागत के लिए होता है और श्रृंगार के लिए (होंठ रचने के लिए) होता है। हेमाद्रि का कथन है कि नवरात्र में स्त्रियों के लिए पान खाना, श्रृंगार करना उचित है -

गंधालंकारताम्बूल पुष्पमालानुलेपनम्।
उपवासे न दुष्यति दंतधावनमंजनम्॥

देवताओं की पूजा तो पान और पूंगफल (पुंगीफलम् या सुपारी) के बिना पूरी नहीं होती। अर्पण करने का एक श्लोक है, -

एलालवंग कस्तुरीर्कपूरैः पुष्पवासितम्।
वीटिकां मुखवासार्थमर्पयामि सुरेश्वरि॥

जब देव या देवी को तांबूल अर्पण करते हैं तब इस प्रकार भी कहते हैं, -

पूगीफल महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम।
एलालवंगसंयुक्तं तांबूल प्रतिगृहयताम्॥

उपर्युक्त दोनों श्लोकों से यह ज्ञात होता है कि पान में सुपारी, इलायची, लौंग तो होती ही थी कस्तूरी और कपूर से भी इसे सुवासित किया जाता था।

विवाह के समय वर की पगड़ी पर और वधू के सिर पर रखे पल्लू (या घुंघट) पर पान बांध दिया जाता है। वैसे जब बनारस वाले कहते हैं कि 'इनका स्वागत पान-पनही से हो' तो नया व्यक्ति 'पनही' (जूता) सुनते ही भयभीत हो जाता है। दक्षिण भारत में उत्सव के पश्चात् महिलाओं को विदा करते समय पान, सुपारी और हल्दी की गांठ देते हैं। यह सौभाग्य का आशीर्वाद है।

पान के लिए एक पर्याय तांबूल भी है। वास्तव में मूल शब्द है-तांबूलपर्ण। तांबूलफल कहते हैं सुपारी को। असम में सुपारी के लिए 'तामोल' शब्द प्रयुक्त होता है। शेष भारत से भिन्न। असम को छोड़कर अन्य प्रदेशों में तांबूल का अर्थ पान ही होता है। वैसे ही जैसे बलीवर्द का अर्थ है बैल। पूर्वी उत्तर प्रदेश में 'बरद' का इसी अर्थ में प्रयोग करते हैं। एक बलीवर्द से दो शब्द बन गए 'बैल' और 'बरद'। पूर्वी उत्तर प्रदेश में 'बरद' चलता है, शेष हिंदी प्रदेश में बैल।

*पूर्व अपर सचिव, विधि और न्याय मंत्रालय, एम-103, धर्म अपार्टमेंट, 2 इन्द्रप्रस्थ विस्तार, दिल्ली-110092

4780 HA/12—7A

सुपारी के लिए अंग्रेजी में दो पर्याय हैं । बीटलनट और अरीका नट । यह बीटल नट भारतीय उद्गम का है । यह उपजा है मलयाली शब्द वेट्टिल से । मलयालम से पुर्तगाली के माध्यम से अंग्रेजी में पहुंचा ।

चूना शब्द चूर्ण से आया है, ऐसा कुछ लोग मानते हैं । गेहूं का चूर्ण सर्वत्र आटा कहलाता है, किंतु पूर्व में इसके स्थान पर चून का प्रयोग चलता है । दो जून का 'चून' जुट जाए, तो श्रमिक संतोष कर लेता है । किंतु पान के चूने के लिए दक्षिण की ओर देखना होगा । मलयालम में है 'चुण्णन' और तमिल में 'शुण्णबु'। वहीं से यह चूना आया है । प्राकृतिक रूप में यह शिला है चूर्ण नहीं ।

सुनीति कुमार चाटुर्ज्या ने लिखा है कि 'बल' का मूल अर्थ 'पत्ता' पूर्वी प्रदेश की भाषाओं में है । बल्ली, बल्लरी या बेली का संबंध पत्तों से है । तमिल में भी 'बलिक' का अर्थ लता है । उच्चारण से ही ज्ञात हो जाता है कि इनका मूल 'बल' है । 'बड़' (वटवृक्ष) के पीछे भी 'बल' ही होगा । अंग्रेजों ने इसे बनियन (Banyan) वृक्ष बना दिया । टेवरनियर ने देखा कि हिंदू व्यापारी (बनिया) एक विशाल पेड़ के नीचे एकत्र होकर व्यापार कर रहे थे । उस वृक्ष को उसने बनियन वृक्ष की संज्ञा दे दी । हिंदी का बाड़ा और बंगाल की बाड़ी भी, इसीलिए बने होंगे कि उनके निर्माण में पत्तों का प्रयोग होता होगा । तमिल में 'बकरें' का अर्थ घेरना है । हिंदी में बाड़ी का अर्थ बगीचा भी है । विवाह या अन्य संस्कारों में नाई-बारी दोनों ही आवश्यक पड़ती है । नाई तो बहुत से काम करता है, किंतु 'बारी' का काम निश्चित है । पत्तों से बने पत्तल दोने यजमान को देना । बंगाल में पर्णकुटी बनाने में निपुण जाति 'बाराई' कहलाती है । मलयालम में पत्तों से छायी हुई नाव या पालकी को पन्नगम् कहते हैं । इसमें भी पर्ण छिपा है । इसलिए पान के व्यापार में लगी जाति को 'बरई' संज्ञा दी गई है । पनवाड़ी नाम तो स्पष्ट है कि पान से बना है ।

सुपारी शब्द सुपारा से बना । 'सुपारा' वह पत्तन (बंदरगाह) था, जहां से इस फल का आयात होता था । वैसे ही जैसे सूरत से आयात होने के कारण तंबाखू 'सुरती' हो गई । पूंगफलम् या पुंगीफल इसलिए है कि उसका प्रयोग पूजा में होता है । इसके मूल में तमिल की 'पू' धातु है तमिल में इसे 'पाकु' कहते हैं । इसका एक नाम 'काषाय' भी है । यह नाम स्वाद आधारित है । असम में सुपारी 'तामोल' है । असम में कच्ची सुपारी खाते हैं कहते हैं कि इसमें कुछ नशा होता है । संस्कृत में सुपारी को कंदुकी कहते हैं, क्योंकि वह गेंद (कंदुक) जैसे गोल होती है । तुलसी ने लक्ष्मण से कहलाया है, *जो तुम्हार अनुशासन पाऊं, कंदुक इव ब्रह्माण्ड उठाऊं ।* संस्कृत में सुपारी के लिए 'क्रमुक' पर्याय भी है । कालिदास ने इसका प्रयोग 'रघुवंश' में किया है । कल्हण की 'राजतरंगिणी' में भी यह शब्द आया है ।

सर्वत्र पान में कत्था नहीं खाया जाता । कत्था खदिर वृक्ष से तैयार किया जाता है । इस वृक्ष को खैर भी कहते हैं। खैर की लकड़ी का 'क्वथन' करके 'क्वाथ' बनाया जाता है, इसी क्वाथ से 'कत्थे' की उत्पति हुई है । आयुर्वेदिक औषधियों में अनेक क्वाथ हैं यथा महारासनादि क्वाथ । अब्दुर रहीम खानखाना ने इस शब्द का प्रयोग किया है,-

खैर, खून, खांसी, खुशी, बैर, प्रीति, मधुपान ।
रहिमन दाबै ना दबै, जाने सकल जहान ॥

इस दोहे में सबसे पहले कत्था ही है, जिसका रंग छिपता नहीं है । असम में, तमिलनाडु में पान बिना कत्थे के ही खाया जाता है । असम का नगर गुवाहाटी, गौहाटी या गौ का हाट नहीं है । 'गुवाक' असमिया शब्द है, जिसका अर्थ है सुपारी । वह प्राचीन सुपारी की मंडी है । गुवाक हाटी से गुवाहाटी बना है ।

पान पर चूना, कत्था, सुपारी आदि लगाकर उसे कलात्मक ढंग से मोड़कर जो रूप दिया जाता है उसे बीड़ा कहते हैं । संस्कृत में यह बीटक है । जब लौंग सस्ती थी तब इस पर एक लौंग लगाते थे । उन दिनों बीड़े पर चांदी का वरक भी लपेटा जाता था । इसे पान जचाना कहते थे । पानों के दो बीड़ों को बीड़ा-जोड़ी कहते हैं । वाराणसी में सामान्यतया जोड़ी ही दी जाती है । सुपारी को पान का अभिन्न अंग माना जाता है । एक कवि ने इसे अपने दोहे में प्रयोग किया है । देखिए -

बिना कुचन की कामिनी, बिना मौंछ का ज्वान ।
जे दोऊ ऐसे लगैं, बिना सुपारी पान ॥

संस्कृत का 'वीटिका' ही पान का 'बीड़ा' बन गया । राज सभा में जब कोई व्यक्ति साहसिक कार्य करने की प्रतिज्ञा करता था या चुनौती स्वीकार करता था, तो राजा उसका सत्कार करते हुए उसे बीड़ा देता था । यहीं से बीड़ा उठाना प्रारंभ हुआ । स्वागत करने के लिए पान का बीड़ा दिया जाता है । यह "मान का पान" है, बीड़े के समान ही सावधानी से कलात्मक ढंग से तंबाखू पीने के लिए पुड़िया बनाई जाती

4780 HA/12—7B

है, उसे बीड़ी नाम दिया गया । बीड़े से यह छोटी होती है । अब मुंबई में रुपये लेकर हत्या करने का जो व्यक्ति करार करता है, तो कहते हैं कि उसने सुपारी ली है । सत्कार्य का साहस दिखाने पर बीड़ा उठाना । कुकृत्य के लिए सुपारी लेना ।

पान का बीड़ा विद्वानों को विशेष सम्मान के लिए भी दिया जाता था । नैषधचरित के रचयिता श्रीहर्ष को कान्यकुब्जेश्वर प्रतिदिन अपने हाथ से पान का जोड़ा भेंट करते थे और स्वयं ही उनके लिए आसन बिछाते थे । श्रीहर्ष ने स्वयं अपने परिचय में लिखा है:

ताम्बूलद्वयमासनं च लभते यः कान्यकुब्जेश्वरात् ।

कपूरी पान का विशेष महत्व काव्यग्रंथों में उल्लिखित है । श्री शंकराचार्य रचित 'शिवमानसपूजन' में यह श्लोक भी है,-

शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखंडोज्ज्वलं ।
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु ॥

खिरिया जगा ने 'वचनिका' में सती होने के लिए प्रस्तुत रतनसिंह की रानियों का शृंगार वर्णन करते हुए लिखा है :

गंगाजल स्नान करि, हीर चीर चाभीर ।
सोलह सिंगार परिमल पहरि । पान कपूर खाइ ।
दान पुंन करण लागी ।

यह तांबूल सेवन पूर्णतया भारतीय है । बृहत्तर भारत को छोड़कर अन्य देशों के वासी इस आस्वाद से अपरिचित हैं । ■

लेखक कृपया ध्यान दें

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की त्रैमासिक पत्रिका 'राजभाषा विभाग' प्रकाशनार्थ ज्ञान-विज्ञान की सभी विधाओं पर स्तरीय लेख आमंत्रित किए जाते हैं ।

हस्तलिखित लेख स्वीकार नहीं किया जाएगा ।

लेख ए-4 आकार के कागज़ पर दो प्रतियों में टाइप किया हुआ होना चाहिए जो सामान्यतः 3000 शब्दों से अधिक न हों ।

लेख के साथ इस आशय का घोषणा पत्र भी होना चाहिए कि यह लेख/रचना लेखक की मौलिक कृति है ।

लेख पर उचित मानदेय देने की भी व्यवस्था है ।

यदि किसी कारणवश किसी लेख को पत्रिका में शामिल करना संभव न हुआ तो उसे लौटाया नही जाएगा ।

कृपया लेख निम्नलिखित पते पर भेजें :—

—संपादक
राजभाषा भारती
राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय)
एन डी सी सी भवन-II, चौथा तल, बी विंग ,
जय सिंह रोड, नई दिल्ली-110001

दूरभाष सं. 011-23438137, 23438129

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता की वैचारिक अवधारणा

-अनीता पंडा*

आधुनिक युग में बौद्धिकता, तार्किकता, नवता तथा वैज्ञानिकता का युग है । जिसके परिणामस्वरूप साहित्य में विचार पक्ष का प्रवेश होता है । इसका प्रभाव 'बोध' के स्तर पर होता है । विचार काव्य का मस्तिष्क पक्ष है । इससे साहित्य अपनी भावुकता पर लगाम लगाता हुआ विशुद्ध वैचारिक भूमिका में दिखलाई देता है । इसके अन्तर्गत सामाजिक, राजनैतिक तथा दार्शनिक विचारों का समावेश है । किसी भी स्थान, समाज एवं समय का परिवेश उस समय की साहित्यिक-धारा को निश्चितत: प्रभावित करती है । विशेष रूप से इक्कीसवीं सदी की कविताओं पर बदलते परिवेश का असर साफ दिखाई देता है । कवि एक ओर समाज में शोषित, लाचार तथा श्रमिक वर्ग आदि के लिए आवाज उठाता है, तो दूसरी ओर शोषक वर्ग, तानाशाही, पूँजीपति और नेताओं के छद्मजाल के विरुद्ध खड़ा होता है । वह समाज में फैली कुरीतियों, हताशा, निराशा तथा अन्याय के खिलाफ क्रान्ति करना चाहता है । सब कुछ देखते और सुनते हुए भी कुछ न कर पाने की मजबूरी उसमें एक नपुसंकता का एहसास कराती है । जीवन के कटु यथार्थ के समक्ष ईश्वर के प्रति उसकी आस्था हिल जाती है । संघर्ष ही उसके जीवन का सबसे बड़ा दर्शन बन जाता है, जो जीवनपर्यन्त सबसे बड़े सत्य के रूप में कायम रहता है । इक्कीसवीं सदी की कविताओं में सामाजिक, राजनैतिक तथा दार्शनिक विचार-सौन्दर्य में यह परिवर्तन स्पष्ट परिलक्षित होता है ।

इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता में सामाजिक विचार उसकी व्यापक जन-चेतना का परिणाम है, जो जीवन की विविध अनुभूतियों से उत्पन्न है । आज का कवि केवल अभिव्यक्ति के सौन्दर्य-मात्र को अपना लक्ष्य स्वीकार नहीं करता बल्कि वह अधिक गम्भीर सामाजिक उत्तरदायित्वों को मानकर चलता है ।

कवि आदर्श समाज और भाव-गरिमा की बातें न करके आम आदमी के दुख-दर्द की बातें करता है । दैनिक समस्याओं से जुझता व्यक्ति अजनबीपन का बोझ लिए परिवार एवं समाज के बीच अकेला-सा हो जाता है । खोखले रिश्तों को निभाते हुए पारिवारिक टूटन का संत्रास भोगते हुए आम आदमी ऐब्नार्मल-सा हो जाता है ।

''इधर की स्थिति यही है/कि तरह-तरह की कतारों में खड़ा हूँ राशन से लेकर केरोसिन तक/कपड़ों से लेकर मकान तक/मकान से लेकर श्मशान तक...''[1]

कविता जैसे किताबों से निकलकर सड़क पर निकल आई है । वह आम-जन से संवाद कर रही है । आज ऐसी कविता की जरूरत है, जो चूल्हे से लेकर श्मशान तक काम आए । अभिव्यक्ति में एक खुरदुरापन है, यह 'बोध' के बदलाव की सूचना देता है । सौन्दर्यदृष्टि में 'सुखद' ही नहीं 'दुखद' पक्ष भी शामिल हो रहा है । पंक्तियां आर्थिक दृष्टि से कमजोर परिवार की गरीबी, अभाव और सामाजिक वैषम्य तथा आम आदमी के दर्द को एक साथ व्यंजित करती हैं । सौन्दर्यबोध से आभिजात्य पूरी तरह से तिरोहित है जैसे गाँवों से शहरों की नफासत । इनमें नए और ताजी सौन्दर्यबोध की उद्‌भावना है ।

समकालीन हिंदी साहित्य में 'दलित-साहित्य' एक आन्दोलन के रूप में उभरा । जिसका तीव्र तेवर इक्कीसवीं सदी की कविताओं में भी दिखाई पड़ता है । परिणामत: सौन्दर्यबोध का क्षेत्र और विस्तृत हुआ । कवि न केवल दलित-साहित्य के पक्ष में अपितु अपने वर्ग-हितों के संघर्ष के लिए भी कटिबद्ध होने लगे ।

''बाबा की कसम, अब जुल्म न हम सहेंगे.....''[2]

कहकर जातिप्रथा की पीड़ा से मुक्त होना चाहता है । दलित कविता में वर्तमान जीवन के अन्याय एवं अत्याचार

*मार्फत-श्री.वी.के. पंडा, डायरेक्टर मूडा, रायतांग बिल्डिंग, अर्बन अफेयर्स, शिलांग (मेघालय) -793001

शोषण के विरुद्ध आवाज बुलन्द की गई है । समता और स्वतंत्रता के मूल मानवीय अधिकार को स्थापित करने का प्रयास है । कविता में आक्रोश है, किन्तु उचित संयम भी ।

"इक्कीसवीं सदी की देहरी पर दस्तक देती मेरी
आकांक्षा में नहीं घूमता कोई मकान का नक्शा,

अब भी रोटी और कपड़े का सवाल ही
सबसे बड़ा सवाल है मेरे लिए ।"[3]

इससे यह स्पष्ट होता है कि सौन्दर्यदृष्टि आम इन्सान की समस्याओं और उनके संघर्ष आदि से जुड़ती है । आजादी के बाद से लेकर उत्तर-आधुनिकता तक रोटी और कपड़ा, जो आम व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकता है, लगातार कवियों का वर्ण्य-विषय एवं सौन्दर्यबोध का आधार रहा है । लगातार संघर्षों के बाद भी जब कवि को नाउम्मीदी मिलती है पर वह "परमाणु विस्फोटों के बाद भी आएंगी पूर्णिमाएँ...." [4] कहकर पूरी तरह आशा नहीं छोड़ता ।

स्वाधीनता के बाद से अब तक लगातार देश के शासक-वर्ग और साधारण जनता के बीच विरोध और संघर्ष बढ़ता ही गया । सन् 1960 के बाद की कविता के केंद्र में राजनीति की अनिवार्य स्थिति दिखाई देती है । मनुष्य को संचालित करने वाली राजनीति आज के प्रत्येक कवि मन को झकझोरती है । चुनाव पर चुनाव होते रहे पर सामान्य जन-जीवन में कई तब्दीली नहीं आई । ऐसे में सारा देश शुद्ध राजनीतिक नारेबाजी और चुनाव की निरर्थकता के बीच गड्डमगड्ड स्थिति से गुज़र रहा है । कवि इन्हीं विडम्बनापूर्ण स्थितियों और सर्वत्र फैली अराजकता का चित्रण करता है । राजनैतिक दाँव-पेंच शोषण आदि द्वारा कविता में सौन्दर्य की उत्पत्ति हुई है । युवा कवियों की पैनी दृष्टि भारतीय लोकतंत्र का कहीं खीज, तो कहीं गुस्से के रूप में बयान करती है ।

"दिन और रात, रात और दिन,
तुम हमें चूस रहे हो हर पल, हर क्षण ।
हमारे लिए चैन नहीं, मजूरी नहीं
नहीं है थोड़ी सी भी छुट्टी ।"[5]

इन पंक्तियों में दिन और रात, 'रात और दिन' की पुनरावृत्ति और 'चूसना' शब्द कविता में बदलते बोध को दर्शाता है । आज के कवियों के लिए सौन्दर्य केवल सुन्दर और कोमल वस्तुओं में ही नहीं अपितु हर पल शोषित होते बेबस लोगों की पीड़ा में भी है । कवि लगातार देश के जकड़ते राजनीति शिकंजे से मुक्त होना चाहता है । मुक्ति का यह आक्रोश उत्तर आधुनिक काल में दलित साहित्य के रूप में उभरा है । दलित विचारों का सौन्दर्यबोध कविता में महत्त्वपूर्ण स्थान लेता है । कवि समाज में समान अधिकार की माँग करता है ।

"सच मानो मैं आँखें मिलाकर,/सिर उठाकर जीना
चाहता हूँ खौलता रहना चाहता हूँ,/ठंडा हो जाना मेरी
मौत है ।"[6]

अधिकारों की माँग करते-करते दलित साहित्यकारों की कलम और पैनी होती गई । बदलती काव्यधारा ने बदलते राजनैतिक माहौल से लगातार टकराने की कोशिश की है, चाहे वह दलित साहित्य के रूप में क्यों न हो? यह साहित्य जनसामान्य के अधिक निकट है । साथ ही वह व्यक्ति सत्य और राजनीतिक-सत्य में सही ताल-मेल करता है ।

इक्कीसवीं सदी की कविताओं में 'बोध' के स्तर पर बौद्धिकता प्रमुख हो गई । वैज्ञानिक दृष्टि ने धर्म एवं संस्कृति के क्षेत्र में भी परिवर्तन किया है । राजनीति एवं स्वार्थ परक माहौल ने अनास्था को जन्म दिया । ईश्वर उसे रिरियाता-सा प्रतीत होता है ।

"आत्मा किस अठन्नी का नाम है
वह, जो एक सन्तरा देती है....." [7]

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने 'आत्मा' का संबंध आध्यात्म से नहीं बल्कि 'अठन्नी' से जोड़ा है । यह दार्शनिक सौन्दर्यबोध के बदलाव को सूचित करता है । बोध के स्तर पर 'यथार्थ' को महत्वपूर्ण स्थान मिलता है । काव्य में 'फ्रायड' के दर्शन का प्रभाव स्पष्टत: दिखाई पड़ता है । कई कवियों ने प्रेम-प्रसंगों का चित्रण अमिधा में किया है । परिणामस्वरूप 'प्यार' के स्थान पर 'सहवास' शब्द उसे ज्यादा समझ में आता है ।

"प्यार शब्द घिसते-घिसते/चपटा हो गया है, अब
हमारी समझ में/सहवास आता है"[8]

जहाँ प्रेम-प्रसंगों का वर्णन खुले रूप में हुआ है, वहाँ सौन्दर्यबोध में वृद्धि होने की जगह उसका ह्रास हुआ है ।

बोध के स्तर पर कविता में बौद्धिकता प्रमुख हो गई । आज माहौल बदल चुका है और समय की माँग भी बदल रही है । आज की कविता जटिल जीवन की संच्चाई बयाँ करती है । आज की संवेदना में जहाँ अनेक जटिलताएँ हैं, वहीं मनोवैज्ञानिक चेतना भी है । इसे बिना समझे कविता की मूल संवेदना नहीं समझ सकते । आज का कवि यह स्वीकार करता है कि शोक, भय, क्रोध तथा जुगुप्सा आदि विकर्षणात्मक भाव जीवन के अंग हैं । ये ग्राह्य भी हो सकते हैं और रस की सृष्टि भी कर सकते हैं । छटपटाहट आधुनिक युग की नियति बन गई है । लोगों की पीड़ा की, समस्याओं की अभिव्यक्ति और उसका समाधान आज के कवि का दर्शन है ।

''मासूम सपने हैं कुछ/और एक अवधूत कोशिश है,
आदमी के भीतर डूबते ताप को बचाने की .....''[9]

आज की कविता अकर्मण्य दार्शनिक सौन्दर्यबोध के प्रति आस्था नहीं रखती । वह सौन्दर्यबोध के उन जीवन्त तत्वों के प्रति आस्था रखती है, जिनका साहचर्य उसे आम जीवन में प्राप्त होता है । जहाँ तक सौन्दर्यबोध का प्रश्न है, कविता के स्वर में तल्खी है । निराशा का जमाना तो बीतता दीख रहा है, परन्तु भविष्य की आवाज भी साफ नहीं है । ऐसे में आम आदमी अनिश्चितता में जी रहा है । इसके परिणामस्वरूप कविता के इस दौर में वैचारिकता की मुकम्मल पड़ताल भी दीखती है । एक बेचैनी है, साथ ही खोज के साथ अपनी पीड़ा को चुपचाप पी जाने का धैर्य भी गायब है ।

सन्दर्भ :

1. कविता- इधर की स्थिति, कवि राजकुमार कुम्भज, पत्रिका-आर्यकल्प, दिसम्बर-2001, पृ. 73.
2. लेख-मार्क्सवाद और दलित साहित्य, लेखक-सदा कान्हडे, पत्रिका-वसुधा, जुलाई-सितम्बर-2003.
3. कवि-अनिल त्रिपाठी, पत्रिका-इन्द्रप्रस्थ भारती, अप्रैल-जून-2004, पृ. 98.
4. कविता-सारी प्रगति के बाद, कवि-गोविन्द कुमार 'गुंजन', पत्रिका-इन्द्रप्रस्थ भारती, जनवरी-मार्च-2004.
5. पत्रिका-साहित्य अमृत, कविता-सिगरेट, कवि-सुकांत भट्टाचार्य, अनु. रामनाथ त्रिपाठी, मार्च-2006.
6. निबन्ध-मार्क्सवाद और दलित साहित्य, लेखक-सदा कान्हडे, पत्रिका-वसुधा, जुलाई-सितम्बर-2003.
7. पत्रिका-हिंदी अनुशीलन, कवियत्री-डॉ. रंजना राजदान।
8. पुस्तक-खाटी घरेलू औरत, कवियत्री-ममता कालिया, वाणी प्रकाशन, सं. 2004, पृ. 96.
9. कविता-शब्दों के साथ और शब्दों के पार, कवि-विमलेश त्रिपाठी, पत्रिका-माध्यम, सहस्त्राब्दि अंक, जुलाई-सितम्बर-2005. ■

सांविधानिक उपबंध सार

—कर्मचारियों को हिंदी का कार्य साधक ज्ञान प्राप्त कर लेने पर राजभाषा नियम 1976, 10(4), पर उस कार्यालय में केवल हिंदी में पत्राचार किया जा सकेगा ।

—धारा 3(3) के तहत (1), केंद्र सरकार आदि के संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचना, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन या प्रेस विज्ञप्तियां (2) संसद के सदनों में रखी जाने वाली प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदन और राजकीय कागजात (3) केंद्र सरकार आदि की संविदा, करार, अनुज्ञप्तियां, अनुज्ञा पत्र, सूचना, निवेदा प्रपत्र हिंदी और अंग्रेजी में जारी होंगे ।

—धारा 3(4) में यह प्रावधान है कि केवल हिंदी या अंगेजी जानने वाले कर्मचारियों का इसी कारण अहित नहीं होगा कि वे दूसरी भाषा नहीं जानते ।

4780 HA/12—8B

पुरानी यादें-नए परिप्रेक्ष्य में

तुलसी और एषुत्तच्छन

-डॉ. एन. मोहनन*

भारतीय आत्मा की अखण्ड सत्ता का दर्शन कराने वाला रामायण युगों से भारतीय जीवन को व्यवस्थित एवं सुदृढ़ बनाकर आस्था और विश्वास प्रदान करता आ रहा है। भारत के बाहर जहाँ-जहाँ भारतीय पहुँच गए हैं। वहाँ उनके साथ रामायण भी भारतीयों की संस्कृति का प्रतिरूप बनकर उनको आत्मबल एवं आध्यात्मिक उन्मेष दे रहा है। तात्पर्य यह है कि भारतीय जीवन का अटूट अंग है रामायण। यह प्राचीन इतिहास ग्रंथ नित्य नवीनता के साथ हमारे बीच में कई कवियों एवं कलामर्मज्ञों के माध्यम से कई रूपों में प्रकट होता रहता है। भारत के संबंध में विभिन्न प्रांतों एवं प्रदेशों के लिए अपना-अपना रामायण है। वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण, अज्ञातनामा रचनाकार का अध्यात्मरामायण, कई पौराणिक ग्रंथों में तथा जनहृदयों में बिखरी पड़ी रामकथा को कलाकार अपनी प्रतिभा के सहारे ज्यादा फरक नहीं है तो भी अपने प्रदेश की संस्कृति एवं जलवायु के अनुकूल रूप एवं भाव प्रदान करता आ रहा है। यहाँ रामायण संबंधी वाल्मीकि की भविष्यवाणी सत्य निकलती है-

"यावत् स्थास्यन्ति गिरय: सरितश्च महीतले
तावत् रामायण कथा लोकेषु प्रचरिष्यति"

उत्तर भारत की जनता के हृदय में जो स्थान गोस्वामी तुलसीदास को प्राप्त हुआ है वही दक्षिण की केरलीय जनता के हृदय में तुंचत्तु श्री रामानुजन एषुत्तच्छन को भी प्राप्त है। जैसे तुलसीदास जी हिंदी भाषा भाषी जनता के सर्वश्रेष्ठ कवि और आध्यात्मिक गुरु माने जाते हैं वैसे ही एषुत्तच्छन भी मलयालम भाषा बोलने वालों के बीच सर्वश्रेष्ठ कवि और आचार्य ठहराए गए हैं। इन दोनों महापुरुषों ने जिस प्रकार एक ही प्रकार के कार्यों और जीवन दर्शनों से अपनी-अपनी जनता की धार्मिक या सांस्कृतिक परम्परा को प्रभावित किया उसी प्रकार अपनी असाधारण प्रतिभा के प्रकाश से साहित्यिक परंपरा को भी प्रोत्साहित किया है। दोंनो कवि समकालीन हैं। तुलसी का समय सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से सत्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक है। लेकिन एषुत्तच्छन सोलहवीं शताब्दी के हैं। दोनों बारहवीं शताब्दी से लेकर अठारहवीं शति तक संपूर्ण भारतवर्ष में प्रचलित भक्ति आन्दोलन के शीर्षस्थ कवि थे।

मध्यकाल में भक्ति आन्दोलन ने समस्त भारतवर्ष में पौराणिक मतवाद को जो नई जीवन-शक्ति प्रदान की उसके प्रसार तथा प्रवाह में भारतीय संतों और भक्तों के समान तुलसी और तुंचन भी आ गए। मध्ययुगीन सामाजिक, धार्मिक विघटन एवं अस्तव्यस्तता से भक्ति आन्दोलन का अभ्युदय हुआ है। डॉ. ग्रियेर्सन के अनुसार बिजली की चमक के समान अचानक उस समस्त अंधकार के ऊपर से एक नई बत्ति दिखाई पड़ी, यह भक्ति आन्दोलन है। दक्षिण से आई हुई सगुण भक्तिधारा ने मानवहृदय को समस्त विषमताओं के परे भगवतप्रेम की सामान्य भूमि पर पहुँचाने का कार्य शुरू किया। समन्वयात्मक प्रवृत्ति इसकी सबसे बड़ी विशेषता थी। कबीर, नानक आदि संतों ने यह दिखा देने का स्तुत्य कार्य किया था। अत: धर्म के नाम पर कलह करना मूर्खता है। जनता पर इसका अच्छा प्रभाव भी पड़ने लगा।

तुलसी के समय उत्तर भारत के शासन की बाग्डोर अकबर और जहाँगीर के हाथों में थी। उस समय धर्म का विस्तार हुआ। धार्मिक समन्वय का वातावरण बना रहा। अकबर में जितनी समन्वयात्मक बुद्धि और संग्रहणशीलता थी उतनी जहाँगीर में नहीं थी। लेकिन पूर्ववर्ती मुस्लिम शासकों की अपेक्षा उनका दृष्टिकोण उदार था। केरल में उस समय विदेशियों का बहुत अत्याचार चल रहा था। विशेषकर पोर्चुगीस लोगों ने सब कुछ तहस नहस करने का कार्य किया।

*प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, कोच्चिन प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, कोच्ची-22

यहाँ के राजाओं के बीच में परस्पर कलह चल रहा था। युद्धों में अनेक युवाओं की मृत्यु हुई। युद्ध जीवन का भाग बन गया। उसके साथ निराशा, कुंठा, शून्यताबोध आदि से जनता तड़प रही थी। उस समय उत्तर भारत में प्रचलित वैष्णव भक्ति दक्षिण तक आदि। एषुत्तच्छन तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश आदि प्रदेशों में घूमकर आए। वहाँ से भक्ति को उन्होंने भी पकड़ लिया। उनके रामायण की भक्ति में केरल के उत्तर से दक्षिण तक की आवालवृद्ध जनता निमग्न हो गई। उन्हें मानसिक, एवं अध्यात्मिक रूप से जागृत करने में यह सहायक हुआ। ये दोनों कवि यद्यपि समाज के अन्याय एवं अत्याचार का सीधे कठोर शब्दों में विरोध करते नहीं हैं तो भी अपनी भक्ति के माध्यम से लोगों को सान्त्वना देने में समर्थ हुए। ये दोनों ने उस समय के ब्राह्मण लोगों को महत्व देने वाली फ्यूडल व्यवस्था का विरोध किए बिना भक्ति रस में जनता को आबद्ध किया। चातुर्वर्ण्य को दोनों मानते थे। जमाना वह था, उससे अलग होकर सोचने में वे असमर्थ थे। तुलसी ब्राह्मण थे, लेकिन समाज एवं परिवार द्वारा उपेक्षित थे। एषुत्तच्छन शूद्र थे, इसलिए वे समाज के चातुर्वर्ण्य के गुणदोषों से ये भली-भाँति परिचित थे। लेकिन ब्राह्मणों का आदर करते हुए ही उन्होंने किली (तोत्ता) के द्वारा रामायण का गायन करवाया था। मलयालम भाषा को नया रूप देने और किलिप्पाट्टु शैली में काव्य लिखने की उनकी नई पद्धति से ये मलयालम भाषा के पिता बन गए। उत्तर भारत के घर-घर में साधारण जन भाषा अवधी में लिखित रामायण का गायन जिस प्रकार होता है उसी प्रकार केरल में प्रत्येक हिन्दू के घर में एषुत्तच्छन के रामायण का पारायण होता है। इसका तात्पर्य यह है कि दोनों कवियों ने साधारण जनता के ऊपर उतना प्रभाव डाला कि उनकी भक्ति उस विशेष अस्वस्थ वातावरण में जनहृदयों को शांति एवं दिलासा देने के साथ सबको एक सूत्र में बाँधने में भी समर्थ हुई।

तुलसी और तुंचन दोनों अपने-अपने समाज की व्यवस्था के दोषों और कमियों को भलीभाँति समझ लिया था। राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक जैसे सभी क्षेत्रों में सब कहीं उन्होंने अव्यवस्था ही देखी। उसके हल के लिए उन्होंने अपनी-अपनी मान्यता और शक्ति के आधार पर अथक परिश्रम भी किया। उन दोनों ने जनता से दूर रहकर नहीं व्यक्ति और समाज के बीच में खड़े होकर सच्चे कलाकार के समान जनता के हास-रुदनमय नित्य जीवन से अपनी प्रतिभा विलास की सामग्री जुटा ली।

राजनैतिक विचार

तुलसी दास ने अपने हृदय में रामराज्य का आदर्श ही राजशासन के लिए सर्वोत्तम समझ रखा था। उन्होंने रावण के शासन की अनीतियों का जो चित्र खींचा है उससे यवनों की राजनीतिक अनीतियों का आभास हो सकता है। प्रजा हितैषी होना राजा का सबसे बड़ा कर्तव्य है। प्रजा के प्रति राजा की वात्सल्य भावना को ही तुलसी ठीक समझते हैं। समस्त प्रजा का समान रूप से पालन करना सभी राजाओं का कर्तव्य होना चाहिए जैसे-

मुखिया मुख सों चाहिए खानपान कहाँ एक।
पाले पोसै सकल अंग। तुलसी सहित विवेक।

राजा को हमेशा कर्तव्य निरत रहना चाहिए। इसके साथ वीर और निर्भीक भी। सत्य की रक्षा के लिए प्राणत्याग तक करने को राजा को प्रस्तुत होना चाहिए। राजनीति की सफलता के लिए धन भी परम आवश्यक है। बिना धन और धर्म से राज्य का विकास नहीं हो सकता।

तुंचन का राजनैतिक मत क्षात्र धर्म को प्रश्रय देने वाला है। यद्यपि वे परम सात्विक तथा परिपूर्ण शान्त प्रकृति के योगी थे तथापि वे क्षात्र धर्म की रक्षा को समाज की भद्रता के लिए अत्यंत आवश्यक समझते थे। सैनिक शिक्षा का भी वे समर्थन करते हैं। धर्म के लिए कर्तव्य की रक्षा के लिए युद्ध करना वीरों का परमोच्च आदर्श है। वीर राजाओं का सबसे बड़ा धर्म रणक्षेत्र में वीरमृत्यु को स्वीकार करना है। तुंचन का विश्वास है कि शासकों के कुशासन के कारण ही राज्य में अशांति, बालकों की मृत्यु, स्त्रियों का वैधव्य आदि कष्ट आ जाते हैं। राम के शासन काल में इसका नामोनिशान भी नहीं था। वहाँ राजा और प्रजा का संबंध पिता और पुत्र का ही था। उनके आदर्श राज्य में वर्णाश्रम व्यवस्था का सुचारु रूप से पालन होता था। राजा और प्रजा दोनों को सभी प्रकार के संयमों का पालन करना है।

राजनीति संबंधी उन दोनों कवियों की धारणा में समानता है। राजा या शासक का जो आदर्श दोनों कवियों ने सामने रखा है वह हमेशा के लिए उपादेय है। राजा शब्द से यदि घृणा है तो उसके स्थान पर आज कल के नेता, मंत्री जो भी शब्द रख सकते हैं। सबके लिए यह आदर्श-स्वार्थ निरपेक्ष जनसेवा-सार्वकालिक आदर्श स्वरूप है।

समाज

दोनों कवियों ने आध्यात्मिक जीवन को भौतिक जीवन से ज़्यादा महत्व दिया है । फिर भी भौतिक जीवन के महत्व को उन्होंने नकारा नहीं । इसलिए समाज संबंधी मान्यताओं में गार्हस्थ्य जीवन के आदर्श को सर्वोच्य स्थान दिया । दोनों, परिवार को समाज का मूल मानते हैं । परिवार से ही समाज की सत्ता रूप धारण कर लेती है । पारिवारिक जीवन की मंगल कामना के बिना समाज कल्याण की आशा करना व्यर्थ है । परस्पर स्नेह और सहकारिता की शिक्षा परिवार से ही समाज ग्रहण करता है । तुलसी परिवार की समस्त उन्नतियों और समृद्धियों का कारण स्त्री को मानते हैं । एषुत्तच्छन के अनुसार पति के हित का सर्वथा अनुसरण करना पत्नी का परम धर्म है ।

दोनों कवि परिवार की सफलता के लिए नारी के समझौते पर बल देते हैं । दोनों कवियों ने अपने साहित्य में स्त्री स्वातत्र्य की एक प्रकार से उपेक्षा की है । तुलसी ने कहा "ढोर गँवार सूद्र पशु नारी । सकल ताड़न के अधिकारी" । एषुत्तच्छन ने भी स्त्री को दुर्बल आत्मसत्ता का जीव मानते हैं । सर्वत्र स्त्रियों का आदर्शीकरण कर दोनों ने स्त्रियों का शोषण ही किया । जहाँ यथार्थ मानवी नारीपात्र है, उनकी भर्त्सना या अपमान दोनों की रचना में हुए हैं । कैकेकी, मंथरा, शूर्पणखा, जैसी मानवी नारियों के प्रति कवियों का दृष्टिकोण नकारात्मक है । तुलसी रामायण में राम का इशारा पाकर लक्ष्मण शूर्पणखा के प्रति अन्याय करता है तो एषुत्तच्छन ने अपने राम को इसी इशारे के माध्यम से भी दोषी ठहराना नहीं चाहते ।

यद्यपि शूद्र भी ताड़ना के अधिकारी कहा गया । तथापि तुलसी ने अपने रामायण में शूद्रों या निम्न जातीय को भक्ति के अधिकारी माना है शबरी, केवट जैसे निम्न जातिवालों के उत्थान करने के साथ वानर जैसे जानवरों से भी मित्रता जोड़ने के लिए राम तैयार हो जाते हैं । इससे यह बात विदित होती है कि चाहे स्त्री हो या दलित उनका जीवन भक्ति पर केंद्रित आदर्श जीवन है तो उनका पूर्ण समर्थन तुलसी एवं एषुत्तच्छन करने के लिए तैयार थे । आदर्श समाज की सृष्टि के लिए आदर्श चरित्रों का भी निर्माण किया गया । क्योंकि उस समय का समाज इतना शिथिल था कि लोग भोगविलास में पूर्णत: आमग्न होकर अपना कर्तव्य भूल गए थे ।

तुलसी और एषुत्तच्छन ने गार्हस्थ्य जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है । तुलसी ने बच्चों का स्थान परिवार में निर्धारित कर अनूठे वात्सल्य का चित्रण किया है । लेकिन एषुत्तच्छन ने वात्सल्य वर्णन को महत्व नहीं दिया ।

दोनों ने अपने इष्टदेव भगवान राम को मानव-जीवन से कोसों दूर रहने वाले गुणातीत तत्व के रूप में प्रस्तुत नहीं किया है । उनकी नींव व्यक्ति और व्यक्ति के पारस्परिक व्यवहार की भद्रता और मर्यादा पर ही आधारित है । उससे समाज की मान्यताओं के साथ व्यक्ति की अभिलाषाओं का सामंजस्य संस्फुटित दिखाया गया है ।

भौतिक जीवन में कर्मक्षेत्र का अपना महत्व होता है । एषुत्तच्छन कर्मक्षेत्र की ओर लोगों का आह्वान अवश्य करते हैं, पर सतर्कता के साथ काम लेने की चेतावनी भी दे देते हैं ।

"हे भाई, यह समस्त दृश्य प्रपंच-
शरीर, राज्य, धन, धान्य आदि
यदि सत्य है तो इनके लिए तुम्हारा परिश्रम
युक्ति-संगत है, अन्यथा इनका क्या प्रयोजन
(रामायण-अयोध्याकाण्ड-पृ-78)

दोनों समाज में व्याप्त आलस्य, अवसाद एवं अकर्मण्यता को दूर करके उसमें नई स्फूर्ति और नई चेतना भर देना चाहते थे । यद्यपि तुलसी ने स्वान्त: सुखाय' कविता लिखी थी तथापि उनका स्वान्त:सुखाय स्वयं बहुजन हिताय और बहुजन सुखाय में परिणत हो गया । तुलसी और तुंचन दोनों ने क्रमश: उत्तर और दक्षिण भारत के तत्कालीन समाज का मार्ग प्रदर्शन करके उसे अपदाओं से विमुक्त किया । उन्हीं महापुरुषों के महाप्रयास का परिणाम है कि वे समाज अपने अस्तित्व को आज भी सुरक्षित रख पा रहे हैं ।

भक्ति और दार्शनिक मत

मध्यकालीन भारतीय साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता है भगवद भक्ति की ओर उसका लगाव । प्राय: सभी कवि सर्वप्रथम भक्त थे बाद में कवि । उनकी रचनाओं का प्राणभूत तत्व भक्ति है । भारतीय दर्शन भी धार्मिक भावनाओं से पृथक नहीं है । तुलसी और एषुत्तच्छन दोनों सगुणोपासक रामभक्त हैं । दोनों की भक्ति दास्य भक्ति भी है । तुलसी जीवन के व्यापक क्षेत्र में भक्ति भावना के सर्वस्पर्शी रूप को लेकर चले हैं । उनके अनुसार ईश्वर हम लोगों के नित्य जीवन की अनुभूतियों में हमारा सहायक, हमारी प्रार्थना को सुनने वाला, परमकारुणिक पिता है । तुलसी ने 'नानापुराण निगमागम सम्मतम' कहकर भारतीय आर्यधर्म की ओर

4780 HA/12—9A

अपनी अडिग आस्था प्रकट की । तुलसी की दृष्टि में सगुण भगवान राम तथा निर्गुण ब्रह्म में कोई भेद नहीं । उन्होंने लक्ष्मण-निषाद संवाद, राम-नारद संवाद, वर्षा-शरद वर्णन, राम-लक्ष्मण संवाद, गरुड़ और कागभुशंडी संवाद में अपने दार्शनिक विचारों को अभिव्यक्त किया है । तुलसी ने अपने राम को ब्रह्म ही माना है । सांप्रदायिक दृष्टि से वे रामानुजाचार्य के अनुयायी हैं । लेकिन अद्वैतवाद और द्वैतवाद दोनों को श्रद्धा की दृष्टि से ही देखते हैं ।

एषुत्तच्छन अद्वैतवाद के समर्थक हैं । लेकिन साधना के क्षेत्र में दोनों पूर्णत: भक्तिमार्ग के अनुयायी थे । दोनों ने अद्वैत, विशिष्टाद्वैत आदि को समन्वित किया, बाह्याडंबर का विरोध किया । भक्तिमार्ग में जिस समन्ववाद का प्रयोग किया गया वह उस समय के कई द्वन्द्वों से बचने में सहायक सिद्ध हुआ । उन दोनों के पवित्र कार्यों से भारतीय जनता का हृदय भक्ति की अमृतधारा से शीतल हो गया । आत्मा आनन्द से प्रफुल्लित हो उठी । जड़ता चेतनता में परिवर्तित हो गई, आलस्य और अवसाद कर्म के उत्साह और स्फुरण में परिवर्तित हो गए । भारत वर्ष की जनता नई आशा और नए उत्साह के अतिरेक से नवयुग के सोपानों में पदार्पण करने लगी ।

समन्वय भावना - तुलसी और एषुत्तच्छन विभिन्नता में एकता को देखने वाले हैं । आदिकाल से लेकर भारत के धर्म और दर्शन अनेक को एकसूत्र में बाँधने वाले थे । विकास के लिए द्वन्द्व को मानने वाला भक्त कवि भारत में नहीं है । जो प्राचीनता आदर्श पर आधारित है उसके साथ समझौता करते हैं दोनों कवि । भक्ति में 'समुनहिं अगुनहिं नहिं कछु भेदा' कहने वाले तुलसी दर्शन में द्वैत, अद्वैत और विशिष्टाद्वैत को भी समभावना से देखते हैं । तुलसी और एषुत्तच्छन ने व्यावहारिक एवं शास्त्रीय ज्ञानों को रामकथा में समन्वित कर दिया । आध्यात्मिकता और भौतिकता की एकतानता उनमें है। उनके अनुसार पुरुषों के साथ स्त्रियों का समझौता परिवार के मंगल के लिए अनिवार्य है । एषुत्तच्छन के अनुसार समग्र व्यग्रताओं और क्रियाकलापों का एक सामान्य लक्ष्य तो है ही, वह है समस्त विषमताओं के परे समरसता और शांति । तुलसी के अनुसार प्रवृत्ति (घर) और निवृत्ति (वन) दोनों के बीच सामंजस्य है ।

"घर कीन्हें घर जात है । घर कीन्हे घर जाइ ।
तुलसी घर बन बीच ही राम प्रेमपुर छाई ।।"

तुलसी की समन्वय भावना से उत्तर भारत में शैव-वैष्णवों का कलह मिट गया । यह भी नहीं राम का वानरों के साथ सामंजस्य सबसे उल्लेखनीय है । वर्गभेद मिटाने का रामायणकार का यह उद्यम सबसे विचारणीय है ।

मनुष्य और प्रकृति के साथ जो चिरसंबंध है यह भी रामायण का सबसे विचारणीय विषय है । आजकल प्रकृति के सब कुछ छीनकर उसका विनाश करने की प्रवृत्ति मानव में ज़्यादा विद्यमान है । इस संदर्भ में राम प्रकृति के साथ मिलकर आदि मानव के समान जीवन बिताता है । प्रकृति उनका वासस्थान है वह उनके खानपान की व्यवस्था करती है । प्रकृति के जीवजन्तु विशेषकर वानर, जटायु आदि से उनकी दोस्ती एवं उनकी मदद आदि का खुलासा दोनों रामयाणों में है । राम भी उनसे प्रेम, ममता आदि प्रकट करते हैं । इस प्रकार मनुष्य एवं प्रकृति का यह परस्पर पूरक रूप आज की पारिस्थितिकी के संदर्भ में सबसे ध्यातव्य है ।

इस आधुनिक युग में विकास के पर्याप्य के रूप में द्वन्द्वात्मकता को स्वीकारी किया गया है । तब वर्णव्यवस्था जैसी फ्यूडल व्यवस्था तथा सवर्णमेधा समाज से समझौता करने वाले इन कवियों की रचनाओं को समाज के प्रति अन्याय करने वाली अप्रासंगिक रचनाओं कही जाती हैं तो यह बहुत अन्याय होगा । क्योंकि उन दोनों कवियों के रचनाकाल में आज हम जिस स्वातंत्र्य का अनुभव कर रहे हैं वैसा वातावरण नहीं था ।

इन दोनों रामायणों के शिल्प पक्ष पर विचार किया जाय तो कई विशेषताएँ प्रकट होती हैं । तुलसी का रामचरितमानस चार संवाद जैसे शिवपार्वती संवाद, काकभृशंडी-गरुड संवाद, याज्ञवलव्य भारद्वाज संवाद तथा तुलसी-जनता संवाद के रूप में है । लेकिन एषुत्तच्छन का पूरा रामायण शिवपार्वती संवाद है, फिर भी उन्होंने किली (तोत्ते) से पूरे रामायण का गायन करवाया है । इसलिए इसे 'अध्यात्मरामायणम् किलिप्पाट्टु' कहते हैं । दोनों ने संस्कृत के अध्यात्मरामायण को उपजीव्य माना है । लेकिन संदर्भानुसार वाल्मीकि रामायण तथा अन्य रामायणों का इस्तेमाल किया गया है । तुलसी रामायण में बालकाण्ड, अयोध्या कांड, अरण्यकांड, किष्किन्धा काण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड और उत्तरकाण्ड जैसे सात काण्ड हैं तो एषुत्तच्छन के रामायण में बालकाण्ड, अयोध्याकांड, अरण्यकांड ,किष्किन्धा काण्ड, सुन्दरकाण्ड और युद्ध काण्ड जैसे छ: काण्ड हैं । तुलसी की कृष्णगीतावली को छोड़कर बाकी सभी रचनाओं में राम है नायक । लेकिन एषुत्तच्छन ने महाभारत की रचना भी की है । यह रचना रामायण की अपेक्षा बहुत कलात्मक है ।

4780 HA/12—9B

तुलसी ने दोहा, चौपाई, कवित्त छप्पय, बरवै जैसे अपने समय में प्रचलित सभी छन्दों में रामकथा की रचना की थी । एषुत्तच्छन ने भी द्रविड छन्दों में प्रसिद्ध केका, काकली, मंजरी आदि छंदों का प्रयोग करके उस समय प्रचलित सभी द्रविड छन्दों में रामकथा का प्रणयन किया ।

उपर्युक्त विश्लेषण से हमें यह ज्ञात होता है कि यद्यपि हिंदी और मलयालम के इन शीर्षस्थ भक्त कवियों में भाव पक्ष की दृष्टि से समानता दिखाई देती है तथापि दोनों कवियों ने अपने-अपने जन के हृदय में जो स्पंदन जगाई हैं उसको नापना किसी के वश की बात नहीं है । यह गूँगे के गुड के समान अनुभववेद्य है ।

समकालीन संदर्भ में इन कृतियों की प्रासंगिकता पर सवाल करने वालों को कई दृष्टियों से जवाब दिया जा सकता है । एक जवाब यह है कि मूल्यविघटन के इस ज़माने में सभी प्रकार के मूल्यों को सुरक्षित रखती हैं ये रचनाएँ । भूमंडलीकरण के इस ज़माने में जहाँ हमारी संस्कृति विनष्ट होती जा रही है वहाँ भारतीय संस्कृति और भारतीयों को प्रतिष्ठित करने के लिए ये रचनाएँ समय की माँग बन जाती हैं । आज राम शब्द एवं रामायण बहुत संकुचित हो गए हैं । जिन शब्दों के द्वारा विशाल भारत को एक सूत्र में बाँधा जाता था, भारतीय संस्कृति की अभिव्यक्ति होती थी, मूल्यों की प्रतिष्ठा होती थी, सहिष्णुता का उच्च महान भाव प्रकट करता था, वे आज कुछ स्वार्थलोलुपों के हाथ में पड़कर सांप्रदायिकता के पर्याय बन गए हैं । संपूर्ण दुनिया की जिन्दगी को गति प्रदान करने में समर्थ इन रचनाओं पर बहुत ही सूक्ष्म एवं व्यापक पुनर्मूल्यांकन की ज़रूरत है । क्योंकि ये प्राचीन ग्रंथ सदा अर्वाचीन होते जा रहे हैं । ■

सांविधानिक उपबंध सार

—भाग-17, अनुच्छेद 345 के तहत राज्य विधान मंडल को अधिकार दिया गया है कि वह अपने सरकारी कार्यों के लिए अपने राज्य की किसी भाषा/भाषाओं को या हिंदी का प्रयोग अंगीकार कर सकेगा ।

—भाग-17, अनुच्छेद 346 के अंतर्गत प्रावधान है कि राज्यों द्वारा आपस में और राज्यों द्वारा संघ के साथ पत्राचार के लिए संघ की राजभाषा काम में लाई जाएगी ।

—अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा के विकास के लिए विशेष निदेश दिए गए हैं कि हिंदी भाषा का विकास हिंदुस्तानी और आठवीं अनुसूची में उल्लिखित अन्य भाषाओं से रूप, गुण और शैली तथा मुख्यतः संस्कृत से और फिर अन्य भाषाओं से शब्द संपदा ली जाए ।

—भाग-17, अनुच्छेद 351 के तहत आठवीं अनुसूची में कुल 22 भाषाएं हैं । नई भाषाएं हैं– मैथिली, बोडो, डोगरी तथा संथाली ।

—अनुच्छेद 343(2) के तहत राष्ट्रपति के मई 1952 के आदेश द्वारा राज्यों के राज्यपाल, उच्चतम/उच्च न्यायालय के न्यायधीशों की नियुक्ति के लिए देवनागरी अंकों का प्रयोग प्राधिकृत किया गया ।

—अनुच्छेद 343(2) के तहत 3 दिसंबर, 1955 को राष्ट्रपति जी के आदेश द्वारा 1965 से पहले ही जनता के साथ पत्र-व्यवहार, प्रशासनिक रिपोर्ट, संसद रिपोर्ट, संकल्प हिंदी राजभाषा वाले राज्यों के साथ पत्र-व्यवहार, अंतरराष्ट्रीय संगठनों में भारतीय पदाधिकारियों के नाम जारी किए जाने वाले औपचारिक दस्तावेज अंग्रेजी के साथ ही हिंदी में भी जारी किए जाने की व्यवस्था की गई ।

पर्यावरण

ग्लोबल वार्मिंग से बदलता पृथ्वी का मिजाज

–डॉ. दीपक कोहली*

ग्लोबल वार्मिंग मानव एवं पृथ्वी के लिए भयावह संकट बन गई है। इससे धरती के अस्तित्व को भारी खतरा पैदा हो गया है। इसकी वजह से वातावरण में घुलने वाली जहरीली गैसों की मात्रा चिंताजनक स्तर से काफी ऊँची हो गई है। यही स्थिति बनी रही तो भविष्य में इसके आसन्न खतरों से जो प्रभाव होगा, उसकी कल्पना मात्र से रूह काँप उठती है। यह प्रभाव एक नन्हें जीव से लेकर मानव एवं धरती पर सभी के लिए भारी एवं भयावह होगा। इतना सब होने के बावजूद हम वही उदासीनता का परिचय दे रहे हैं।

ग्लोबल वार्मिंग ने प्रकृति में अनगिनत पीड़ादायक एवं आश्चर्यजनक परिवर्तन किए हैं। इसके अनेक भयावह दुष्परिणाम हुए हैं। इस त्रासदी से इंसान अनजान नहीं है। पिछले कई वर्षों से इसके बढ़ते दुष्प्रभाव का दर्द इसी मानवता ने देखा है। जिनमें से एक परिवर्तन 'एलनीनो' में भी देखने में आया है। सुनामी की भीषण तबाही इसी का परिणाम माना जाता है।

वस्तुत: प्रकृति में एक गहरी साम्यावस्था एवं सुव्यवस्था है। इसके प्रत्येक घटक अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण ही नहीं, बल्कि एक दूसरे से परोक्ष एवं अपरोक्ष रूप से अविच्छिन्न रूप से जुड़े हुए भी हैं। पारिस्थितिक तंत्र में इसे भोजन, ऊर्जा आदि क्रम के रूप में निरूपति एवं प्रतिपादित किया जाता है।

ग्लोबल वार्मिंग से पारिस्थितिकी तंत्र की ये संवेदनशील कडियां आपस में टूटने, बिखरने एवं दरकने लगती हैं और इसी का दुष्प्रभाव एवं दुष्परिणाम अनेक प्राकृतिक प्रकोपों, महामारी, दुर्घटनाओं आदि के रूप में सामने आता है। ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव से हिमनदों के अस्तित्व पर खतरा मंडराने लगा है। ये हिमनद जल आपूर्ति के सतत स्रोत होने के साथ-साथ जलवायु चक्र में भी अहम भूमिका का निर्वाह करते हैं। सामान्यतौर पर बर्फ के किसी विशाल भंडार को हिमनद कहा जाता है। सदियों से पृथ्वी के कुछ विशिष्ट स्थानों पर निरंतर हिमपांत होते रहने से बर्फ की जो ठोस पर्तें सतह, पर्वतों, घाटियों और समुद्रों के किनारे बन जाती हैं, इन्हें की ग्लेशियर कहा जाता है।

ग्लेशियर अपने आकार, प्रकार एवं प्रकृति के आधार पर अनेक प्रकार के होते हैं, जैसे-ग्रीनलैंड, अंटार्कटिका, पृथ्वी के ध्रुवों पर, माउंटेन ग्लेशियर्स आदि। धरती की अधिकतर बर्फ अर्थात् 3.3 करोड़ घन किलोमीटर (90 प्रतिशत बर्फ) ग्रीनलैंड एवं अंर्टाकटिका की बर्फ की चादरों में विद्यमान है। चूँकि इतनी भारी मात्रा में पानी को ये अपने भीतर रखते हैं, अत: ये समुद्र के जल-स्तर की वृद्धि पर नियंत्रण करते हैं। इन्हें छूकर बहने वाली हवा पृथ्वी का तापमान नियंत्रित करने में सहायक होती है। पृथ्वी के दोनों ध्रुव भी समस्त विश्व की जलवायु पर नियंत्रण करते हैं। ग्लोबल वार्मिंग से ये ग्लेशियर पिघलने लगते हैं। तापमान की वृद्धि से बर्फ पिघलने की दर बढ़ जाती हैं और बारिश भी तेजी से होने लगती है।

आई.पी.सी.सी. (इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज) ने गरम समुद्र के पानी के फैलाव के कारण सन् 2100 के आस-पास समुद्र के स्तर में 59 सेंटीमीटर की वृद्धि होने की बात कही है। इसके प्रभाव से कई छोटे-छोटे द्वीपों में मनुष्य का रहना मुश्किल हो जाएगा और एक करोड़ लोग, जो एशिया और अफ्रीका के निचले डेल्टा में रहते हैं, प्रभावित होंगे। इस प्रकार सर्वाधिक बर्फ वाले क्षेत्र अंटार्कटिका और ग्रीनलैंड के पिघलने से समुद्र के स्तर में 13 मीटर की बढोत्तरी होगी। समुद्र के स्तर में तीन मीटर का इजाफा होने से कई दर्जन बड़े शहर, जैसे-शंघाई, कोलकाता, मियामी और ढाका नष्ट हो जाएंगे। वैज्ञानिकों के अनुसार अगर

*5/104, विपुल खंड, गोमती नगर, लखनऊ-226 010

तापमान दो डिग्री सेल्सियस से ज्यादा बढ़ गया तो सन् 2030 या उससे पहले आर्कटिक समुद्र की बर्फ की चादर पिघल जायेगी । इससे पोलर बियर बेघर हो जाएंगे और पृथ्वी पर ऊर्जा का भार अनियमित हो जाएगा । समुद्र के गर्म पानी के कारण कोरल रीफ को भारी नुकसान होगा । इस प्रकार बाढ़ आने की संभावना बढ़ जाएगी और गरम हवाएं एवं तेज आंधियां भी चलेंगी । इसका सर्वाधिक दुष्प्रभाव भूमध्यसागर, दक्षिण-पश्चिमी अमेरिका, दक्षिणी अफ्रीका और आस्ट्रेलिया में पड़ेगा ।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण यदि तापमान 3 से 4 डिग्री बढ़ेगा तो ग्लेशियर और पहाड़ों की बर्फ पिघलेगी । इसका पानी नीचे की ओर के शहरों और कृषि भूमि की ओर बहेगा । इस प्रकार इसके दुष्प्रभाव से कैलिफोर्निया, पेरू, पाकिस्तान और चीन सबसे ज्यादा प्रभावित होंगे । यूरोप का ब्लाडीवास्केट क्षेत्र, एशिया और अमेरिका बाढ़ से प्रभावित होंगे, जिससे विश्व में खाद्यान्न संकट उत्पन्न हो जाएगा । गरम हवाओं के चलने से फसलें नष्ट होंगी । तापमान में 4 से 5 डिग्री की बढ़ोत्तरी से ग्रीनहाउस गैस मीथेन का उत्सर्जन बढ़ जाएगा । इस प्रकार साइबेरिया का बर्फ का रेगिस्तान पिघलने लगेगा । दक्षिण यूरोप, उत्तरी अफ्रीका, मध्य एशिया और अन्य सब ट्रापिकल क्षेत्रों में मनुष्य, अन्य जीव-जंतुओं एवं पेड़-पौधें की कई प्रजातियां लुप्त हो जाएंगी । एंडीज, ऐल्प्स, रॉकी और माउंट एवरेस्ट जैसे शिखरों के श्वेत शुभ्र हिमनद पिघलकर बह जाएंगे ।

सर्वेक्षण एवं अध्ययन से पता चला है कि औसत वैश्विक तापमान 5 करोड़ वर्षों में सबसे अधिक स्तर पर पहुंच चुका है । आर्कटिक क्षेत्र में भी तापमान में भारी वृद्धि हुई है । इससे आर्कटिक क्षेत्र बर्फ से रहित होकर मरूस्थल में बदल जाएगी । जब 06 डिग्री सेल्सियस से ऊपर तापमान बढ़ जाएगा तो सामुद्रिक मीथेन हाइड्रेट की वजह से ग्लोबल वार्मिंग बढ़ेगी । पृथ्वी की सतह शुक्र की तरह हो सकती है, जिससे मानवीय अस्तित्व का संकट खड़ा हो जाऐगा । समुद्री जीवन पूरी तरह से समाप्त हो जाएगा । मानव को अपना अस्तित्व बचाने के लिए ऊंची पहाड़ी और ध्रुवीय प्रदेशों की ओर पलायन करने के लिए विवश और बाध्य होना पड़ेगा । 90 प्रतिशत प्रजातियां समाप्त हो जाएंगी ।

ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव धरती में किसी भी शक्तिशाली परमाणु बम के गिरने से उत्पन्न प्रभाव से किसी प्रकार कम नहीं है । हां, इसमें इतना अंतर है कि बम का प्रभाव त्वरित होता है और ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव धीरे-धीरे होता है, परंतु प्रभाव की गंभीरता दोनों में सामान है । इस भयावह परिवर्तन से झीलें गायब हो जाएंगी । आंकड़ों के अनुसार पिछले एक दशक से आर्कटिक की करीब 125 झीलें गुम हो गई हैं । इन गुम होती झीलों के पानी से झील के नीचे का मजबूत धरातल नष्ट हो रहा है । बढ़ते तापमान से न केवल बड़े ग्लेशियर पिघल रहे हैं, बल्कि पृथ्वी की सतह के अंदर की जमीन भी गल रही है । इसकी वजह से जमीन सुकड़ेगी, जिसमें बड़े गड्ढे होंगे, भूस्खलन की संभावना बढ़ेगी । इस प्रकार रेलवे ट्रैक, हाइवे और बड़ी-बड़ी इमारतों को भी काफी नुकसान होगा । ग्लेशियरों की बर्फ पिघलने से पृथ्वी पर दबाव कम होगा और पहाड़ सिकुड़ने लगेंगे । बड़े पहाड़ छोटे पहाड़ में बदल जाएंगे अर्थात् उनके आकारों में परिवर्तन होगा ।

ग्लेशियरों के गलने से चक्रवातों की संख्या में भारी इजाफा होगा । इसके प्रभाव से अत्यधिक जन-धन की क्षति होगी । अमेरिका के जंगलों में इसके दुष्परिणाम देखने में आ रहे हैं, जहाँ पिछले कई वर्षों से जंगलों में आग के मामलों में बढ़ोत्तरी आई है, विशेष रूप से मध्य यूरोप में वर्षा की कमी तथा सूखे के बढ़ते प्रभाव एवं जंगलों में आग का कारण इसी ग्लोबल वार्मिंग को माना जाता है । जंगलों में आग लगने के कारण वहाँ धुएं के गुबार से कार्बन डाई आक्साइड का उत्सर्जन बढ़ गया है । इससे पेड़-पौधों की दुर्लभ प्रजातियाँ नष्ट होने लगी हैं ।

बढ़ते तापमान से बीमारियाँ भी बढ़ने लगेंगी । सांस लेने में दिक्कत और आँखों में खुजली जैसी संभावनाएँ बढ़ सकती हैं । पिछले दो दशकों में अमेरिका में इसका प्रभाव देखने में आया है । अमेरिका में दमे और एलर्जी के मरीजों की संख्या में अतिशय वृद्धि हुई है । जीवन शैली में तेजी से आए परिवर्तन और प्रदूषण के कारण लोगों की सांस लेने की क्षमता में गिरावट दर्ज की गई है । इस प्रकार ग्लोबल वार्मिंग अनेक प्रकार की शारीरिक एवं मानसिक बीमारियों का कारण बन गई है ।

ग्लोबल वार्मिंग से न केवल मनुष्य ही प्रभावित है, बल्कि जड़ एवं जीव, सभी इसके दुष्प्रभाव से आक्रांत हैं । आज यह हमारे एवं धरती के अस्तित्व के लिए खतरा बनकर मंडरा रही है । यह मानव की बढ़ती स्वार्थपरता एवं शोषण का ही परिणाम है । वर्तमान परिस्थिति मानककृत है, अत: इसके समाधान में इंसान को ही भागीरथ प्रयास करना पड़ेगा । पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा कर पारिस्थितकतंत्र को स्वस्थ रखने में सहायक बनना होगा । उन सभी कारणों को, जो तापमान में वृद्धि करते हैं, घटाना होगा तथा इसके विपरीत तापमान को कम करने वाले कारक, जैसे-हरीतिमा संवर्द्धन आदि को बढ़ाना होगा । इन्हीं सार्थक प्रयासों में ही इसका समाधान सन्निहित है । ■

4780 HA/12—10A

राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

(क) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें

'ग' क्षेत्र

मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय, आयकर भवन, महात्मा गांधी रोड, शिलांग-793001

दिनांक 22 अगस्त, 2012 को श्री अशोक कुमार सिन्हा, भा.रा.से. मुख्य आयकर आयुक्त, शिलांग की अध्यक्षता में मुख्य आयुक्तालय, शिलांग के सम्मेलन कक्ष में संपन्न हुई। बैठक में पिछली तिमाही बैठक के कार्यवृत्त की पुष्टि की। अध्यक्ष महोदय ने सभी कार्यालय प्रमुखों/अनुभागों को अनुवर्ती कार्यवाही समय पर भेजने का निदेश दिया। उन्होंने आगे कहा कि सभी प्रभारी अधिकारी यह सुनिश्चित करें कि हिंदी कक्षाओं में नामित अधिकारी तथा कर्मचारी उपस्थित हों और कक्षा की समाप्ति पर परीक्षा में भी बैठें ताकि वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित किए गए लक्ष्य प्राप्त किए जा सकें। किसी भी स्थिति में नियम-5 या नियम 11 का उल्लंघन न हों। धारा 3(3) का अनुपालन सुनिश्चित करने और हिंदी पत्राचार के बढ़ावे पर बल दिया। उन्होंने कार्यालय में छोटी-छोटी टिप्पणियों को हिंदी में लिखने का सभी सदस्यों को निदेश दिया। हर तिमाही में कम से कम एक कार्यशाला का आयोजन किया जाना आवश्यक है।

अध्यक्ष महोदय ने कहा कि फाइलों पर छोटी-छोटी टिप्पणियां यथासंभव हिंदी में ही की जाएं। हिंदी प्रयोग को बढ़ाने के लिए सहायक निदेशक (राजभाषा) द्वारा दिए गए सुझावों पर अमल किया जाए।

आकाशवाणी, कोलकाता

केंद्र की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अप्रैल-जून 2012 की तिमाही बैठक दिनांक 22-8-2012 को उप महानिदेशक (कार्यक्रम) श्री प्रदीप कुमार मित्रा की अध्यक्षता में उनके कक्ष में आयोजित की गई। हिंदी अनुवादक श्रीमती शिखा भट्टाचार्य ने दिनांक 8-5-2012 को हुई समिति की बैठक के कार्यवृत्त को पढ़कर सुनाया, जिस पर मदवार चर्चा के उपरान्त कार्यवृत्त की पुष्टि कर दी गई। अध्यक्ष महोदय ने धारा 3(3) के अंतर्गत जारी कागजात की संख्या पर संतोष व्यक्त किया एवं आगे भी धारा 3(3) के अधीन सभी कागजातों को द्विभाषी ही जारी किए जाने का निदेश दिया। अध्यक्ष महोदय ने कंप्यूटरों पर यूनिकोड की स्थापना की स्थिति पर जानना चाहा। इस पर सहायक निदेशक श्री उत्तम चंद साह, सदस्य सचिव ने कहा कि अब तक केंद्र में 28 कम्प्यूटरों में से 10 कम्प्यूटरों पर यूनिकोड साफ्टवेयर का कार्यान्वयन कर दिया गया है। बाकि के 18 कम्प्यूटरों पर भी धीरे-धीरे कार्यान्वयन पर कार्य किया जा रहा है एवं कर्मचारीगण हिंदी में तथा द्विभाषी रूप में कुछ हद तक हिंदी में कार्यालयीन कार्य कर रहे हैं।'

सिंडीकेट बैंक, प्रधान कार्यालय, मणिपाल-576104

दिनांक 19-5-2012 को बेंगलूर में हमारे बैंक की मेजबानी में भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 132वीं तथा भारतीय रिजर्व बैंक के तत्वावधान में सरकारी क्षेत्र के बैंकों की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 129वीं बैठक संपन्न हुई। इस बैठक के प्रारंभिक सत्र की अध्यक्षता बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री मधुकांत गिरधरलाल संधवी ने की। अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने इस बात पर बल दिया कि दुनिया के हर विकसित राष्ट्र की अपनी भाषा होती है और वे सरकारी कामकाज भी उसी भाषा में करते हैं, अत: हमें भी अपनी राजभाषा हिंदी में कामकाज करना चाहिए। उन्होंने इस अवसर पर अपने चीन, जापान, कोरिया तथा फ्रांस के अनुभवों से भी सहभागियों को अवगत कराया।

4780 HA/12—10B

पावर ग्रिड कारपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड उत्तरी क्षेत्र पारेषण प्रणाली-2, जम्मू

उत्तरी क्षेत्र पारेषण प्रणाली-2, क्षेत्रीय मुख्यालय की 45वीं बैठक श्री एस.सी. सिंह, कार्यालय निदेशक की अध्यक्षता में दिनांक 28 सितम्बर, 2012 को 3.00 बजे (अपराह्न) आयोजित की गई । गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वर्ष 2012-2013 के वार्षिक कार्यक्रम पर विस्तृत चर्चा की गई एवं भारत सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने पर जोर दिया गया । इस अवसर पर सदस्य-सचिव ने समिति को अवगत कराया कि वर्ष 2012-13 का आंतरिक वार्षिक कार्यक्रम तैयार करके एवं इसके साथ ही भारत सरकार द्वारा जारी वर्ष 2012-2013 का वार्षिक कार्यक्रम भी इंटरनेट से डाउनलोड करके क्षेत्रीय मुख्यालय, जम्मू एवं इसके अधीनस्थ समस्त स्थल कार्यालयों के विभागाध्यक्षों को 18 अप्रैल, 2012 को भेज दिया है ।

'ग' क्षेत्र में मूल पत्राचार का लक्ष्य 55 प्रतिशत है जिसे प्राप्त कर लिया गया है, लेकिन फिर भी हिंदी पत्राचार बढ़ाने हेतु और प्रयास किए जा रहे हैं ।

कार्यालयीन नोटशीट केवल हिंदी में ही लिखें ताकि भारत सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्य प्राप्त किए जा सकें । हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर शत-प्रतिशत हिंदी में ही दें । हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत चलाए जाने वाले पाठयक्रमों जैसे-हिंदी प्रबोध, हिंदी प्रवीण व हिंदी प्राज्ञ कक्षाओं के लिए पात्र कार्मिकों को नामित करके हिंदी शिक्षण की उचित व्यवस्था की जा रही है । उल्लेखनीय है कि क्षे.मु. में कार्यरत लगभग **50 कार्मिकों** ने प्राज्ञ परीक्षा सफलतापूर्वक उत्तीर्ण कर ली है ।

सदस्य-सचिव द्वारा समिति को अवगत कराया गया कि दिनांक 13 जुलाई, 2012 को संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति के माननीय सदस्यों द्वारा अन्य कार्यालयों के साथ पावर ग्रिड, पावर पूलिंग स्टेशन, बनाला (कुल्लू) का भी राजभाषा संबंधी कार्यों का निरीक्षण किया गया ।

राज्य कार्यालय हैदराबाद खादी और ग्रामोद्योग आयोग पोस्ट बाक्स नं. 362, एम.जे.रोड, गांधी भवन, हैदराबाद-500 001

खादी और ग्रामोद्योग आयोग, राज्य कार्यालय, हैदराबाद की वर्ष 2012-13 की द्वितीय तिमाही की 'राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक' दिनांक 3-9-2012 पूर्वाह्न 11.00 बजे सम्पन्न हुई । राज्य निदेशक की अनुपस्थिति में बैठक की अध्यक्षता उप-निदेशक (प्र) डॉ एम.ए. खुद्दुस जी ने की ।

तिमाही रिपोर्ट की समीक्षा पर चर्चा के दौरान अध्यक्ष महोदय ने उपस्थित सभी सदस्यों को निदेश दिया कि धारा 3(3) के अन्तर्गत आने वाले सभी कागज़ातों को अवश्य रूप से द्विभाषी में ही भेजा जाए ।

मूल पत्राचार के संबंध में निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए और ज्यादा प्रयास करने की जरूरत है । इस संबंध में उन्होंने सभी उपस्थित सदस्यों को निदेश दिया कि वे इस संबंध में व्याख्या पत्र हिंदी में ही भेजा करें ।

हिंदी में लिखी जाने वाली टिप्पणियों को संख्या के संदर्भ में अध्यक्ष महोदय ने उपस्थित सभी सदस्यों को निदेश दिया कि सभी अनुभागों को नेमी टिप्पणियों की सूची हिंदी कक्ष से प्राप्त कराई गई है । अतः सभी अनुभागाध्यक्षों का यह दायित्व बनता है कि वे इनका प्रयोग कर अपने अनुभाग में लिखी जाने वाली टिप्पणियों को अधिक से अधिक हिंदी में ही लिखने का प्रयास करें ।

'ख' क्षेत्र

कार्यालय आयकर निदेशक (अन्वेषण), आयकर भवन, ऋषि नगर, लुधियाना-141001

आयकर निदेशक (अन्वे.) कार्यालय, लुधियाना प्रभार की बैठक दिनांक 27-9-2012 को अपराह्न 3.30 बजे श्री एच.एस. सोही, आयकर निदेशक (अन्वे.), लुधियाना की अध्यक्षता में उनके कक्ष में आयोजित की गई ।

अध्यक्ष महोदय ने तिमाही स्टेटमेंट्स की समीक्षा करते हुए निम्नलिखित निदेश/सुझाव दिए:-

1. भविष्य में बाहर के स्टेशनों से भी अधिकारियों को इस बैठक में शामिल होने के लिए बुलाया जाएगा ।
2. बैठक में सभी अधिकारी अपने द्वारा भेजी गई तिमाही रिपोर्ट्स की प्रतियां साथ में लाएं ।
3. पत्राचार की सही स्थिति जानने के लिए प्रेषण अनुभाग (Despatch Section) को चैक प्वाइंट बनाया जाए ।

4. कैशियर को ई-सैलरी मैनेजर की सीडी उपलब्ध करवा दी जाए ताकि कैशियर की सीट का सारा कार्य हिंदी में हो सके ।

5. फाइल कवरों पर नोटिंग से संबंधित छोटी-छोटी टिप्पणियां हिंदी में प्रिंट करवा दी जाएं ताकि सभी अधिकारी एवं कर्मचारी हिंदी में नोटिंग सहजता से कर सकें ।

6. सभी अधिकारियों के पदनाम (Designation) भी हिंदी में उपलब्ध करवाए जाएं ।

7. वार्षिक कार्यक्रम में सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों से अपेक्षा की गई है कि वे 50 प्रतिशत टिप्पणियां हिंदी में लिखें । सभी अधिकारी और कर्मचारी इस ओर विशेष रूप से ध्यान दें ।

8. लुधियाना स्थित आयकर निदेशक (अन्वे.) प्रभार के सभी कम्प्यूटरों पर हिंदी साफ्टवेयर लोड करवाया जाए और सभी अधिकारियों से इस आशय का प्रमाण--पत्र हासिल किया जाए ।

श्री एच. एस. सोही, आयकर निदेशक (अन्वे.), लुधियाना ने बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों को संबोधित करते हुए कहा कि आयकर आयुक्त, बठिण्डा में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का अध्यक्ष होने के नाते मेरा राजभाषा से गहन संबंध रहा है । आयकर आयुक्त-II, अमृतसर के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान मैंने सभी अधिकारियों को राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु गंभीरता से जुटने के लिए प्रेरित किया है । अपने दैनिक कार्य का कुछ भाग हमें राजभाषा हिंदी को भी समर्पित करना चाहिए और धीरे-धीरे हम इसके अभ्यस्त हो जाएंगे ।

कार्यालय आयकर आयुक्त (केंद्रीय), दण्डी स्वामी चौक, लुधियाना-141001

आयकर आयुक्त (केंद्रीय)कार्यालय, लुधियाना प्रभार की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 24-9-2012 को अपराह्न 5.00 बजे श्री डी.बी. गोयल, आयकर आयुक्त (केंद्रीय), लुधियाना की अध्यक्षता में उनके कक्ष में आयोजित की गई ।

आयकर आयुक्त (केंद्रीय), लुधियाना प्रभार में हिंदी पत्राचार से संबंधित चर्चा की गई । यह सूचित किया कि आयकर आयुक्त (केंद्रीय), लुधियाना प्रभार में हिंदी पत्राचार लगभग 69 प्रतिशत है । अध्यक्ष महोदय ने कहा कि सभी कार्यालयाध्यक्षों को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा हिंदी पत्राचार के लिए निर्धारित लक्ष्य प्राप्त करने के लिए ठोस कदम उठाने होंगे । अध्यक्ष महोदय ने निदेश दिया कि सभी रेंजों से तिमाही रिपोर्ट्स तिमाही समाप्ति के अगले माह की चार तारीख तक पहुँच जानी चाहिएं ।

अध्यक्ष महोदय ने निदेश दिया कि आयकर आयुक्त (केंद्रीय) कार्यालय, लुधियाना के विभिन्न अनुभागों में हिंदी पत्राचार को बढ़ाने के लिए स्टैंडर्ड प्रोफार्मा का हिंदी अनुवाद उपलब्ध करवाया जाए तथा कार्यालय के सभी कम्प्यूटरों में हिंदी का साफ्टवेयर लोड करवाया जाए । उन्होंने निदेश दिया कि वे इसे प्राथमिकता के आधार पर व्यक्तिगत रुचि लेकर करवाएं । श्री डी.बी. गोयल, आयकर आयुक्त (केंद्रीय), लुधियाना ने उपस्थित सदस्यों को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी हमारे संस्कारों में रची बसी भाषा है । हमें हिंदी को मन, वचन और कर्म से अपनाना चाहिए । यदि हम राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में देखें तो अपना दैनिक कार्य हिंदी में करते हुए हम काफी हद तक संवैधानिक अपेक्षाओं की भी पूर्ति करते हैं । हिंदी में काम करना अधिक सुविधाजनक है केवल मानसिक अवरोध को दूर करने की आवश्यकता है ।

कार्यालय कारखाना प्रबंधक, कर्षक मशीन कारखाना, नासिक रोड-422101

कर्षण मशीन कारखाना, नासिक रोड की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की दिनांक 31-3-12 को समाप्त अवधि की तिमाही बैठक दिनांक 12-6-12 को 11.30 बजे श्री अ.आ. फड़के, मुख्य कारखाना प्रबंधक की अध्यक्षता में संपन्न हुई । उन्होंने कहा कि रोजमर्रा के कार्य में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक किया जाना चाहिए । राजभाषा में कार्य करते समय सहज/सरल शब्दों का प्रयोग किया जाए ।

हम अपने दैनिक कार्यों में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग कर राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में अपना सहयोग दें तथा नियमों और आदेशों का अवश्य पालन करें । जिन अनुभागों का कार्य लक्ष्य से कम है, उन्हें हिंदी का कार्य अधिक से अधिक करके लक्ष्य प्राप्त करना चाहिए । इस कारखाना में एक हिंदी ग्रंथालय है । सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों को हिंदी ग्रंथालय का उपयोग अधिक से अधिक करना चाहिए ।

उन्होंने यह भी कहा कि जो मांग पत्र गैर तकनीकी आईटम स्वरूप के हैं, वे पूर्ण रूप से हिंदी में बनाये जाएं। इसमें जो शब्द तकनीकी हैं, उसे उसी रूप में देवनागरी में लिखें। साथ ही जो गैर तकनीकी प्रस्ताव/निविदा है उन्हें भी हिंदी में किये जाएं। प्राइम/अफ्रैस (AFRES) एवं एम एम आई एस यह जो साफ्टवेयर है, इनमें कार्य अंग्रेजी में किया जा रहा है, अतः मुख्यालय (राजभाषा) को इससे अवगत कराया जाए।

कर्षण मशीन कारखाना के कर्मचारियों को नियमित रूप से कंप्यूटर पर हिंदी कुंजीयन का प्रशिक्षण दिया जाना सुनिश्चित किया जाए। यूनिकोड के संबंध में जो भी समस्या आ रही है, उस समस्या को शीघ्रता से दूर करवाया जाए।

केंद्रीय उत्पाद तथा सीमा शुल्क के आयुक्त का कार्यालय, केंद्रीय राजस्व भवन, आर.जी. गडकरी चौक, नासिक-422 002

केंद्रीय उत्पाद तथा सीमा शुल्क, नासिक आयुक्तालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वित्तीय वर्ष 2012-13 की द्वितीय बैठक दिनांक 24-8-2012 को अपराह्न 16.00 बजे श्री ए.के. पाण्डेय, आयुक्त महोदय की अध्यक्षता में कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में संपन्न हुई।

अध्यक्ष महोदय ने दिनांक 30-6-2012 को समाप्त तिमाही अवधि की हिंदी रिपोर्टों की समीक्षा करते हुए पाया कि राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अंतर्गत 11 सामान्य आदेश द्विभाषी रूप में जारी करके इस धारा का पूर्णतः अनुपालन किया गया है और हिंदी में प्राप्त कुल 319 पत्रों का उत्तर हिंदी में देकर राजभाषा नियम 5 का भी अनुपालन किया गया है। मूल पत्राचार के संबंध में यह देखा कि अनुभागों का हिंदी पत्राचार 65% और मंडल कार्यालयों का हिंदी पत्राचार 64% रहा है। आयुक्तालय का समेकित हिंदी पत्राचार भी 64% रहा है। इस पर उन्होंने कहा कि मूल हिंदी पत्राचार का निर्धारित लक्ष्य 90% है, अतः सभी अनुभाग प्रभारी एवं मंडल प्रभारी निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति हेतु आवश्यक प्रयास करें। उन्होंने कहा कि राजभाषा विभाग द्वारा जारी "**वार्षिक-कार्यक्रम** 2012-13" का अध्ययन करते हुए अन्य मदों (Points) के निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए भी अनवरत श्रम करें।

आकाशवाणी, राजकोट

उक्त तिमाही बैठक का आयोजन दिनांक 30-8-2012 को श्री भगवान महिरचंदानी, सहायक निदेशक (कार्यक्रम) की अध्यक्षता में सुबह 11.00 बजे आयोजित की गयी।

कार्यालय का पत्राचार 83 प्रतिशत (लगभग) है। "ख" क्षेत्र के लिए पत्राचार का लक्ष्य 90 प्रतिशत है। अंतः हमें लक्ष्य प्राप्त करने के लिए और अधिक प्रयास करने होंगे। अध्यक्ष महोदय ने सभी अनुभाग अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे सहयोग करें तथा अपना पत्राचार और बढ़ायें। वर्ष 2012-13 के लिए वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों पर विस्तार से चर्चा की गयी जिसमें पत्राचार, धारा 3(3), हिंदी टिप्पणी-प्रशिक्षण, डिक्टेशन हिंदी में देना, हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में देना, फार्मस प्रारूप आदि का द्विभाषीकरण, नाम प्लेट, रबड़ की मोहरें, चार्ट आदि के द्विभाषीकरण के लक्ष्य प्राप्त करने अपेक्षित हैं।

इस प्रकार वार्षिक कार्यक्रम का वाचन तथा मुख्य मुद्दों पर अनुपालन करने के तौर तरीके पर विचार किया गया।

दूरदर्शन केंद्रः जालंधर

केंद्र की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक दिनांक 31-7-12 को उपनिदेशक (अभि.) श्री सतीश भाटिया जी की अध्यक्षता में संपन्न हुई। सर्वप्रथम पिछली बैठक के कार्यवृत्त पर चर्चा हुई। उसमें लिए गए निर्णयों पर की गई अनुवर्ती कार्रवाई के साथ कार्यवृत्त की पुष्टि की गई।

बैठक को सूचित किया गया कि जून में एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया था जिसमें स्टाफ सदस्यों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। श्री विजय शायर, कार्यक्रम निष्पादक ने सुझाव दिया अंतराक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन किया जाना चाहिए क्योंकि ऐसी प्रतियोगिताओं में मनोरंजन भी रहता है और स्टाफ सदस्यों की भागीदारी भी अधिक से अधिक होती है। श्री सतपाल ककोरिया, उपनिदेशक (प्रशा.) ने सुझाव दिया कि एक श्रुतलेख प्रतियोगिता आयोजित की जानी चाहिए। ऐसी प्रतियोगिताओं में अधिकांश स्टाफ सदस्यों के भाग लेने की संभावना ज्यादा रहती है।

बैठक में बताया गया कि हिंदी टंकण कार्य में एक रूपता लाने के लिए राजभाषा विभाग द्वारा यूनिकोड साफ्टवेयर के उपयोग पर बल दिया जा रहा है।

4780 HA/12—11A

'क' क्षेत्र

केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क आयुक्तालय, मेरठ-द्वितीय

केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क आयुक्तालय, मेरठ-द्वितीय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक (अवधि 1-4-2012 से 30-6-2012 तक दिनांक 30-8-2012 अपराह्न 4.00 बजे अपर आयुक्त (राजभाषा) श्री एस.जे.एस. काहलोन जी की अध्यक्षता में आयुक्तालय के सभाकक्ष में आयोजित की गई, पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों पर अनुवर्ती कार्यवाही की समीक्षा एवं पुष्टि की गई ।

अध्यक्ष महोदय ने निदेश दिया कि जिन मण्डलों एवं शाखाओं का पत्राचार प्रतिशत कम है वे इसे बढ़ाने का प्रयास करें ।

अध्यक्ष महोदय को बताया गया कि वर्ष 2012-13 का वार्षिक कार्यक्रम सभी मण्डलों एवं मुख्यालय की सभी शाखाओं को परिचालित कर दिया गया है ।

अध्यक्ष महोदय ने निर्देश दिया कि सभी मण्डल प्रमुख एवं शाखा प्रमुख वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयत्न करें ।

कार्यालय महाप्रबंधक (राजभाषा) पूर्व मध्य रेल, हाजीपुर

क्षेत्रीय रेल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 38वीं बैठक दि. 20-7-12 को महाप्रबंधक, पूर्व मध्य रेल, हाजीपुर श्री वरूण भरथुआर की अध्यक्षता में मुख्यालय के नए प्रशासनिक भवन स्थित सम्मेलन कक्ष में संपन्न हुई । पिछले कुछ महीनों में राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में हासिल उपलब्धियों पर खुशी व्यक्त करते हुए अध्यक्ष सह महाप्रबंधक श्री वरूण भरथुआर ने अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव में प्रथम स्थान पर आने वाले नाट्य दल के सदस्यों, क्षेत्रीय हिंदी प्रतियोगिताओं और रेलवे बोर्ड वैयक्तिक पुरस्कार योजना के अंतर्गत पुरस्कार प्राप्त विजेताओं को हार्दिक बधाई दी । उन्होंने कहा कि उनके रेल में किसी भी अधिकारी व कर्मचारी को हिंदी में काम करने में कोई कठिनाई नहीं है । राजभाषा वार्षिक कार्यक्रम की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि दिए गए लक्ष्यों के अनुसार हम सबको 'क' और 'ख' क्षेत्रों के साथ शत-प्रतिशत पत्र व्यवहार हिंदी में ही करना है । आज की तकनीकी को काफी एडवांस बताते हुए उन्होंने कहा कि अब कम्प्यूटरों में हिंदी कार्य के लिए फांट बदलने की जरूरत नहीं है बल्कि एक बटन दबाते ही हिंदी चालू और उसी बटन को पुनः दबाते ही अंग्रेजी चालू हो जाती है और यह सब संभव हुआ है यूनिकोड के माध्यम से । उन्होंने भंडार नियंत्रक श्री राजेन्द्र सिंह की तारीफ करते हुए कहा कि उन्होंने अपने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए यूनिकोड आधारित हिंदी कम्प्यूटर कार्यशाला चलवाई और स्वयं उसमें पूरे समय उपस्थित रहे । उन्होंने अन्य विभागाध्यक्षों से भी इस प्रकार की यूनिकोड आधारित कम्प्यूटर कार्यशालाएं लगवाने का आदेश दिया । इस बैठक को अपने सेवाकाल की अंतिम राजभाषा बैठक बताते हुए उन्होंने इस रेल में राजभाषा के भविष्य को उज्ज्वल बताया । राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने में सहयोग देने के लिए उन्होंने सभी को धन्यवाद दिया ।

कार्यालय आयुक्त, केंद्रीय उत्पाद, सीमा शुल्क एवं सेवाकर होशंगाबाद रोड, भोपाल

केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क, आयुक्तालय भोपाल की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 30-6-2012 को समाप्त तिमाही की बैठक आयुक्त महोदय डॉ. डी.के. वर्मा की अध्यक्षता में दिनांक 21-6-2012 पूर्वाह्न में 11 बजे आयुक्तालय के सभांकक्ष में आयोजित की गई ।

अध्यक्ष महोदय ने हिंदी पत्राचार बढ़ाने हेतु वर्ष 2011-12 में अपने कार्यालयों में किये जा रहे प्रयासों व उनकी सफलता पर चर्चा की, जिस पर अध्यक्ष महोदय द्वारा संतोष व्यक्त किया गया । साथ ही आशा व्यक्त की कि भविष्य में हिंदी के कामकाज में और सुधार होगा । वर्ष 2012-13 हेतु आयुक्तालय की शाखाओं व प्रभागीय कार्यालयों में राजभाषा हिंदी में किए जा रहे कामकाज हेतु निर्धारित वार्षिक लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु किए जा रहे प्रयासों पर निगरानी रखने के लिए आयुक्तालय की प्रत्येक पाँच शाखाओं पर एक राजपत्रित स्तर के अधिकारी को नामांकित करने व इसी प्रकार आयुक्तालय के सभी अधीनस्थ प्रभागी कार्यालयों के प्रभारी उपायुक्त/सहायक आयुक्त को भी उनके प्रभाग व रेंज कार्यालयों में राजभाषा हिंदी में किए जा रहे प्रयासों पर निगरानी रखने हेतु दो राजपत्रित स्तर के अधिकारी नामांकित कर उनसे प्रत्येक 15 दिन में हिंदी में किए जा रहे कार्यों की प्रगति रिपोर्ट प्राप्त कर हिंदी में किए जा रहे कार्यों की समीक्षा कर राजभाषा हिंदी में कामकाज करने में आने वाली कठिनाइयों का निदान करने हेतु चर्चा की गई ।

4780 HA/12—11B

(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें

'क' क्षेत्र

जयपुर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (के.का), जयपुर की 63वीं अर्द्ध वार्षिक बैठक दिनांक 31-8-2012 को अपराह्न 3.00 बजे जयपुर स्थित बी.एम.बिड़ला ऑडीटोरियम में श्री सुनील कुमार बाहरी, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.) राजस्थान जयपुर की अध्यक्षता में आयोजित की गई।

श्री सुनील कुमार बाहरी, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.) एवं अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (केंद्रीय कार्यालय), जयपुर ने अपने संबोधन के प्रारंभ में केंद्रीय कार्यालयों के उपस्थित विभागाध्यक्ष/प्रतिनिधिगण का स्वागत करते हुए कहा कि भारत सरकार की राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए इस प्रकार की बैठकें बहुत महत्व रखती हैं इसलिए कार्यालयाध्यक्ष होने के नाते हमारा उत्तरदायित्व है कि सभी कार्यालय प्रमुख स्वयं उपस्थित रहें एवं सभी सदस्य कार्यालयों के छ:माही प्रतिवेदन समीक्षा में सम्मिलित हो।

अध्यक्ष महोदय ने कहा कि कुछेक कार्यालयों द्वारा धारा 3 (3) एवं नियम 5 की अनुपालना में कठिनाई महसूस की जा रही है। यदि हम इन मदों पर ध्यान देंगे तो हिंदी के कार्य में अवश्य प्रगति होगी। उन्होंने हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने वाले कार्यालयों को पुरस्कार प्राप्त करने की बधाई दी एवं अन्य कार्यालयों से भी अनुरोध किया कि वे भी यदि हिंदी में सर्वाधिक कार्य करेंगे तो पुरस्कार अवश्य प्राप्त करेंगे।

बैठक को संबोधित करते हुए विशिष्ट अतिथि प्रधान महालेखाकार (आ.एवं रा. क्षेत्र लेखापरीक्षा) श्री राजेन्द्र चौहान ने बैठक में अच्छी उपस्थिति एवं राजभाषा हिंदी के प्रति उत्साह पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि जयपुर स्थित केंद्रीय कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग बहुत संतोषजनक है और इसे बढ़ाने हेतु सभी का सहयोग अत्यावश्यक है। साथ ही उन्होंने सर्वाधिक कार्य करने वाले कार्यालयों को बधाई दी एवं पत्रिका "हवामहल" की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाऐं दी।

आकाशवाणी, छत्तरपुर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आकाशवाणी, छत्तरपुर के (सहायक निदेशक अभि.)केंद्राध्यक्ष श्री राकेश कुमार विश्नोई की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

नराकास अध्यक्ष ने सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए आग्रह किया कि वे हिंदी की प्रगति में अधिक से अधिक पत्राचार और कार्य हिंदी में करें, और नए विभागों को नराकास में शामिल करने का सभी से अनुरोध किया, इसके उपरान्त नराकास के सचिव श्री दिनेश रजक कार्यक्रम अधिकारी ने उपस्थित सदस्यों से त्रैमासिक हिंदी की प्रगति रिपोर्ट देने का अनुरोध किया और धारा-3(3) का उल्लेख करते हए कहा कि पत्र, आदेश, कार्यालय आदेश इत्यादि सभी हिंदी में लिखें ताकि सही स्थान पर पत्र पहुंचे।

नराकास अध्यक्ष के अनुरोध पर श्री अहिरवाल जी ने सभी नराकास के सदस्यों यूनीकोड की उपयोगिता पर महत्वपूर्ण जानकारी दी जो एक कार्यशाला में तब्दील हो गई, जिसे सभी सदस्यों ने महत्वपूर्ण बातें नोट करते हुए श्री अहिरवाल जी का तालियों से स्वागत किया।

फरीदाबाद

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फरीदाबाद की वर्ष 2012-13 की दूसरी बैठक श्री आर. के. तनेजा, कार्यपालक निदेशक (वित्त), एनएचपीसी लिमिटेड एवं पीठासीन अध्यक्ष की अध्यक्षता में दिनांक 29-10-2012 को अपराह्न 3.00 बजे सम्मेलन कक्ष, प्रथम तल, एनएचपीसी लिमिटेड कार्यालय परिसर में आयोजित की गई।

बैठक के प्रारंभ में श्री अविनाश कुमार, महाप्रबंधक (मानव संसाधन), एनएचपीसी ने अपने सम्बोधन में बताया कि हमारे निगम को राजभाषा के क्षेत्र में सर्वोत्कृष्ट कार्य करने के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा लगातार तीन वर्षों से इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड जैसे सर्वोच्च पुरस्कार से सम्मानित किया जा रहा है। इस वर्ष हमारे निगम को इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड योजना के तहत

द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है। उन्होंने बताया कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फरीदाबाद की गतिविधियों को हमारे सीएमडी महोदय के मार्गदर्शन में एक नई दिशा और ऊंचाई मिलेगी ।

बैठक में पीठासीन अध्यक्ष महोदय ने सभी विजेता प्रतिभागियों को बधाई दी । उन्होंने अपने उद्‌बोधन में कहा कि मुझे इस बैठक में उपस्थित होकर बहुत ही गौरव का अनुभव हो रहा है । उन्होंने कहा कि अपने कार्यों में हिंदी का प्रयोग करना हमारा संवैधानिक एवं नैतिक दायित्व है । उन्होंने कार्यालयीन कार्यों में सरल हिंदी का प्रयोग करने का आग्रह किया । अध्यक्ष महोदय ने कहा कि नराकास की बैठकों में सभी सदस्य कार्यालय प्रमुखों/प्रतिनिधियों का उपस्थित होना अपेक्षित है तभी नराकास के माध्यम से हिंदी को सार्थक रूप में आगे बढ़ाया जा सकता है ।

बैठक में उपस्थित श्री शैलेश कुमार सिंह, उप निदेशक (कार्यान्वयन) ने हिंदी के विकास को बढ़ावा देने पर जोर देते हुए कहा कि हमें स्वेच्छा से सहज और सरल हिंदी का प्रयोग करना चाहिए । साथ ही, उन्होंने नराकास की बैठकों में सभी सदस्य कार्यालयों के प्रमुखों की उपस्थिति को अनिवार्य बताया ।

विचार विमर्श के बाद नराकास के तत्वावधान में दिनांक 15-10-2012 से 19-10-2012 तक आयोजित की गई विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के 25 विजेता प्रतिभागियों को अध्यक्ष, नराकास महोदय के कर-कमलों से पुरस्कार स्वरूप चैक एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए । इन प्रतियोगिताओं में फरीदाबाद स्थित विभिन्न सरकारी कार्यालयों, उपक्रमों व बैंकों में कार्यरत 121 कार्मिकों ने भाग लिया ।

(ग) कार्यशालाएं

'ग' क्षेत्र

मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय

आयकर भवन, महात्मा गांधी रोड, शिलांग 793001

राजभाषा के प्रचार-प्रसार तथा सरकारी कामकाज में हिंदी में कार्य को प्रोत्साहित करने हेतु मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय, शिलांग में गत 28 सितम्बर, 2012 को एक पूर्णदिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यशाला में आयकर विभाग, शिलांग क्षेत्र के कार्मिक शामिल हुए । श्री एल. आर. लाम्बा, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने कार्यशाला में संघ का राजकीय कार्य हिंदी में करने के लिए गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के बारे में विस्तार से बताया । उन्होंने सभी कर्मचारियों को हिंदी सीखने और उसका उपयोग सरकारी कार्य में करने की अपील की । उन्होंने यह भी कहा कि कार्यालय द्वारा आयोजित कार्यशालाओं का भरपूर लाभ उठाया जाना चाहिए जिससे कि कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के प्रयोग में सार्थक सुधार हो सके । श्री मनीष कुमार साह वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, ने यूनिकोड पर हिंदी कार्य करने के बारे में जानकारी दी ।

सीमा शुल्क आयुक्त (निवारक) का कार्यालय, 100 महात्मा गांधी रोड, पूर्वोत्तर क्षेत्र, शिलांग-793001

आयुक्त कार्यालय, पूर्वोत्तर क्षेत्र, शिलांग में दिनांक 9-8-2012 को एक दिवसीय 'राजभाषा कार्यशाला' का आयोजन किया गया ।

कार्यशाला दो सत्र में आयोजित किया गया । प्रथम सत्र का विषय था- ''भारत सरकार की राजभाषा नीति'' । आमंत्रित व्याख्याता श्री निलेश इंगले ने विस्तार पूर्वक विषय पर प्रकाश डाला । उन्होंने भारत सरकार की राजभाषा नीति, राजभाषा से संबंधित नियम, धारा 3(3) में आने वाले दस्तावेजों को विभिन्न रोचक प्रसंगों के साथ समझाया ।

दूसरे सत्र का विषय था ''हिंदी में टिप्पणी लेखन व प्रारूपण'', जिस पर आमंत्रित व्याख्याता श्री अमर गुरूङ ने विस्तार पूर्वक चर्चा-परिचर्चा की । उन्होंने टिप्पणी और प्रारूपण क्या है, कैसे लिखा जाता है, आदि पर उदाहरण सहित व्याख्यान दिया । साथ में कई रोचक प्रसंगों का भी जिक्र किया ।

अंत में श्री अजीत मोहन पॉल, अधीक्षक, सीमा शुल्क (निवारक), शिलांग ने इस तरह का कार्यशाला से राजभाषा

हिंदी के प्रति जागरुकता आने की बातें कही । वही श्री गाईगोंदिन पानमै आयुक्त , सीमा शुल्क (निवारक), शिलांग ने आगे भी इस तरह के कार्यशाला आयोजन करने पर जोर दिया । साथ ही सभी अधिकारियों से जितना हो सके राजभाषा हिंदी में दैनिक कार्य करने को कहा ।

भारतीय विमान पत्तन प्राधिकरण दक्षिण क्षेत्र, चेन्नई हवाई अड्डा, चेन्नई-600 027

अप्रैल-जून, 2012 तिमाही में दोंनो प्रभागों के अधिकारी वर्ग हेतु दिनांक 31-5-2012 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन क्षेत्रीय मुख्यालय में सम्पन्न हुआ । महाप्रबंधक (मानव संसाधन), विमानपत्तन निदेशक एवं क्षेत्रीय कार्यपालक निदेशक द्वारा सभी अधिकारियों से अनुरोध किया गया कि हिंदी कार्यशाला के बाद राजभाषा का प्रयोग और अधिक करने की आवश्यकता है ।

हिंदी कार्यशाला के उद्धाटन के बाद पहला व्याख्यान "भारत सरकार की राजभाषा नीति" पर आरम्भ हुआ । व्याख्याता के रूप में डॉ. वी.वी. कुचरू, मुख्य प्रबंधक सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, चेन्नई उपस्थित थे । उनके द्वारा उक्त विषय पर ज्ञानवर्द्धक व्याख्यान दिया गया । उक्त व्याख्यान के बाद "प्रशासनिक पत्राचार में हिंदी का प्रयोग एवं कठिनाईयां" विषय पर व्याख्यान दिया गया । सम्बन्धित प्रतिभागियों द्वारा पूछे गए प्रश्नों का सन्तोषजनक उत्तर व्याख्याता द्वारा दिया गया । व्याख्यान के अन्त में सभी प्रतिभागियों द्वारा व्याख्याता द्वारा दिए गए व्याख्यानों की सराहना की गई । इस कार्यशाला में 25 अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया गया ।

राष्ट्रीय पटसन एवं समवर्गी रेशा प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् 12, रीजेन्ट पार्क, कोलकाता-700040

राष्ट्रीय पटसन एवं समवर्गी रेशा प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् कोलकाता में दिनांक 21-7-2012 को पूर्वाह्न 11.00 बजे से 1.00 बजे तक संस्थान के हिंदी सेल के प्रभारी अधिकारी श्री आर.डी. शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) की अध्यक्षता में "हिंदी टिप्पण एवं मसौदा लेखन" विषय पर एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यशाला में तकनीकी एवं प्रशासनिक वर्ग के कुल मिलाकर 21 प्रतिभागियों ने भाग लिया ।

श्रीमती अर्पिता राय, हिंदी प्राध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, ने संस्थान के नवागत कर्मचारियों की हिंदी ज्ञान की स्थिति का जायजा लेते हुए उन्हें भारत सरकार की द्विभाषी नीति से अवगत करते हुए भाषा विज्ञान की प्रारंभिक जानकारी दी ।

एन एच पी सी लि. कार्यालय कार्यपालक निदेशक (क्षेत्र-III) क्षेत्रीय कार्यालय, ब्लाक-डीपी, प्लाट नं. 3, सैक्टर-V, साल्ट लेक सिटी, कोलकाता-91

दिनांक 13-9-2012 को राजभाषा अनुभाग, क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस कार्याशाला का विषय-पत्राचार के विभिन्न रूप, भारत सरकार की राजभाषा नीति व हिंदी में टिप्पण व आलेखन का अभ्यास रखा गया था । इस विषय पर व्याख्यान व अभ्यास कार्य करवाए जाने के लिए केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, कोलकाता शाखा से डॉ. आर. बी. सिंह, सहायक निदेशक को आमंत्रित किया गया था ।

स्वागत भाषण में श्री अजय कुमार बक्सी, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने कहा कि इस हिंदी कार्यशाला का आयोजन का उद्देश्य है- कार्यालय में हिंदी के प्रयोग के में आ रही व्यावहारिक कठिनाईयों को दूर किए जाने के पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई और समाधान निकाला गया । आगे उन्होंने डॉ. सिंह का परिचय देते हुए कहा कि डॉ. सिंह 27 वर्षों से राजभाषा कार्यान्वयन/केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो से जुड़े हुए हैं । उसके बाद उन्होंने मुख्य विषय हिंदी पत्राचार की परिभाषा बतलाई फिर पत्राचार के विभिन्न रूपों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी । उसके बाद राजभाषा नीति को सरलता से समझने के लिए 10 चरण बतलाते हुए प्रत्येक चरण की विस्तार पूर्वक व्याख्या तथा हिंदी में टिप्पण व आलेखन का अभ्यास करवाया गया ।

इस कार्यशाला में 15 प्रतिभागियों ने भाग लिया ।

नराकास, दावणगेरे-577006

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दावणगेरे के सदस्य कार्यालयों में कार्यरत अधिकारी/कर्मचारियों के लिए राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के संबंध में जानकारी देने के लिए दिनांक 7-6-2012 को एक-दिवसीय सामान्य हिंदी

4780 HA/12—12A

कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यशाला उक्त दिनांक के पूर्वाह्न 10.00 बजे से अपराह्न 5.00 बजे तक संपन्न हुई । इस कार्यशाला में सदस्य कार्यालयों के कुल 8 अधिकारी/कर्मचारी भाग लिए थे ।

कार्यशाला उक्त दिन दो सत्र में चलाई गई । पहला सत्र पूर्वाह्न 10.00 बजे से 1.00 बजे तक एवं दूसरा सत्र अपराह्न 2.00 बजे से 5.00 बजे तक रही ।

पहले सत्र में बुनियादी हिंदी, हिंदी व्याकरण (लिंग, वचन एवं कारक), वार्षिक कार्यक्रम के साथ राजभाषा नीति (राजभाषा के संबंध में संवैधानिक व्यवस्थाएं, राजभाषा अधिनियम 1963, राजभाषा नियम 1976) में राजभाषा से जुडे सभी पहलुओं पर संक्षिप्त रूप में व्याख्यान दिए इस कार्यालय के कनिष्ठ हिंदी अनुवादक श्री सी.एन.शेखर जी ।

दूसरे सत्र में कार्यालय के सहायक निदेशक (राजभाषा) एवं सदस्य सचिव, न रा का स, श्री रमेश वी कामत जी ने हिंदी में टिप्पण लेखन और मसौदा लेखन के बारे में विस्तृत रूप में व्याख्यान दिए ।

महाप्रबंधक दूरसंचार का कार्यालय, बी.एस. एन.एल. दावणगेरे

इस वर्ष की पहली एक-दिवसीय सामान्य हिंदी कार्यशाला (कर्मचारियों के लिए) दिनांक 20-7-2012 को सम्मेलन कक्ष, महाप्रबंधक दूरसंचार का कार्यालय, दावणगेरे में आयोजित की गई ।

इस कार्यशाला में स्थानीय कार्यालयों के कुल 7 कर्मचारी भाग लिए थे । कार्यशाला उक्त दिन 10.00 बजे से अपराह्न 1.00 बजे तक फिर अपराह्न 2.00 बजे से शाम 5.00 बजे तक आयोजित की गई । कार्यशाला में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा नियत पाठय्-विवरण के अनुसार व्याख्यान दिया गया ।

इस बार पहली बार प्रोजेक्टर का इस्तेमाल कर पावर पाइंट के जरिये कार्यशाला चलाई गई । कर्मचारी इससे बहुत खुश थे । सबने बताया कि इस विजुअल कार्यशाला द्वारा व्याख्यान देने के कारण वे और भी बेहतरीन रूप से हिंदी के बारे में जानकारी पाई ।

कार्यशाला का उद्घाटन श्री आर. बी. कोण्णुर, उप मंडल अभियंता (प्रचालन) ने किया ।

इससे बुनियादी हिंदी, राजभाषा हिंदी के बारे में संवैधानिक व्यवस्थाएं, राजभाषा अधिनियम 1963, राजभाषा नियम 1976, वार्षिक कार्यक्रम, मानक हिंदी वर्णमाला सहित हिंदी व्याकरण के बारे में पहले सत्र में व्याख्यान दिया गया । दूसरा सत्र में हिंदी नेमी-कार्यालयीन टिप्पणियां और हिंदी में आलेखन के बारे में व्याख्यान दिया गया । कार्यशाला के अंतिम आधे घंटे में हिंदी सॉफ्टवयर लीप-ऑफीस 2000 के इस्तेमाल के बारे में बताया गया ।

'ख' क्षेत्र

रक्षा लेखा विभाग कार्यालय, वित्त एवं लेखा नियंत्रक (फै.) लेखा कार्यालय, गोला बारूद फैक्टरी, खड़की, पूणे-411 003

लेखा कार्यालय, गोला बारूद फैक्टरी, खड़की, पुणे में राजभाषा कार्यान्वयन को सुदृढ़ करने, सरकारी कामकाज मूल रूप से हिंदी में करने में कर्मचारियों की झिझक को दूर करने तथा टिप्पणी, प्रारूप/मसौदा लेखन, पत्र-लेखन एवं अधिक से अधिक कार्यालयीन कामकाज कंप्यूटर पर करने के उद्देश्य से दिनांक 23-7-2012 से 25-9-2012 के दौरान सातवीं हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यशाला में 19 कर्मचारियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया । कार्यशाला में व्याख्यान देने हेतु पुणे स्थित केन्द्र सरकार के अन्य कार्यालयों से भी व्याख्याताओं को आमंत्रित किया गया था । इस दौरान राजभाषा संबंधी विभिन्न विषयों पर व्याख्यान आयोजित किए गए, जिनमें में से मुख्य हैं :- संघ की राजभाषा नीति, राजभाषा से संबंधित महत्वपूर्ण आदेश, सामान्य टिप्पणियाँ/मसौदा लेखन, बिलों के भुगतान तथा लेखा आपत्तियाँ, कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य, पत्राचार के विविध रूप, हिंदी-अंग्रेजी अंग्रेजी-हिंदी अनुवाद, यात्रा संबंधी मामले एवं बैठकें आयोजित करना इत्यादि । कार्यशाला के समापन पर सभी प्रतिभागियों से कार्यशाला की उपयोगिता एवं इसके उद्देश्य प्राप्ति पर लिखित प्रतिक्रिया ली गई । अधिकांश प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाएं उत्साहवर्धक थी, जिनमें यह उल्लेख था कि इस प्रकार कार्यशालाएं और अधिक समय के लिए आयोजित की जाएं । कार्यशाला के समापन पर सभी प्रतियोगियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए ।

आकाशवाणी : भुज-कच्छ

दिनांक 31-8-12 को इस कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारी के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यशाला का शुभारम्भ

4780 HA/12—12B

करते हुए केंद्र अध्यक्ष ने वक्ता एवम् सभी सदस्यों का स्वागत किया और वक्ता श्री का परिचय करवाया ।

इस कार्यशाला में श्री सुरेन्द्र सिंह राठोड, हिंदी शिक्षक, केंद्रीय विद्यालय वायुसेना, भुज को व्याख्यान के तौर पर आमंत्रित किया गया था । वक्ता को "राजभाषा में पत्राचार और उपलब्ध सहायता सामग्री" पर वक्तव्य दिया गया । श्री राठोड ने कार्यालय में राजभाषा में पत्राचार पर विस्तृत जानकारी दी और कार्यालय में हिंदी सहायता सामग्री के बारे में भी विस्तृत जानकारी दी ।

इस कार्याशाला में महत्वपूर्ण जानकारी प्रशिक्षार्थिओं को दी गई । इस कार्यशाला में कार्यालय के विविध अनुभागों से कुल मिलाकर 15 सदस्यों ने हिस्सा लिया था ।

राष्ट्रीय औषधीय शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (नाईपर) एस.ए.एस. नगर

दिनांक 22 जून, 2012 को नाईपर में राजभाषा में कार्य करने के प्रति कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस अवसर पर संस्थान के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों ने भाग लिया । हिंदी कार्यशाला के दौरान अंग्रेजी टिप्पणियों का हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । इस प्रतियोगिता में लगभग 35 से 40 प्रतिभागी सम्मिलित हुए ।

कार्यशाला के समापन अवसर पर कार्यकारी हिंदी अधिकारी ने कार्यशाला में उपस्थित नाईपर वासियों का आभार जताया और कहा कि हमको अपने दैनिक व्यवहार में हिंदी को अपनाना चाहिए और अधिक से अधिक कार्य चाहे वह कम्प्यूटर पर हो या हाथों से हमें हिंदी में करना चाहिए तभी संस्थान में हिंदी प्रगति के पथ पर चलेगी । कार्यशाला में अधिकारीगण, कर्मचारीगण, तथा विद्यार्थीगण सहित लगभग 35 लोग उपस्थित थे ।

आकाशवाणी, नागपुर

आकाशवाणी नागपुर सभाकक्ष, में गुरुवार, दिनांक 6 सितम्बर, 2012 को अपराह्न 3:30 बजे "हिंदी कार्यशाला" का आयोजन किया गया । आकाशवाणी नागपुर की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित इस कार्य कार्यशाला का शुभारंभ, राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री रमेश घरडे, निदेशक (अभियांत्रिकी) की उपस्थिति में संपन्न हुआ ।

कार्यशाला में आमंत्रित वक्ता, आयकर कार्यालय, सिविल लाईन्स, नागपुर के सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री रवीन्द्र वसंत देवघरे थे ।

कार्यशाला का विषय था "हिंदी मानक वर्तनी बोध" इस विषय पर अतिथि ने बहुमूल्य मार्गदर्शन दिया । इस विषय पर सविस्तार चर्चा करके बड़े रोचक ढंग से वर्तनी ज्ञान करवाया । जो सभी के लिए ज्ञानवर्धक व उपयोगी रहा ।

दूरदर्शन केंद्र : जालंधर

दिनांक 13 जून 2012 को दूरदर्शन केंद्र, जालंधर में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस कार्यशाला में केंद्र के विभिन्न अनुभागों से 35 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया कार्यशाला में मुख्यवक्ता के तौर पर डॉ. श्री प्रेम शर्मा, निदेशक, भाषा व संस्कृति विभाग, शिमला उपस्थित हुए । कार्यशाला की अध्यक्षता श्री ओम गौरी दत्त शर्मा, निदेशक, दूरदर्शन, केंद्र, जालंधर ने की ।

श्री प्रेम शर्मा, निदेशक, भाषा व संस्कृति विभाग, शिमला ने कार्यशाला हेतु मुख्य रूप से निम्नलिखित दो विषयों का चुनाव किया :- (1) राजभाषा हिंदी का भविष्य व (2) भारतीय संस्कृति

दोनों की विषयों के प्रति गहन अभिरुचि पैदा करते हुए उन्होंने प्रतिभागियों को अभिभूत किया । वैदिककाल से लेकर अद्यतन विषयों को छूते हुए उन्होंने भाषा के साथ-साथ भारतीय संस्कृति के मूलाधारों की चर्चा की ।

क क्षेत्र

रेल मंत्रालय, रेलवे बोर्ड, नई दिल्ली

18-7-2012 को रेल मंत्रालय, रेल भवन के कमेटी रूम (342-ए) में उच्च अधिकारियों के लिए एक विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस कार्यशाला में रेलवे बोर्ड के अपर सदस्यों, सलाहकारों, कार्यपालक निदेशकों तथा निदेशकों जैसे कई उच्चाधिकारियों ने भाग लिया । इस कार्यशाला में व्याख्यान देने के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. पूरन चंद टंडन तथा एनआईसी के वरिष्ठ तकनीकी निदेशक, एवं वर्तमान में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय में भाषायी कम्प्यूटरीकरण के नोडल अधिकारी श्री केवल कृष्ण को आमंत्रित किया गया था, जिन्होंने क्रमशः "राजभाषा कार्यान्वयन में एक्ज़ीक्यूटिव की भूमिका तथा

हिंदी कम्प्यूटिंग एवं ई-मेल" विषय पर व्याख्यान दिए और प्रोजेक्टर पर उनका प्रदर्शन भी किया, जिसे सभी प्रतिभागी अधिकारियों ने ध्यानमग्न होकर सुना और उस पर विचार-विमर्श भी किया। डॉ. टंडन ने संघ सरकार की राजभाषा नीति का उल्लेख करते हुए प्रतिभागी अधिकारियों एवं उनके अधीनस्थ अधिकारियों से हिंदी में काम करने एवं करवाने का आग्रह किया, जबकि श्री केवल कृष्ण जी ने कम्प्यूटर पर हिंदी में काम करने के लिए अधिकारियों को प्रेरित किया और अधिकारियों द्वारा इस संबंध में उठाई गई समस्याओं का निराकरण भी किया।

आकाशवाणी, नई दिल्ली

आकाशवाणी, नई दिल्ली केंद्र पर दिनांक 28-8-2012 को 'राजभाषा अनुपालन विषय' पर एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। विषय विशेषज्ञ के रूप में श्री प्रेमसिंह, पूर्व संयुक्त निदेशक (राजभाषा) ने विस्तारपूर्वक राजभाषा नीति और इसके अनुपालन पर प्रकाश डाला।

कार्यशाला की औपचारिक शुरूआत करते हुए केंद्र निदेशक महोदय श्री लक्ष्मीशंकर वाजपेयी ने कहा कि दिल्ली 'क' क्षेत्र में होने के नाते शतप्रतिशत कार्य हिंदी में करने की अपेक्षा की जाती है। उन्होंने संकल्प व्यक्त करते हुए सभी से अपना कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने को वरियता के रूप में अपनाने को कहा ताकि राजभाषा की अनुपालना सुनिश्चित हो सके।

श्री प्रेमसिंह ने राजभाषा हिंदी को जनभाषा कहते हुए कहा कि मध्यकाल से भी पूर्व हिंदी आमजन और शासकों के बीच कड़ी का काम करती है। उन्होंने उदाहरण देते हुए बताया कि अकबर महान ने अपने मंत्रियों को नीतिगत परिपत्र हिंदी भाषा में जारी किया था जिसकी मूल प्रति बीकानेर (राजस्थान) के अभिलेखागार में मौजूद है। उन्होंने धार नगरी के उस दौरान के शिल्पियों द्वारा प्रचार के रूप में प्रयुक्त हिंदी का सुन्दर उदाहरण दिया जिसमें उन्होंने अपने द्वारा तैयार किए गए कपड़े की खूबी बताते हुए इसके प्रति महिलाओं के आकर्ष में अनुपमता की बात कही गई थी। अन्य कई उदाहरण देते हुए श्री सिंह ने हिंदी के व्यवहारिक पक्ष पर भी सुन्दर व्याख्यान दिया। प्रतिभोगियों ने कार्यशाला को रोचक व काफी ज्ञान प्रद बताया। कार्यशाला में 21 अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे। कार्यशाला का समन्वय व संचालन सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री डी. डी. मीना ने किया।

राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान 5, सीरी इंस्टीट्यूशनल एरिया, हौज खास, नई दिल्ली-110016

संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए 7 सितम्बर, 2012 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला संस्थान में 1 से 14 सितम्बर 2012 तक आयोजित हिंदी पखवाड़े की एक गतिविधि के रूप में आयोजित की गई।

इस कार्यशाला का उद्देश्य संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों को राजभाषा नियमों की जानकारी देना और सरकारी कामकाज हिंदी में करने में उनके सामने आने वाली कठिनाइयों को दूर करना था। इस कार्यशाला में संस्थान के कुल 14 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

इस कार्यशाला का उद्घाटन डा. अशोक कुमार, अपर निदेशक (एमसी) ने किया। उन्होंने उपस्थित सभी सहभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि हमारे संस्थान में पर्याप्त कार्य हिंदी में हो रहा है और यह कार्यशाला इसे और बढ़ावा देने में सहायक होगी। उन्होंने आशा व्यक्त की कि कार्यशाला सहभागियों के लिए उपयोगी रहेगी और हिंदी में कार्य करने में उनके सामने आने वाली कठिनाइयों का समाधान होगा।

कार्यशाला के विषय को भाषण एवं अभ्यास पद्धति द्वारा प्रतिपादित किया गया। श्रीमती विजय कौशिक वरिष्ठ हिंदी अनुवादक ने सहभागियों को राजभाषा के मुख्य नियमों की जानकारी दी और शब्दों तथा टिप्पणियों पर विचार-विमर्श करते हुए सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने की प्रेरणा दी। सहभागियों को हिंदी में आवेदन और टिप्पणियां लिखने का अभ्यास कराया गया। उन्हें राजभाषा नियमों से संबंधित सामग्री भी दी गई।

बुनियादी बीच प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केंद्र, कार्यालय केंद्रीय रेशम बोर्ड, मोतीनगर, बालाघाट (म.प्र.)-481001

दिनांक 28-9-2012 को चालू तिमाही की हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें श्री देबाशीष दास, वैज्ञानिक-डी एवं अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा अपने वक्तव्य में कहा गया कि यदि सच्चे अर्थों में हम राष्ट्रभक्ति से ओतपोत रहना चाहते हैं तो हमें अपने जीवन के सभी कार्यों में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित कर लेना चाहिए, क्योंकि हमारा देश ग्रामीण जनता के मन में बसता है, जो अंग्रेजी भाषा से अनभिज्ञ हैं। चल चित्र आदि के

चित्र समाचार

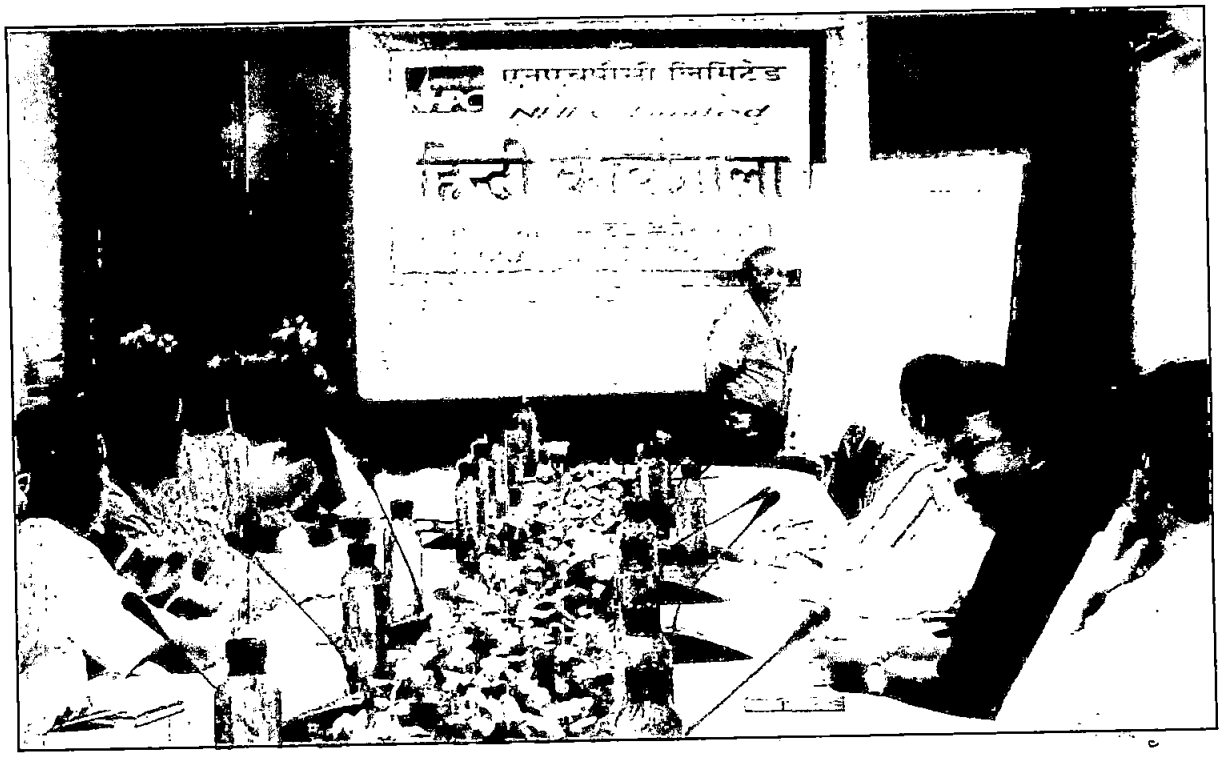

एनएचपीसी लि., कोलकाता में आयोजित हिंदी कार्यशाला का एक दृश्य

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, क्षेत्रीय मुख्यालय, चेन्नई में आयोजित हिंदी कार्यशाला का एक दृश्य

दि न्यू इंडिया एश्योरेंस कं. लि., क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना द्वारा आयोजित हिंदी दिवस समारोह-2012 में पुरस्कृत करते हुए मुख्य क्षेत्रीय प्रबंधक डॉ. एस.एल. खोसा, साथ में है–श्री आनंद यादव, क्षेत्रीय प्रबंधक एवं राजभाषा अधिकारी श्री अनिल गुप्ता ।

राजभाषा पखवाड़ा-2012 पुरस्कार वितरण समारोह में श्री राजेन्द्र जैन, मंडल रेल प्रबंधक उ.प.रे. जोधपुर पुरस्कृत करते हुए । वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी श्री रेवती लाल मीणा, सहभागिता निभाते हुए ।

सिंडीकेट बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, गाजियाबाद द्वारा आयोजित हिंदी दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह में संबोधन करते हुए एक अधिकारी ।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना द्वारा आयोजित हिंदी दिवस समारोह की एक झलक ।

कार्यालय में वर्ष के दौरान राजभाषा हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने वाले वेतन लेखा परीक्षा अनुभाग के अधिकारियों/कर्मचारियों को चल शील्ड प्रदान करते हुए वित्त एवं लेखा नियंत्रक (फै.) महोदय ।

रेलवे स्टाफ कालेज, वडोदरा में दिनांक 28-09-2012 को राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम में हिंदी विचार गोष्ठी में विजेता अधिकारी श्री आर. सुब्रमनियम, सहायक प्रोफेसर (कार्मिक प्रबंधन) को पुरस्कृत करते हुए उपमहानिदेशक महोदय श्री के.एल. दीक्षित ।

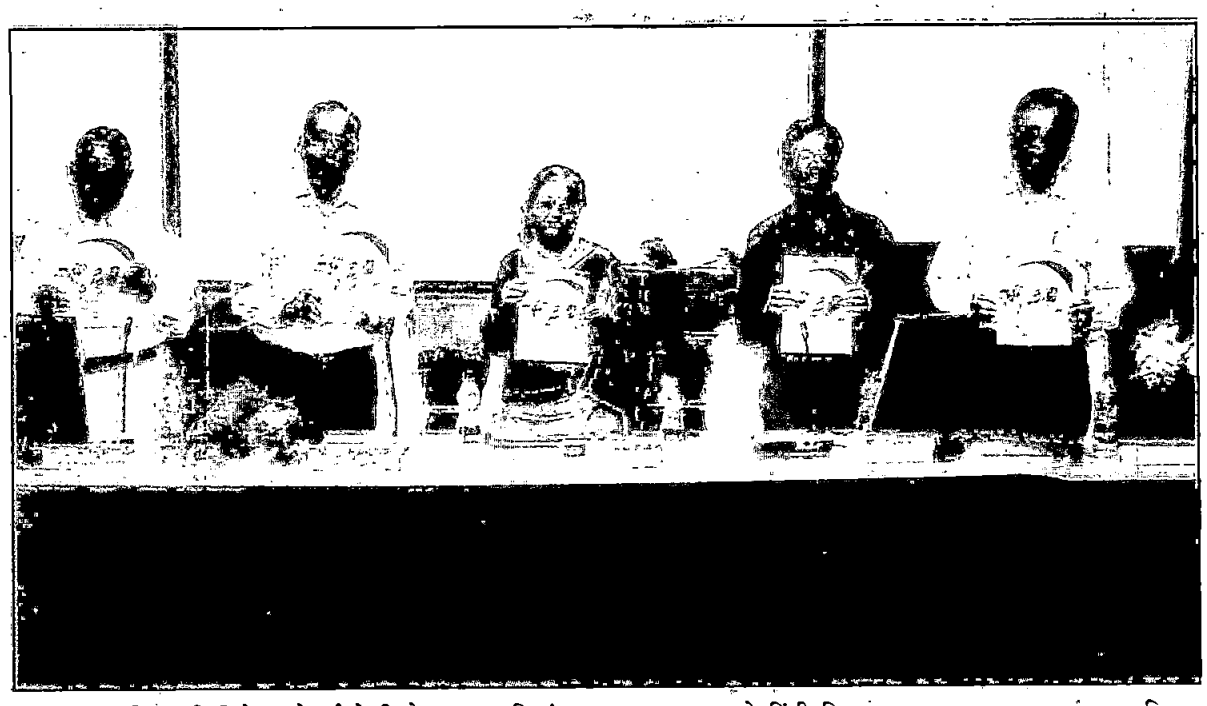

भारत संचार निगम लिमिटेड, चेन्नई टेलीफोन द्वारा दिनांक 25-09-2012 को हिंदी दिवस मनाया गया । इस पुरस्कार वितरण समारोह के सुअवसर पर चेन्नई टेलीफोन की गृह पत्रिका 'चेन्नई वाणी' के 16वें अंक का विमोचन 'विश्व के त्योहार' विशेषांक के तौर पर किया गया । इस दौरान मंच पर उपस्थित चेन्नई टेलीफोन के अधिकारी, बायीं ओर से :–
1. श्री ए. बालसुब्रमणियन, मुख्य महाप्रबंधक मनोनीत, 2. श्री ए. सुब्रमणियन, मुख्य महाप्रबंधक,
3 मुख्य अतिथि–डॉ. पी.सी. कोकिला, सह प्राध्यापिका एवं विभागाध्यक्षा, हिंदी विभाग, प्रेसिडेंसी महाविद्यालय, चेन्नई,
4. श्री वी. प्रभाकर, महाप्रबंधक (एच आर/प्रशासन) एवं 5. श्री शशांक भालेकर, अपर महाप्रबंधक (एच आर/प्रशासन)

भारत संचार निगम लिमिटेड, मदुरै एस एस ए की वार्षिक राजभाषा गृह पत्रिका 'संचार सुरभि' के चौदहवें अंक का विमोचन करती हुई श्रीमती एस.ई. राजम, महाप्रबंधक, भा सं. नि. लि., मदुरै ।

भारत संचार निगम लि., आलप्पुषा द्वारा आयोजित हिंदी पखवाड़ा समारोह का उद्घाटन करते हुए ।

सीमा शुल्क आयुक्त (नि.) कार्यालय पूर्वोत्तर क्षेत्र, शिलांग द्वारा आयोजित राजभाषा कार्यशाला में भाग लेते हुए श्री गाईगोंदिन पानमै (बीच में), आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक) पूर्वोत्तर क्षेत्र, शिलांग व अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण ।

14 सितम्बर, 2012 को हिंदी पखवाड़ा के समापन कार्यक्रम पर मंचासीन (बाएं से) प्रो. यू. सी. बैनर्जी, संकायाध्यक्ष, प्रो. के.के. भूटानी, कार्यवाहक निदेशक, श्री आशीष गोयल, निदेशक, पत्र सूचना कार्यालय, चण्डीगढ़ तथा कुलसचिव विंग कमांडर पी.जे.पी. सिंह वड़ैच (सेवानिवृत्त) ।

नराकास (उपक्रम) कोलकाता की तिमाही बैठक में पुरस्कृत करते हुए अधिकारीगण ।

हिंदी दिवस के अवसर पर जारी संदेश का विमोचन करते हुए पश्चिम रेलवे/भावनगर मंडल के मरेप्र श्री सोनवीर सिंह, उनकी बांई ओर अमरेप्र श्री अरूण कुमार साथ में राधि श्री रमेश कुमार तथा मुचिधी डॉ. राठौर ।

भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय (प.ब.) कोलकाता द्वारा आयोजित हिंदी सप्ताह उद्घाटन समारोह की एक झलक ।

माध्यम से वे अच्छी तरह से हिंदी को समझ रहे हैं एवं पढ़ना भी जान रहे हैं, जिससे वे अपना विकास करेंगे तो स्वाभाविक है हमारा देश भी विकसित अर्थव्यवस्था की ओर तेजी से अग्रसर होगा । इस अवस पर केंद्र के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी भाषा की व्याकरण तथा पत्र व्यवहार के लिए छोटे-छोटे शब्दों/वाक्यों का प्रयोग करवाया गया तथा उन्हें वाक्य रचना संबंधी होने वाली त्रुटियों से अवगत भी करवाया गया ।

एन एच पी सी लिमिटेड, ऑफिस कंप्लेक्स, सैक्टर-33, फरीदाबाद

22-8-2012 को कार्यपालक सचिवों, विशेष निजी सचिवों तथा निजी सचिवों के लिए एक हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई । इस कार्यशाला में विभिन्न विभागों के 26 कार्मिकों ने भाग लिया ।

कार्यशाला के पहले दो सत्रों में प्रतिभागियों को विभिन्न हिंदी सॉफ्टवेयरों और उसके प्रयोग से संबंधित अद्यतन जानकारी देने के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के वरिष्ठ तकनीकी निदेशक (राजभाषा) श्री केवल कृष्ण को आमंत्रित किया गया था । उन्होंने प्रतिभागियों को अधुनातन हिंदी सॉफ्टवेयरों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी और उनके व्यावहारिक प्रयोग के बारे में बताया । उन्होंने राजभाषा विभाग द्वारा विकसित किए गए मंत्रा एवं श्रुतलेखन हिंदी सॉफ्टवेयर के बारे में भी जानकारी दी । उन्होंने यूनिकोड की उपयोगिता के बारे में बताते हुए कहा कि हम यूनिकोड के माध्यम से हिंदी की टाइपिंग न जानते हुए भी कम्प्यूटर पर अंग्रेजी टाइपिंग के द्वारा हिंदी में कर सकते हैं । उन्होंने प्रतिभागियों को इन सॉफ्टवेयरों के प्रयोग का अभ्यास भी कराया तथा कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य करने में आने वाली उनकी शंकाओं तथा समस्याओं का समाधान भी किया ।

भोजन के बाद के सत्र में विज्ञान प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार से सेवानिवृत संयुक्त निदेशक (राजभाषा) श्री प्रेम सिंह ने प्रतिभागियों को "भारत सरकार की राजभाषा नीति व उसका कार्यान्वयन" के बारे में जानकारी दी । साथ ही उन्होंने राजभाषा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमें सकारात्मक सोच के साथ सरल शब्दों का प्रयोग करते हुए राजभाषा को बढ़ावा देना चाहिए । अपनी भाषा में दूसरी भाषा के प्रचालित शब्दों का समावेश भी कर लेना चाहिए ।

इस हिंदी कार्यशाला के अंतिम सत्र में डॉ. राजबीर सिंह प्रमुख (राजभाषा) ने उपस्थित प्रतिभागियों को मानक हिंदी वर्तनी एवं हिंदी टिप्पण-प्रारूप के बारे में बताते हुए अभ्यास कराया ।

(घ) हिंदी दिवस

'ग' क्षेत्र

कार्यालय पुलिस महानिरीक्षक, पूर्वोत्तर सेक्टर, केरिपुबल, शिलांग

कार्यालय पुलिस महानिरीक्षक, पूर्वोत्तर सेक्टर मुख्यालय/ शिलांग में सेक्टर मुख्यालय एवं 67 बटालियन, केरिपुबल, का संयुक्त रूप में दिनांक 14 सितम्बर को पूर्वाह्न 11.00 बजे श्री एस.के.टिग्गा, पुलिस उप महानिरीक्षक, ग्रुप केंद्र सिलचर, (पूर्वोत्तर सेक्टर के उप महानिरीक्षक प्रशा. का अतिरिक्त प्रभार) की अध्यक्षता में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन बड़ी धूम-धाम से किया गया ।

समारोह में 67 बटालियन के कमांडेंट, श्री मोहम्मद इमरान मलिक ने भी हिंदी की उपयोगिता पर अपना ओजमयी ब्याख्यान दिया । इस अवसर पर हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं यथा-पांच दिवसीय हिंदी कार्यशाला, हिंदी टिप्पण/आलेखन, हिंदी टंकण एवं हिंदी व्यवहार प्रतियोगिता के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विजेता कार्मिकों को पुरस्कृत व प्रशंसा प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया ।

दक्षिण पूर्व रेलवे महाप्रबंधक का कार्यालय (राजभाषा) गार्डनरीच, कोलकाता-43

हिंदी पखवाड़ा के दौरान पांच प्रतियोगिताएं (हिंदी निबंध, टिप्पण एवं प्रारूप लेखन, हिंदी वाक्, हिंदी टंकण व अधिकारी क्विज) आयोजित की गई । इन प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा दो सांत्वना पुरस्कार दिए गए । समापन के समारोह अवसर पर हिंदी में सराहनीय कार्य करने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों को तथा गृह मंत्रालय की 10,000/20,000 शब्द लेखन योजना के अंतर्गत पुरस्कृत किया गया । दिनांक 4-10-2012 दोपहर 13.00 बजे

महाप्रबंधक महोदय, श्री ए. के. वर्मा के कर कमलों द्वारा राजभाषा प्रदर्शनी का उदघाटन बी.एन.आर. ऑडिटोरियम में किया गया । इस प्रदर्शनी में मुख्यालय के 12 विभागों (कार्मिक, चिकित्सा, सिगनल, इंजीनियरी, प्रबंध, बिजली, वाणिज्य, लेखा, भंडार, संरक्षा, यांत्रिक तथा परिचालन) द्वारा स्टॉल लगाए गए थे और इसमें से पांच विभागों को पुरस्कृत किया गया । संध्या 16.00 बजे से सांस्कृतिक कार्यक्रम, पुरस्कार वितरण तथा कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया ।

परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय, बेगमपेट, हैदराबाद-16

परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय, बेगमपेट, हैदराबाद में हिंदी पखवाड़ा के समापन समारोह का आयोजन किया गया । ए.एम.डी. के अपर निदेशक (प्रचालन-2) श्री अश्विनी कुमार राय ने इस समारोह की अध्यक्षता की, आपने अपने संबोधन में कहा कि-''जिस प्रकार राष्ट्र को आगे ले जाने में ऊर्जा शक्ति का महत्वपूर्ण योगदान होता है उसी प्रकार हमें मातृभाषा सहित राजभाषा हिंदी से प्रेम होना चाहिए और हमें उसके प्रति गौरवान्वित होना चाहिए । अत: हमें केंद्रीय सरकार के कर्मचारी के नाते प्रतिदिन अपने कामकाज में हिंदी में कुछ-न-कुछ लिखने का अवश्य प्रयास करना होगा । राजभाषा की 64वीं वर्षगांठ के मौके पर यदि हम पुनरीक्षण करें तो हम देखेंगे कि हमने अधिक पाया है, खोया नहीं है परंतु इस दिशा में क्षेत्रीय भाषा और हिंदी दोनों के समन्वय से हिंदी के विकास की दिशा में हम मजबूती से आगे बढ़ सकेंगे ।''

प्रारम्भ में उप निदेशक (राजभाषा) ने हिंदी पखवाड़े से संबंधित रिपोर्ट के अंतर्गत बताया कि इस वर्ष अधिकारी एवं कर्मचारियों के लिए हिंदी कविता-पाठ, प्रश्न-मंच, निबंध लेखन, सुलेखन, शब्द-ज्ञान, भाषण और अंताक्षरी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । इनमें लगभग 204 प्रतिभागियों ने भाग लिया और 151 अधिकारी एवं कर्मचारियों को (प्रतिभागिता पुरस्कार सहित) पुरस्कृत किया ।

क्षेत्रीय निदेशक, वैमानिक गुणता आश्वासन का कार्यालय, वैमानिक गुणता आश्वासन महानिदेशालय, रक्षा मंत्रालय, हैदराबाद-42

क्षेत्रीय निदेशक, वैमानिक गुणता आश्वासन का कार्यालय, वैमानिक गुणता आश्वासन महानिदेशालय, रक्षा मंत्रालय, हैदराबाद-42 में 14 सितम्बर 2012 से 28 सितम्बर 2012 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया ।

सम्पूर्ण हिंदी पखवाड़े के दौरान आशुभाषण, निबंध, अनुवाद, वाद-विवाद एवं कविता वाचन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालय में कार्यरत सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने प्रति वर्ष की तरह काफी उत्साह से भाग लिया ।

हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह दिनांक 28 सितम्बर, 2012 को सम्पन्न हुआ ।

विंग कमांडर डी.जी.रेड्डी, क्षेत्रीय निदेशक ने अपने भाषण में कहा कि हमारा देश आर्थिक रूप से एक विकसित देश की तरह उभर रहा है तथा एक विकसित देश में उसकी अपनी भाषा अर्थात् हिंदी को भी उसी तरह विकसित करना हम सभी का दायित्व है । हमें इसके प्रचार एवं प्रसार के लिए कटिबद्ध होना होगा ।

मुख्य अतिथि श्री जी.राघवेन्द्र राव, महाप्रबंधक, भारत इलेक्ट्रानिक्स लिमिटेड, हैदराबाद, ने अपने भाषण में बोलते हुए कहा कि ''आपके कार्यालय में संख्या इतनी कम होने के पश्चात् भी आपका यह समारोह काफी भव्य है जिसके लिए मैं आप सभी को बधाई देता हूं तथा यह आपके कार्यालय में हिंदी के प्रति आपकी श्रद्धा को इंगित करता है । इसके लिए मैं क्षेत्रीय निदेशक महोदय को बधाई देना चाहूंगा ।

दूरदर्शन केंद्र, गान्तोक

दिनांक 14-9-2012 को श्री बी.एस. कोलिया, वैज्ञानिक, भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण संस्थान, गान्तोक द्वारा पखवाड़े का विधिवत् शुभारम्भ किया गया । दिनांक 20-9-2012 से 24-9-2012 तक विभिन्न हिंदी प्रतियोगितायें आयोजित की गई, जिसमें प्रमुख थी हिंदी पाठन, श्रुतिलेखन, हिंदी/अंग्रेजी अनुवाद, अंग्रेजी से हिंदी शब्दानुवाद तथा पत्र लेखन इत्यादि । इन प्रतियोगिताओं में कार्यालय के लगभग सभी अहिंदी भाषी कर्मियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया ।

दिनांक 25-9-2012 को श्री दिनेश सिंह, हिंदी प्रध्यापक, भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण संस्थान, गान्तोक द्वारा हिंदी पखवाडे के समापन अवसर पर विजेता प्रतियोगियों को प्रमाण-पत्र व नकद राशि वितरित किए गए ।

दिनांक 27-9-2012 को एक हिंदी कार्यशाला का भी आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में

श्री दिनेश सिंह, हिंदी प्राध्यापक, भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण संस्थान द्वारा 'कार्यालयीन हिंदी में कम्प्यूटर का प्रयोग' के विषय पर जानकारी दी गयी । केंद्र पर हिंदी अधिकारी व हिंदी अनुवादक पदस्थ न होने के कारण इस जानकारी से सभी अधिकारी/कर्मचारियों को बहुत लाभ हुआ ।

दूरदर्शन केंद्र, कोहिमा

दूरदर्शन केंद्र कोहिमा की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक, हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाडे का आयोजन किया गया । इस कार्यक्रम के अन्तर्गत हिंदी से जुडे विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । इस प्रतियोगिता में दूरदर्शन केंद्र कोहिमा के कर्मचारी/अधिकारी उत्साह पूर्वक सम्मिलित हुए एवं प्रतिभागियों को अर्थराशि एवं मानपत्र से सम्मानित किया गया ।

इस अवसर पर ''राष्ट्रीय एकता में हिंदी का योगदान'' विषय पर केंद्र प्रमुख श्री. जी.के. विसवाल, सहायक निदेशक अभियन्ता (केंद्र प्रमुख) द्वारा उद्बोधन दिया गया । कार्यक्रम में एच.के. चिशी. प्रस्तुति सहायक (कार्यक्रम प्रमुख) पी. मैरी. प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित थे । समस्त कर्मचारियों को हिंदी सीखने का प्रयास करने के लिये प्रोत्साहित किया गया ।

आकाशवाणी एवं दूरदर्शन गुवाहाटी

महानिदेशक (अभियांत्रिकी) कार्यालय (पूर्वोत्तर) आकाशवाणी एवं दूरदर्शन गुवाहाटी में दिनांक 14-9-2012 को हिंदी दिवस और 14 से 29-9-2012 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया ।

हिंदी पखवाड़े का उद्घाटन श्री एन.ए.खान, अपर महानिदेशक (अभि) द्वारा दीप प्रज्जलित कर किया गया । अपने उद्घाटन भाषण में अपर महानिदेशक(अभि) महोदय ने कार्यालय के सभी स्टाफ के सदस्यों से हिंदी में काम करने की अपील की । उन्होंने कहा कि आज विश्व भर में हिंदी सीखने और सिखाने पर जोर दिया जा रहा है । भारत सरकार के कर्मी होने के नाते हमारा भी यह दायित्व है कि राजभाषा के रूप में हिंदी को अपने कार्यालयीन कामकाज में प्रयुक्त करें ।

श्री चंद्रिका प्रसाद, उपनिदेशक (अभि) ने भी इस अवसर पर हिंदी की उपयोगिता और इसके कार्यान्वयन पर अपने विचार रखे । उन्होंने हिंदी पत्राचार और राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अनुपालन पर विशेष ध्यान देने को कहा ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के तौर राजभाषा के संबंध में बोलते हुए श्री सत्यानंद पाठक जी ने कहा कि हिंदी ही एक मात्र ऐसी भाषा है जो सभी भारतीय भाषाओं को साथ लेकर चलती है और भारत जैसे देश में जहाँ इतनी अधिक विविधता है, सब को जोड़ने का काम करती है ।

अपर महा निदेशक (अभि.) (पू.क्षे.) का कार्यालय, आकाशवाणी और दूरदर्शन, कोलकाता

अपर महा निदेशक (अभि.) (पू.क्षे.), आकाशवाणी और दूरदर्शन, कोलकाता के कार्यालय में दिनांक 3-9-2012 से 14-9-2012 तक हिंदी पखवाड़ा समारोह का आयोजन किया गया । आकाशवाणी भवन के सम्मेलन कक्ष में दिनांक 3-9-2012 अपराह्न 2.30 बजे हिंदी पखवाड़ा का शुभ उदघाटन किया गया । हिंदी अनुवादक श्रीमती अंजना दे ने अधिकारियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया एवं पखवाड़ा के बारे में विस्तृत विवरण प्रदान किया । इसके बाद श्री एस. एम.टी. आलम, निदेशक अभियांत्रिकी ने अपने भाषण में यह कहा कि ''हिंदी हमारी राज भाषा है यह भाषा प्राय-सभी लोगों द्वारा बोली और समझी जाती है, इसमें काम करना भी आसान है । हिंदी के प्रचार एवं प्रसार हेतु प्रत्येक कर्मचारी को सिर्फ पखवाड़ा में ही नहीं बल्कि दैनिक कार्यालयीन कार्यों में भी हिंदी के कार्यों को बढ़ावा देना जरूरी है''। इसके बाद श्री अनिमेष-चक्रवर्ती, अपर महा निदेशक (अभि.) (पू.क्षे.) ने कहा कि ''कार्यालय में पखवाड़ा मनाया जा रहा है, यह प्रसन्नता की बात है । आशा है कि इसमें ज्यादा से ज्यादा कर्मचारी भाग लेंगे और कार्य को आगे बढ़ाने में सफल रहेंगे'' । इसके बाद हिंदी अनुवादक श्रीमती अंजना दे ने उपस्थित सभी अधिकारियों एवं सज्जनों को धन्यवाद दिया ।

पखवाड़े के दौरान 5 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । दिनांक 3-9-2012 को हिंदी निबन्ध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ।

आकाशवाणी, कडपा केंद्र

इस वर्ष 2012 में भी आकाशवाणी, कडपा केंद्र में हिंदी पखवाड़ा 14 सितंबर से 28 सितंबर तक आकाशवाणी के प्रांगण में बड़ी उत्साह और उल्लास के साथ मनाया गया । 14-9-2012 से लेकर 28-9-12 तक हिंदी पखवाड़ा के

आयोजन के संदर्भ में पूरे 15 दिनों तक हिंदी साहित्य व भाषा संबंधी वार्ता का प्रसारण आकाशवाणी, कडपा केंद्र द्वारा किया गया । इस पखवाड़े के दौरान विविध प्रकार की हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया ।

समारोह में श्री बी.वी. रमण राव, उप महानिदेशक (इं) व कार्यालय प्रमुख ने सभा की अध्यक्षता की । उन्होंने अपने भाषण में यह बताया कि हिंदी एक सरल, कोमल और मधुर भाषा है, हिंदी भारत देश की आत्मा है । इसे हमें इज्जत के साथ अपनाना चाहिए । भाषा देश की एकता और अखण्डता की प्रतीक है । भाषा से देश की सभ्यता और संस्कार विकास होता है । हिंदी भाषा करोड़ों लोगों को रोजगार खोजने में सहायता देती है । इसीलिये भारतवासी होने के नाते हम सब की यह जिम्मेदारी है कि हम हिंदी भाषा को अपनाएं।

बाद में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे श्री बी. शिवरामिरेड्डी, हिंदी प्राध्यापक (सेवा निवृत्ति) ने अपने भाषण में यह बताया कि भारत में स्वतंत्रता के पहले अनेक भाषाएँ बोली जाती थी । पूरे दुनिया भर में तीन हजार भाषाएँ बोली जाती थी ।

स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद हमारे संविधान के नेताओं ने हिंदी को ही राजभाषा के रूप में मान्यता प्रदान की थी । हिंदी भाषा की महत्ता दिन-ब-दिन बढती जा रही है । हिंदी भाषा सीखने से हम हर प्रांत और हर क्षेत्र में आसानी से घूम सकते हैं ।

आकाशवाणी, हैदराबाद

आकाशवाणी, हैदराबाद में दिनांक 14-9-2012 को हिंदी दिवस तथा दिनांक 14-9-2012 से 28-9-2012 तक हिंदी पखवाड़ा बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया ।

दिनांक 17-9-2012 को हिंदी दिवस/पखवाड़ा समारोह का उद्घाटन श्री एम.एस.एस. प्रसाद, उपमहानिदेशक (कार्यक्रम) ने किया । उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर अधिकारियों और कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देते हुए कहा-''मैं चाहता हूँ कि आप सभी अधिकारी एवं कर्मचारी पखवाड़े के दौरान आयोजित की जाने वाली हिंदी कार्यशाला तथा प्रतियोगिताओं में अधिक संख्या में भाग लें और इसका पूरा-पूरा लाभ उठाएं''। इस अवसर पर हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आकाशवाणी महानिदेशक श्री लीलाधर मंडलोई से प्राप्त अपील को श्री मो. खमरूद्दीन, उपमहानिदेशक (इंजीनियरी) तथा माननीय केंद्रीय गृह मंत्री श्री सुशील कुमार शिंडे से प्राप्त संदेश को श्री बाखर मीर्जा, उपनिदेशक (समाचार) ने पढ़ कर सुनाया । श्री मो. खमरूद्दीन, उपमहानिदेशक (इंजीनियरी) ने कहा ''पखवाड़े के दौरान हमें अपने समस्त पत्राचार में हिंदी का प्रयोग करने का संकल्प लेना चाहिए । अधिकारियों को हिंदी में काम करने की पहल करना चाहिए और अपने अधीनस्थ कर्मियों का प्रोत्साहन बढ़ाना चाहिए''। श्री बाखर मीर्जा, उपनिदेशक (समाचार) ने कहा ''भारत सरकार ने संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया है, अत: हमें सरकारी काम में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए''।

आकाशवाणी, कोलकाता

उप महानिदेशक (कार्यक्रम) का कार्यालय, आकाशवाणी, कोलकाता, अपर महानिदेशक (कार्यक्रम) (पूर्वी क्षेत्र) तथा विज्ञापन प्रसारण सेवा, आकाशवाणी, कोलकाता केंद्र के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 1-9-2012 से 14-9-2012 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़ा के दौरान कार्यालय के अधिकारियों /कर्मचारियों के लिए हिंदी निबंध, हिंदी टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता, हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता, तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता एवं हिंदी श्रुत लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ।

दिनांक 14-9-2012 को अपराह्न 2.30 बजे हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह आयोजित किया गया । इसमें विजेता प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार व प्रमाण-पत्र तथा पुरस्कार से वंचित अधिकारी/कर्मचारी गण को सांकेतिक पुरस्कार दिए गए । इसके अतिरिक्त वित्त वर्ष 2011-12 में सरकारी काम मूल रूप से हिंदी में करने के लिए भी पुरस्कार के पात्र कर्मचारियों को नकद पुरस्कार और प्रमाण-पत्र दिए गए ।

सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री उत्तम चंद साह ने राजभाषा नीति संबंधी जानकारी दी और वित्त वर्ष के दौरान हिंदी में किए गए कार्यों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया ।

उप महानिदेशक (कार्यक्रम) केंद्र के उप निदेशक (अभियांत्रिकी) श्री प्रबीर कुमार विश्वास ने हिंदी के प्रयोग पर बल दिया । विज्ञापन प्रसारण सेवा के सहायक निदेशक (कार्यक्रम) श्री शिखर राय ने कहा कि हिंदी के प्रचार-प्रसार के काम को हमें आगे बढ़ाना होगा । अपर महानिदेशक (कार्यक्रम) केंद्र के श्री गौतम सेन गुप्त, सहायक निदेशक (कार्यक्रम) ने कहा कि हमें राजभाषा नीति के कार्यान्वयन हेतु प्रयत्न करना है ।

आकाशवाणी, कटक

1 सितंबर से 15 सितंबर, 2012 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया । निदेशक अभियांत्रिकी श्री बसन्त कुमार बेहेरा ने राजभाषा हिंदी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमें अपनी कार्यालयीन कामकाज में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करना चाहिए । विज्ञापन प्रसारण सेवा के कार्यालय प्रमुख डॉ. यशोवंत नारायण धर ने अपने वक्तव्य में कहा कि सिर्फ पखवाड़े के दौरान नहीं, हमें वर्ष भर हिंदी में कार्यालयीन कार्य बेझिझक करना चाहिए । निदेशक अभियांत्रिकी श्री आनन्द चन्द्र सुबुद्धि ने अपने भाषण में कहा कि हिंदी एक ऐसी कड़ी है जो जोड़ने का कार्य करती है ।

पखवाड़ा के दौरान विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । निबंधन लेखन, वाद -विविद अंताक्षरी, अनुवाद, टिप्पण आलेखन और कहानी कथन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया ।

पखवाड़े का पुरस्कार वितरण समारोह 14 सितंबर को 3.00 बजे आकाशवाणी के परिसर में किया गया ।

महाप्रबंधक दूरसंचार का कार्यालय, बी एस एन एल, दावणगेरे (कर्नाटक)

महाप्रबंधक दूरसंचार का कार्यालय, दावनगेरे में (चित्रदुर्ग दूरसंचार जिला)दिनांक: 1 सितंबर, 2012 से 15 सितंबर, 2012 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया । इस सिलसिले में बी एस एन एल के कर्मचारी-वर्ग के लिए हिंदी में 10 विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जैसे टिप्पण और आलेखन, स्मरण परीक्षा, गायन (महिला, पुरूष एवं बच्चों के लिए अलग रूप से), सुलेख, श्रृतलेखन, हिंदी निबंध, अधिकारियों के लिए हस्ताक्षर प्रतियोगिता एवं सामान्य ज्ञान ।

पखवाड़े के अंतिम दिवस को 'हिंदी दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह' के रूप में महाप्रबंधक श्री एस. राधाकृष्णन की अध्यक्षता में दिनांक 22-9-2012 को कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में आयोजित किया गया । मुख्य अतिथि के रूप में दावणगेरे शहर के श्री सारंगमठ हिंदी महा विद्यालय के प्राचार्य श्री वीरभद्रप्पा बी पी पधारे थे । उन्होंने अपने भाषण में हिंदी की महानता आदि के बारे में बताया । प्रांतीय भाषा और हिंदी में बातचीत करते वक्त गलतियाँ ढूंढने वाले लोग इन गलतियों को अंग्रेजी में बात करते समय क्यों नहीं ढूंढते हैं ?

अध्यक्ष महोदय ने अपने भाषण में बताया कि हिंदी एक सरल, सुंदर एवं जीवित भाषा है । इसका सम्मान करना चाहिए । इसे प्यार से अपनाना चाहिए । और कर्मचारियों को इसका प्रयोग अपने दैनंदिन कामकाज में ज्यादातर करना चाहिए । इसके साथ-साथ उन्होंने बताया कि हिंदी के बारे में अपने बच्चों को भी उनके बचपन में ही इसका प्रयोग करने के लिए और इसकी महानता के बारे में भी सुनाने का सुझाव दिया ।

दूरसंचार जिला महाप्रबंधक का कार्यालय आलप्पुषा - 688 011

आलप्पुषा नगर के सभी केंद्रीय सरकारी कार्यालय, उपक्रम, बैंकों सहित 14-9-2012 को टेलीफोन भवन, आलप्पुषा में संयुक्त हिंदी दिवस के रूप में पूरा दिन मनाया गया । पखवाड़े के दौरान अधिकारियों, कर्मचारियों और उनके बच्चों के लिए प्रतियोगिताएँ, वरिष्ठ अधिकारियों के लिए राजभाषा जागरूकता कार्यक्रम, कार्यशाला, यूनिकोड प्रशिक्षण, स्पॉकन हिंदी क्लास आदि आयोजित किए गए । मुख्य अतिथि डॉ. एन. आर. चित्रा, हिंदी विभागाध्यक्ष, सेन्ट जोसफ्स कॉलेज, आलप्पुषा ने प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए । इस समारोह में कर्मचारियों और उनके बच्चों द्वारा विविध कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए सहायक निदेशक (रा.भा.) ने सभी कर्मचारियों से अधिकाधिक काम हिंदी में करने की अपील की ।

महाप्रबंधक का कार्यालय, भासनिलि, सेलम- 636 007

सेलम दूरसंचार जिले में दिनांक 1-9-2012 से शुरू होकर दो सप्ताह के लिए हिंदी पखवाड़ा समारोह धूमधाम से मनाया गया ।

हिंदी सुलेख, हिंदी श्रुतलेख, हिंदी शब्द शक्ति, राजभाषा प्रतियोगिता, हिंदी स्मरण शक्ति और हिंदी क्रास वर्ड जैसी विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएँ राजभाषा अधिकारी द्वारा चलाई गई । लगभग 107 कर्मचारी/अधिकारी प्रतियोगिताओं में भाग लिया । विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त कर्मचारियों के लिए कुल 41 पुरस्कार प्रदान किये गये और 23 प्रतिभागियों को

हिंदी सीखने एवं भविष्य की प्रतिभागिता के लिए प्रोत्साहन देने हेतु सांत्वना पुरस्कार दिए गए ।

महाप्रबंधक, भारत संचार निगम लि. मदुरै - 625 002

कार्यालय महाप्रबंधक, भा सं नि लि, मदुरै में दि. 1-9-2012 से 14-9-2012 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया । पखवाड़े के दौरान कार्यपालकों, गैर-कार्यपालकों और उनके बच्चों के लिए विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं ।

हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह, मदुरै एस एस ए की वार्षिक राजभाषा गृह पत्रिका 'संचार सुरभि' का विमोचन और पुरस्कार वितरण समारोह श्रीमती एस. ई. राजम, महाप्रबंधक, भा सं नि लि, मदुरै की अध्यक्षता में दिनांक 14-9-2012 को सायं 4 बजे आयोजित किया गया । श्री एन. सुब्बैया, सहायक महाप्रबंधक (एच आर) ने समारोह में उपस्थित सभी अधिकारियों, कर्मचारियों और पुरस्कार विजेताओं का सहर्ष स्वागत किया । श्री पी.वी. श्रीनिवासन, राजभाषा अधिकारी ने वर्ष 2011-2012 के लिए राजभाषा- कार्यान्वयन की गतिविधियों पर रिपोर्ट प्रस्तुत की । इस अवसर पर माननीय गृह मंत्री का संदेश श्रीमती जे. ए. शकिला, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक द्वारा पढ़ा गया ।

महाप्रबंधक ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि हिंदी एकमात्र ऐसी भाषा है, जोकि भारत में सबसे ज्यादा बोली और समझी जाती है । यह गर्व की बात है कि विश्व की 'टाप टेन' भाषाओं में हिंदी दूसरे स्थान पर है । हिंदी हमारी राजभाषा है । इसलिए कार्यालयीन कार्य में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाना हमारा कर्तव्य है । यूनिकोड द्वारा कंप्यूटर पर हिंदी के प्रयोग को बढ़ाएं । हम सबको मिल कर हिंदी के प्रयोग बढ़ाने के लिए भरसक प्रयास करना चाहिए ।

बीएसएनएल, चेन्नई टेलीफोन

हिंदी भाषा, प्रांतों की भाषाई दूरी को मिटाने की अद्‌भुत जिम्मेदारी निभाती है । कार्यालय वातावरण और रोजमर्रा जिंदगी में भी यह सौहार्द का सेतु बांधती है ।

सरकार की राजभाषा नीति के उत्तरोत्तर कार्यान्वयन को मद्‌देनजर रखते हुए, चेन्नई टेलीफोन के अधिकारियों, कर्मचारियों व उनके बच्चों के लिए हिंदी पखवाड़ा 2012 आयोजित किया गया । चेन्नई टेलीफोन के विस्तृत कार्यक्षेत्र को ध्यान में रखते हुए, कुछ हिंदी प्रतियोगिताएं अनन्य तौर पर भूतपूर्व चेंगलपट्टू एसएसए के स्टाफ के लिए भी चलाई गई ।

बच्चे और स्टाफ ने बड़े उत्साह से इन प्रतियोगिताओं में भाग लिया । प्रतियोगियों की कुल संख्या 511 रही ।

दिनांक 25-9-12 को चेन्नई टेलीफोन के हिंदी पखवाड़ा 2012 का समापन समारोह, हिंदी दिवस के तौर पर मनाया गया, जिसकी अध्यक्षता श्री ए. सुब्रमणियन, मुख्य महाप्रबंधक ने की ।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री ए. सुब्रमण्यिन, मुख्य महाप्रबंधक ने विजेताओं के प्रयत्नों को सराहा । मुख्य अतिथि डॉ. पी. सी. कोकिला ने हिंदी की अहमीयत पर प्रकाश डाला । फ्रांस के विश्वविद्‌यालय में हिंदी – तमिल –बंगला का विभाग है । हिंदी के साथ-साथ अन्य प्रांतीय भाषाओं को अपनाने से देश की एकता बढ़ती है । जर्मनी का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि देश का सर्वांगीन विकास, हिंदी को हरेक क्षेत्र में अपनाने से होता है ।

इस सुअवसर पर चेन्नई टेलीफोन की गृह पत्रिका 'चेन्नई वाणी' के 16वें अंक का विमोचन 'विश्व के त्योहार' विशेषांक के रूप में मुख्य महाप्रबंधक द्‌वारा किया गया ।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, पूर्वोत्तर क्षेत्र, गुवाहाटी-21

संघ सरकार की राजभाषा नीति के प्रचार-प्रसार हेतु तथा मुख्यालय के निर्देशानुसार, कर्मचारी राज्य बीमा निगम के क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी में दिनांक 1 से 14 सितम्बर, 2012 तक राजभाषा पखवाड़ा तथा 14 सितम्बर, 2012 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन बड़े ही धूमधाम से किया गया । इस दौरान कार्यालय का पूरा वातावरण मानो हिंदीमय हो गया ।

हिंदी दिवस समारोह का विधिवत् उद्‌घाटन श्री पी. बरुआ, क्षेत्रीय निदेशक ने किया । इस समारोह की शुरूआत निगम का प्रतीक चिह्न ''पंचदीप'' के प्रज्वलन तथा सरस्वती वंदना से हुई । इसके बाद सभी अतिथिगण तथा क्षेत्रीय निदेशक ने क्षेत्रीय कार्यालय में हिंदी की प्रगति व इसके

महत्व एवं उपयोगिता पर अपने-अपने विचार अभिव्यक्त किए । क्षेत्रीय निदेशक ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि "हिंदी में काम करना आसान है । बस निरंतर प्रयास करने की जरूरत है ।" राजभाषा पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिता के कुल 21 विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार भी प्रदान किया गया । समारोह में बच्चों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम ने दर्शकों को मंत्र-मुग्ध कर दिया ।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, उप क्षेत्रीय कार्यालय, कोयम्बत्तूर -641045

दिनांक 1 से 14 सितंबर, 2012 तक हिंदी पखवाड़े के रूप में मनाया गया । इस दौरान विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । 14 सितंबर, 2012 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया ।

मुख्य अतिथि डॉ. चित्रा कृष्णामूर्ती ने उप क्षेत्र में हिंदी दिवस को हर्षोल्लास से मनाने की सराहना की । उनके द्वारा कच्छ में बिताए गए दिनों के अनुभव उन्होंने सभी के साथ बांटें और कहा कि तमिलनाडु के बाहर जाकर बिना हिंदी के जीवन व्यतीत करना बहुत ही कठिन है । उन्होंने यह भी कहा कि हमें अपने बच्चों को फ्रेंच, स्पैनिश आदि विदेशी भाषाएं सिखाने में गर्व महसूस करते हैं तो क्यों न उन्हें हिंदी भी सिखाएं ।

समारोह की अध्यक्षता श्री एस. वासुदेवन, निदेशक ने की । अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि इस उप क्षेत्र में हिंदी दिवस का आयोजन नियमित रूप से किया जाता है और उन्होंने हिंदी प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले सभी प्रतियोगियों की सराहना की । अपने अनुभवों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार सेवाओं में हिंदी का ज्ञान अन्य क्षेत्रों के लोगों से संपर्क करने के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है ।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम के सुपर स्पेशालिटी अस्पताल, सनतनगर

एसिक सूपर स्पेशालिटी अस्पताल, सनतनगर, हैदराबाद में दिनांक: 1 सितंबर से 14 सितंबर, 2012 तक 'राजभाषा पखवाड़ा' मनाया गया । इस दौरान हिंदी के प्रति रूचि बढ़ाने के उद्देश्य से विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं । इन प्रतियोगिताओं में अस्पताल के अधिकारी/मेडिकल स्टॉफ तथा कर्मचारियों ने बड़े ही उत्साह एवं उमंग के साथ भाग लिया और अपनी प्रतिभाओं का प्रदर्शन करते हुए पुरस्कार प्राप्त किए ।

दिनांक 25-9-2012 को 'राजभाषा पखवाड़ा समारोह' का समापन बड़े ही उल्लास-पूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ।

कार्यक्रम आरंभ होने के पूर्व, अध्यक्ष श्री आर.डी. ओझा, मुख्य अतिथि श्री लक्ष्मण सिंह, तथा निदेशक महोदय श्री एम. आर. प्रताप ने राजभाषा पखवाड़े के दौरान हुई प्रतियोगिताओं में भाग लिए सभी प्रतिभागियों को बधाई दी । राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग के संबंध में हुई प्रगति का ब्यौरा कुमारी जे.वि.मोहिनी, व.हिं.अ., ने दी ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि भारत की पहचान एवं अस्थितत्व को कोई मिटा नहीं सकता तथा हिंदी भाषा को कोई मिटा नहीं सकता । उन्होंने कहा कि 14 सितंबर -हिंदी दिवस एक राष्ट्रीय पर्व है । भाषाओं के साथ राजनीति नहीं करना चाहिए । राष्ट्रभाषा के प्रति श्रृद्धा को उन्होंने इन पंक्तियों द्वारा व्यक्त किया ।

'बहारें लुटा दीं, जवानी लुटा दीं, तुम्हारें लिए जिंदगी लुटा दीं' ।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, 10-बी, राधा भवन, शास्त्री नगर, जम्मू-180004

क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, जम्मू में दिनांक 1 सितंबर से 14 सितंबर, 2012 तक राजभाषा पखवाड़ा का आयोजन किया गया । दिनांक 14 सितंबर, 2012 को हिंदी दिवस समारोह मनाया गया । इस पखवाड़े के दौरान कार्यालय में हिंदी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई ।

इन प्रतियोगिताओं में निगम के कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया । हिंदी निबंध प्रतियोगिता, टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता और अंताक्षरी प्रतियोगिता में क्रमश: बीस कर्मचारियों ने हिस्सा लिया । भाषण प्रतियोगिता में पंद्रह कर्मचारियों ने भाग लिया । हिंदी और हिंदीतर कर्मचारियों के लिए दो समूहों में प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया ।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री रतन कुमार, क्षेत्रीय निदेशक ने की । उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में सबसे पहले हिंदी दिवस के अवसर पर जारी महानिदेशक की ओर से जारी अपील को पढ़कर सुनाया । उन्होंने सभी

अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपील किया कि हिंदी एक सरल एवं सहज भाषा है । यह आम बोल-चाल की भाषा है । अपने कार्यालयी कार्यों में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करें । राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 'ग' क्षेत्र के लिए निर्धारित वार्षिक लक्ष्य को प्राप्त करने का भरसक प्रयास करें । उन्होंने कहा कि यह लक्ष्य सभी के प्रयासों से ही हासिल किया जा सकता है ।

एन एच पी सी लि. कार्यालय कार्यपालक निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय ब्लाक डी.पी., प्लाट -3, सैक्टर-V, साल्ट लेक सिटी, कोलकाता-91

क्षेत्रीय कार्यालय, एनएचपीसी लि., सैक्टर -5, साल्ट लेक सिटी, कोलकाता में दिनांक 1-9-2012 से 15-9-2012 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन राजभाषामयी वातावरण में किया गया । इस पखवाड़े को मुख्यत: भाषाई सद्भाव व राजभाषा के प्रयोग के प्रति जागरूकता व प्रोत्साहन के रूप में मनाया गया ।

इस पखवाड़े के दौरान राजभाषा को प्रोत्साहित करने वाली विषयों पर आधारित अनेक प्रतियोगिताएं आयोजित की गई ।

दिनांक 14-9-2012 को हिंदी दिवस, हिंदी पखवाड़ा समापन व पुरस्कार वितरण समारोह मनाया गया । समारोह में पश्चिम बंगाल राज्य विश्वविद्यालय, कोलकाता के हिंदी विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा. अरूण होता मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में आधुनिक भारतीय भाषा के विकास में हिंदी की भूमिका पर प्रकाश डाला । उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि हिंदी का विकास यानि भारतीय भाषाओं का विकास है । भारत की सामासिक संस्कृति को पल्लवित करने की सामर्थ्य हिंदी में विद्यमान है । कहा कि अभी के दौर में भाषाओं के कई रूप हमारे सामने आ रहे हैं चाहे वे अंग्रेजी के हों या हिंदी के, जिसे देखकर यह महसूस हो रहा है कि भारतीय भाषाओं को सुरक्षित रखना अनिवार्य होता जा रहा है । आगे उन्होंने कहा कि हमें भारतीय होने पर गर्व करना चाहिए और विचार-विनिमय के लिए भारतीय भाषाओं का प्रयोग करना चाहिए ।

केंद्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर -742101

केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर (प.बं.) में प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 1-9-2012 से 14-9-2012 तक हिंदी दिवस/पखवाड़ा, 2012 का भव्य आयोजन किया गया । इस अवसर पर संस्थान के अधिकारियों /कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी के प्रति प्रेरित व प्रोत्साहित करने तथा राजभाषा प्रावधानों के सम्यक कार्यान्वयन व अनुपालन की दृष्टि से संस्थान में दिनांक 1-9-2012 से प्रारंभ कर 11-9-2012 तक विविध प्रतियोगिताओं यथा जो क्रमश: इस प्रकार हैं :- टिप्पण व आलेखन, शब्दावली, निबंध, वाद-विवाद, सुलेख व श्रुतिलेख, राजभाषा प्रश्नोत्तरी (क्वीज), अंत्याक्षरी तथा तात्क्षणिक भाषण का सफल आयोजन किया गया । हिंदी दिवस/पखवाड़ा, 2012 के मुख्य समारोह का भव्य आयोजन दिनांक 14-9-2012 को संस्थान के प्रेक्षागृह में किया गया । इस समारोह की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक महोदय डॉ. बी.बी. बिन्दु द्वारा किया गया ।

संस्थान के निदेशक माननीय डॉ. बी.बी. बिन्दू महोदय ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि राजभाषा हिंदी सिर्फ सरकारी कामकाज की भाषा न होकर एक ऐसी वैज्ञानिक भाषा है जो पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने का कार्य करती है । उन्होंने यह भी कहा कि हिंदी के प्रति हमें अपनी निष्ठा बनाए रखते हुए अपने कर्त्तव्य का निर्वहन करना है और सरकारी कामकाज के हर क्षेत्र में चाहे वह प्रशासनिक हो या शोध क्षेत्र वहां हिंदी में ही कार्य निष्पादित करने का हर संभव प्रयास करना चाहिए । यह हमारी नैतिक व राष्ट्रीय जिम्मेवारी है जिसका सम्यक् अनुपालन के लिए कटिबद्ध और सतत प्रयत्नशील रहना है । उन्होंने विजेता प्रतिभागियों के साथ -साथ संस्थान के अन्य अधिकारियों/पदधारियों को भी इस दिशा में कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ने को कहा और उन्होंने बताया कि जब तक हम इस दिशा में प्रयास नहीं करेंगे तब तक सफलता हासिल नहीं हो सकती और आज हिंदी दिवस समारोह के इस अवसर पर हम सभी यह संकल्प लेते है कि हम अपना ज्यादातर काम हिंदी में ही निष्पादित करेंगे ।

भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

एक सप्ताह से चल रहे हिंदी सप्ताह कार्यक्रम का समापन दिनांक 22 सितंबर को कार्यालय के सभाकक्ष में किया गया । सभा की अध्यक्षता कार्यालय के उप महाप्रबंधक (हिंदी) श्री के. नरसिंमहुलु द्वारा किया गया ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए उप महाप्रबंधक जी ने सभी कार्मिकों से यह निवेदन किया कि अपने रोज के कार्यालयीन कार्य में हिंदी के कुछ न कुछ वाक्य, शब्द या कंप्यूटर पर हिंदी पत्रों को टंकित करना इत्यादि करना चाहिए । मुख्य अतिथि महोदय ने बहुत ही सही ढ़ंग से सब को यह बताया कि किस तरह से कार्मिक/अधिकारी अपने रोज के कार्यालयीन कार्य में हिंदी का प्रयोग आसानी से कर सकते हैं । श्री टी. आर. आर्य जी ने भारतवर्ष में हिंदी के उत्थान और उसकी उत्तरोत्तर वृद्धि तथा राजभाषा हिंदी के जन्म, और उसके विकास संबंधी बातों पर प्रकाश डालते हुए कई महापुरुषों के इससे संबंधी उक्तियों को सब के सामने रखा ।

खादी और ग्रामोद्योग आयोग
पी.बी.सं. 362, एम.जे.रोड, गाँधी भवन
नामपल्ली, हैदराबाद-500 001

खादी और ग्राम उद्योग आयोग, राज्य कार्यालय, हैदराबाद में दि. 14 से 24 सितंबर, 2012 तक 'हिंदी सप्ताह समारोह' मनाया गया ।

इस समारोह का उद्घाटन दि. 14-9-2012 को अपराह्न 3 बजे उप निदेशक डॉ. एम.ए. खुद्दुस द्वारा किया गया ।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री के. मोहन राव जी ने सबसे पहले 'हिंदी दिवस' के अवसर पर सभी कर्मचारियों को शुभकामनाएं दी । कार्यक्रम की शुरुआत उन्होंने गृह मंत्री जी के 'हिंदी दिवस' के अवसर पर दिए गए संदेश को पढ़कर आरंभ किया । आगे उन्होंने कहा कि आज हिंदी विश्व मंच पर भी काफी लोकप्रिय हो गया है । न केवल शिक्षा तथा व्यवहार में ही इसका प्रयोग किया जा रहा है बल्कि सूचना प्रौद्योगिकी तथा संचार में भी इसका प्रयोग आज बढ़ गया है ।

मुख्य अतिथि श्री कमालुद्दीन जी प्राध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना, हैदराबाद ने अपने वक्तव्य में आज़कल के प्रचार-प्रसार में हिंदी की भूमिका के बारे में सभी को अवगत कराया । उन्होंने कहा कि कोई भी चीज प्रयोग में इतनी जल्दी नहीं आती इसके लिए निरंतर प्रयास करते रहना आवश्यक है । राजभाषा हिंदी के संदर्भ में भी यही सूत्र लागू होता है । हम हर साल हिंदी पखवाड़ा या सप्ताह, हिंदी संगोष्ठी, हिंदी कार्यशाला आदि इसलिए आयोजित करते हैं कि धीरे-धीरे इनके आयोजन से कर्मचारियों में हिंदी में काम करने की रूचि बढ़े । उन्होंने उपस्थित सभी कर्मचारियों को सुझाव भी दिया कि वे अपने टिप्पणियों में या राजभाषा के प्रयोग में सरल से सरल हिंदी के शब्दों का प्रयोग करें ताकि इसमें काम करना आसान बन जाए ।

मुख्य अतिथि के वक्तव्य के उपरांत 'हिंदी सप्ताह' के दौरान आयोजित विविध प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अतिथि के हाथों पुरस्कृत किया गया ।

आंचलिक एवं राज्य कार्यालय, खादी और ग्रामोद्योग आयोग, रूपनगर, गुवाहाटी

आंचलिक एवं राज्य कार्यालय, खादी और ग्रामोद्योग आयोग, गुवाहाटी में दिनांक 14 सितंबर, 2012 से 28 सितंबर, 2012 तक हिंदी दिवस/पखवाड़ा का आयोजन किया गया एवं 28 सितंबर, 2012 को हिंदी दिवस/पखवाड़ा समारोह कां समापन दिवस एवं हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवधि में राजभाषा हिंदी से संबंधित सुलेख, टिप्पणी व आलेखन, निबंध लेखन, वाद-विवाद, तत्काल भाषण एवं शुद्ध वर्तनी लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें आंचलिक तथा राज्य कार्यालय के कर्मियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया ।

तमिलनाडु केन्द्रीय विश्वविद्यालय, तंजावुर रोड, तिरूवारूर -610004

तमिलनाडु केन्द्रीय विश्वविद्यालय में कल सोमवार, दि. 15 अक्तूबर, 2012 को हिंदी माह-2012 का समापन समारोह संपन्न हुआ । ग्यातव्य है कि विश्वविद्यालय ने दि. 1 से 29 सितंबर, 2012 तक हिंदी माह समारोह मनाया और पूरा सितंबर माह हिंदी की विभिन्न प्रतियोगिताओं तथा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया ।

विश्वविद्यालय के कुलपति, माननीय प्रो. बी. पी. संजय जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि ''कोई भी भाषा सीखने और बोलने के लिए खुलेपन की आवश्यकता होती है । पहले स्तर पर वाक्य विन्यास, व्याकरण की गलतियाँ हो सकती हैं, जो स्वाभाविक भी हैं, लेकिन धीरे-धीरे उस भाषा को बोला और समझा जा सकता है । संतोष

है कि हमारे कर्मचारी एवं विद्यार्थी इस दिशा में प्रयासरत हैं।'' विश्वविद्यालय की भाषा नीति स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि ''विश्वविद्यालय सभी भारतीय भाषाओं के लिए जगह बनाना चाहता है। तुलनात्मक अध्ययन एवं प्रयोजनमूलक पाठ्यक्रमों के जरिए भाषा एवं साहित्य शिक्षण सुगम बनाया जा सकता है। विश्वविद्यालय अगले सत्र में इस तरह के पाठ्यक्रम प्रारंभ करने की पूरी कोशिश करेगा।''

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय प्रो. दिलीप सिंह जी ने अपने समापन भाषण 'राष्ट्रभाषा, राजभाषा और संपर्क भाषा' पर बोलते हुए कहा कि ''14 सितंबर वास्तव में राजभाषाओं से संबंधित है। केवल हिंदी ही राजभाषा नहीं है, बल्कि प्रत्येक राज्य ने जिस किसी भाषा को राजभाषा के रूप में चुना है, वह सभी उन प्रांतों की राजभाषाएँ हैं। हिंदी केवल केन्द्रीय संगठनों, उपक्रमों की राजभाषा है।'' उन्होंने 'संपर्क भाषा' के संबंध में कहा कि प्रत्येक राज्य से जुड़े प्रदेशों की परस्पर सीमाओं पर बोली जाने वाली सभी भाषाएँ उन तमाम प्रांतों के लिए संपर्क भाषाएँ हैं। हिंदी व्यापक अर्थों में संपर्क की भाषा हो सकती है।'' उन्होंने उपरोक्त विषय पर विस्तार से बात की और राष्ट्रभाषा, राजभाषा और संपर्क भाषा के नवीन अर्थों को प्रस्तुत किया।

विश्वविद्यालय प्रशासन ने विशेष पहल करते हुए तिरुवारूर में स्थित एक पाठशाला जीनियस नर्सरी एंड प्राइमरी स्कूल द्वारा हिंदी दिवस मनाने और हिंदी की विभिन्न गतिविधियाँ करने पर पाठशाला प्रबंधन को प्रशंसा पत्र देकर उनके इस काम की प्रशंसा की और भविष्य में इस तरह की गतिविधियों से भावात्मक एकता और हिंदी के प्रचार-प्रसार में योगदान की आशा जतायी। विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री वी. के. श्रीधर जी ने एक प्रशंसा पत्र पर हस्ताक्षर करते हुए कहा कि ''इस तरह के प्रशंसा पत्रों से पाठशालाओं का मनोबल बढ़ेगा। आज तक पाठशाला ने रिपोर्ट भेजी है, कल एकाधिक पाठशालाएँ हिंदी के प्रचार-प्रसार की रिपोर्ट करेंगी और विद्यार्थी भी हिंदी सीखने के लिए अग्रसर होंगे। भावात्मक एकता बनाने में इस तरह के प्रशंसा पत्रों से यदि किसी भी तरह की सहायता होती हो, तो अवश्य ही ऐसी पहल की जानी चाहिए। विश्वविद्यालय समाजहित में किए गए कार्यों की प्रशंसा के लिए सदैव तैयार है।'' उन्होंने आगे कहा कि ''पाठशालाओं में नवीन पीढ़ी शिक्षारत है। उन्हें हिंदी के वैश्विक स्वरूप से अवगत कराने के उपक्रम, उन्हें हिंदी के प्रति जागरूक बनाने में उपयोगी हो सकते हैं। भाषा संबंधी सभी पूर्वाग्रह त्यागकर भाषाओं के जरिए भावात्मक एकता लाने की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय भावात्मक एकता विकसित करने का समर्थक है और हर तरह से सहायता के लिए तैयार है।''

'ख' क्षेत्र

कार्यालय निदेशक, राष्ट्रीय बचत संस्थान, चौथा माला, केंद्रीय कार्यालय परिसर 'ए' ब्लाक, सेमीनरी हिल्स, नागपुर-440006

इस वर्ष 2012 में राष्ट्रीय बचत संस्थान, केन्द्रीय कार्यालय, नागपुर तथा अन्य सभी क्षेत्रीय कार्यालयों में भी दिनांक 1 सितम्बर, 2012 से 14 सितम्बर, 2012 तक हिंदी पखवाड़ा तथा 14 सितम्बर, 2012 को हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। इस दौरान हिंदी कार्यशाला तथा अन्य प्रतियोगिताएं जैसे काव्यपाठ प्रतियोगिता, शब्द ज्ञान प्रतियोगिता, वाद विवाद प्रतियोगिता इत्यादि का आयोजन किया गया।

भारतीय बचत संस्थान (एनएसआई) के निदेशक अनिल भट्टाचार्य ने कहा कि हिंदी पखवाड़े को उत्सव की तरह मनाना चाहिए, ताकि साल भर हिंदी में कार्य करने की प्रेरणा मिलती रहे। वे नागपुर स्थित एनएसआई मुख्यालय में आयोजित हिंदी पखवाड़े के उद्घाटन अवसर पर बोल रहे थे। श्री भट्टाचार्य ने कहा कि इस तरह के आयोजन से हिंदी का प्रचार-प्रसार होने के साथ ही हिंदी में कार्य करने के लिए उपयुक्त माहौल भी बनता है। वहीं प्रमुख रूप से मौजूद संयुक्त निदेशक एस. के. त्रिपाठी ने पखवाड़े के दौरान किए जाने वाले कार्यक्रम की जानकारी उपस्थित जनों को दी। कार्यक्रमों के महत्व से भी अवगत किया। इस समय क्षेत्रीय उपनिदेशक आर. जी. नरेश ने भी विचार व्यक्त किए। संचालन सहायक निदेशक राजभाषा जे.पी. सिंह ने किया व आभार क्षेत्रीय निदेशक पद्म सिंह ने माना।

पश्चिम रेलवे, कार्यालय मुख्य कारखाना प्रबंधक, दाहोद

लोको, कैरिज एवं वैगन कारखाना, दाहोद में हिंदी पखवाड़ा दिनांक 14-9-12 से 28-9-12 तक हर्षोल्लास से मनाया गया। इस आयोजन के अंतर्गत दिनांक 14-9-12 को मुख्य कारखाना प्रबंधक एवं अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री आर.के. गुप्ता जी ने माननीय रेल मंत्री एवं

महाप्रबंधक जी के हिंदी दिवस संदेश का वाचन किया । इसके बाद अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी कार्य के प्रति प्रोत्साहित किए जाने के उद्देश्य से विभिन्न प्रतियोगिताएँ जैसे-हिंदी समाचार शीर्ष लेखन प्रतियोगिता, हिंदी सूक्ति लेखन प्रतियोगिता, हिंदी वाक् प्रतियोगिता, हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन तथा हिंदी निबंध प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई ।

मुख्य कारखाना प्रबंधक जी ने अपने संबोधन में सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई देते हुए आशा व्यक्त कर कहा कि वे हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहेंगे और इसके साथ ही कार्यालय में हिंदी में काम करने का वातावरण बनाकर अन्य कर्मचारियों को भी हिंदी में अच्छा कार्य करने के लिए हमेशा प्रेरित करते रहेंगे । अंत में कार्यक्रम में आमंत्रित कलाकारों को उनकी प्रस्तुतियों के लिए नकद पुरस्कार प्रदान किए गए । अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं मुख्य कारखाना प्रबंधक श्री आर. के. गुप्ता जी ने हिंदी में सराहनीय एवं प्रशंसनीय कार्य करने वाले अधिकारी/कर्मचारी तथा विभिन्न प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।

रक्षा लेखा विभाग कार्यालय, वित्त एवं लेखा नियंत्रक (फै.) लेखा कार्यालय, गोला बारूद फैक्टरी, खड़की, पुणे-411003

लेखा कार्यालय, गोला बारूद फैक्टरी, खड़की, पुणे में दिनांक 3-9-2012 से 14-9-2012 के दौरान हिंदी पखवाड़ा बड़े जोर-शोर से मनाया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने पूर्ण उत्साह से इसमें भाग लिया । इस दौरान राजभाषा के प्रसार के उद्देश्य से कार्यालय में 3 प्रतियोगिताओं :-(i) हिंदी निबंध प्रतियोगिता (ii) हिंदी टिप्पण/प्रारूप लेखन तथा अनुवाद प्रतियोगिता और (iii) हिंदी वक्तृत्व प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ।

दिनांक 14-9-2012 को हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन किया गया । इस अवसर पर हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में सफल 17 कर्मचारियों को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र तथा वर्ष 2011-12 के दौरान अधिकाधिक कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने वाले कर्मचारियों को गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत प्रशस्ति पत्र श्री ए. के. तिवारी, भा. र. ले. से., वित्त एवं लेखा नियंत्रक (फै.), केजीएफ महोदय के कर कमलों द्वारा प्रदान किए गए ।

अपने संबोधन में राजभाषा अधिनियमों, नियमों के अनुपालन करने के लिए सभी अधिकारियों/कर्मचारियों की सराहना की और कहा कि जो भी कार्य हम कर रहे हैं उस कार्य के समर्थन में दस्तावेज अवश्य अद्यतन रखें । उन्होंने कहा कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पुणे तथा प्रधान लेखा नियंत्रक (फै.), कोलकाता द्वारा राजभाषा के कार्यान्वयन में उत्कृष्ट योगदान के लिए हमारे कार्यालय को पुरस्कृत किया गया है, यह हमारे लिए गर्व का विषय है, किंतु साथ ही इससे हमारी जिम्मेदारी भी बढ़ गई है और अब हमें राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी किए जा रहे सराहनीय कार्य को बनाए भी रखना है ।

पश्चिमी रेलवे, मंडल कार्यालय, भावनगर परा

पश्चिमी रेलवे के मंडल कार्यालय, भावनगर परा में दिनांक 7-9-2012 से 14-9-2012 तक राजभाषा सप्ताह का आयोजन किया गया ।

हिंदी सप्ताह के दौरान अधिकारियों के लिए हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप आलेखन तथा लिखित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएं आयोजित की गई, जिनमें मंडल के अनेक अधिकारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया ।

दिनांक 14-9-2012 को मंडल रेल प्रबंधक महोदय की अध्यक्षता में समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया । जिसमें राजभाषा सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता अधिकारियों/कर्मचारियों को मंडल रेल प्रबंधक महोदय तथा अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री अरुण मेहता के करकमलों से पुरस्कार प्रदान किये गये ।

रेलवे स्टाफ कालेज, लाल बाग, वडोदरा -390004

रेलवे स्टाफ कालेज, वडोदा में दिनांक 14-9-2012 से 28-9-2012 तक राजभाषा पखवाड़ा का आयोजन किया गया, जिसके अन्तर्गत संकाय सदस्यों/मेहमान अधिकारियों तथा कर्मचारियों के लिए अनेक प्रतियोगिताओं/कार्यक्रमों का आयोजन किया गया । जिसमें अनेक संकाय

सदस्यों, मेहमान अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने भाग लिया। राजभाषा विषयक सामान्य जानकारी में वृद्धि करने के उद्देश्य से राजभाषा प्रश्न-मंच, दैनिक सरकारी कामकाज में प्रशासनिक हिंदी शब्दों की जानकारी में वृद्धि करने के उद्देश्य से प्रशासनिक हिंदी शब्द-ज्ञान प्रतियोगिता, हिंदी में प्रभावशाली अभिव्यक्ति करने के उद्देश्य से अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए हिंदी निबंध प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया गया। कालेज के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के उद्देश्य से समसामयिक एवं तकनीकी विषयों पर हिंदी में अपने विचार व्यक्त करने हेतु एक विचार-गोष्ठी का भी आयोजन किया गया, जिसमें अधिकारियों तथा कर्मचारियों द्वारा सार्थक विचार प्रस्तुत किए गए। पखवाड़ा के दौरान दिनांक 17-9-12 को एन.पी. कार्यालय में राजभाषा विषयक गहन संपर्क कर हिंदी में कार्य करने में सहयोग प्रदान करने के उद्देश्य से टेबल प्रशिक्षण दिया गया।

दिनांक 28-9-2012 को श्री के. एल. दीक्षित, उपमहानिदेशक महोदय की अध्यक्षता में राजभाषा पखवाड़ा समापन एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में श्री के. एल. दीक्षित, उपमहानिदेशक महोदय एवं श्री एम.एस. माथुर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं वरिष्ठ प्रोफेसर (यांत्रिक इंजी.) महोदय ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विजेता अधिकारियों, मेहमान अधिकारियों तथा कर्मचारियों को नकद पुरस्कार तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए।

परमाणु ऊर्जा विभाग, विकिरण एवं आइसोटोप प्रौद्योगिकी बोर्ड, ब्रिट/बी ए आर सी वाशी कंप्लेक्स, सेक्टर-20, वाशी, नवी मुंबई-20

विकिरण एवं आइसोटोप प्रौद्योगिकी बोर्ड नवी मुंबई में दिनांक 14 सितंबर, 2012 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ब्रिट में हिंदी सप्ताह के अंतर्गत आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया तथा ब्रिट की हिंदी पत्रिका ब्रिट-संपदा के द्वितीय अंक का विमोचन भी किया गया।

मुख्य अतिथि श्री रामजी यादव ने अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। श्री रामजी यादव ने "भाषाओं का संघर्ष और हिंदी" विषय पर व्याख्यान दिया। अपने व्याख्यान में श्री यादव ने विश्व भर में भाषाओं की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डालते हुए हिंदी के महत्व पर चर्चा की। श्री यादव ने कहा कि आज विश्व एक संक्रमण के दौर से गुजर रहा है और इस संक्रमण से हिंदी भी अछूती नहीं है जिसके कारण इसके स्वरूप में शैली में बहुत से परिवर्तन आ रहे हैं, उन्होंने आशा व्यक्त की कि इन परिवर्तनों से हिंदी को एक विश्व भाषा के रूप में स्थापित करने में सहयोग मिलेगा।

विकिरण एवं आइसोटोप प्रौद्योगिकी बोर्ड, नवी मुबई में दिनांक 15 सितंबर, 2012 को हिंदी वार्ता का आयोजन किया गया। वार्ता में मुख्य वक्ता के रूप में ब्रिट वाशी व्यावसायिक स्वास्थ्य केन्द्र के चिकित्सा प्रभारी डॉ. मिलिंद लंकेश्वर को आमंत्रित किया गया। डॉ. लंकेश्वर ने 'मानसून से संबंधित बीमारियाँ तथा उनसे बचाव के उपाय' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम की शुरुआत में सहायक निदेशक (राभा) ने मुख्य वक्ता डॉ. मिलिंद लंकेश्वर का स्वागत करते हुए कार्यक्रम का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया।

तत्पश्चात् डॉ. मिलिंद लंकेश्वर ने 'मानसून से संबंधित बीमारियाँ तथा उनसे बचाव के उपाय' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। डॉ. लंकेश्वर ने पावर पॉइण्ट प्रजेण्डेशन के माध्यम से अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने मानसून से संबंधित विभिन्न बीमारियों के कारण व उपायों का सुचित्र वर्णन किया। बीमारियों तथा उनके कारणों पर विस्तार से चर्चा करने के साथ ही डॉ. लंकेश्वर ने इनसे बचाव के उपायों से भी सभी को परिचित कराया।

दूरदर्शन केंद्र, नागपुर

दूरदर्शन केन्द्र, नागपुर में दि. 1 से 14 सितम्बर, 2012 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। दि. 3-9-2012 को निदेशक (अभि.) श्री अधीर गड़पाले ने दीप प्रज्वलित कर हिंदी पखवाड़े का उद्घाटन किया। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में उन्होंने उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों से भारत सरकार की राजभाषा संबंधी नीतियों का गंभीरता से अनुपालन करने की अपील की।

पखवाड़े के दौरान अधिकारियों/कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से हिंदी की विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था। दि. 14 सितम्बर को हिंदी दिवस तथा हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह मनाया गया जिसकी अध्यक्षता निदेशक (अभि.) श्री अधीर गड़पाले ने की।

समापन समारोह के अवसर पर हिंदी की विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को निदेशक महोदय तथा मंच पर उपस्थित अधिकारियों के शुभ हस्ते नकद पुरस्कार तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गये ।

आकाशवाणी, सोलापुर कार्यालय, महाराष्ट्र

हिंदी पखवाड़ा समारोह दिनांक 14-9-2012 से 28-9-2012 तक इस कार्यालय में मनाया गया ।

दिनांक 14 सितंबर, 2012 को अपरान्ह 4.00 बजे कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में हिंदी पखवाड़ा 2012 का उद्घाटन समारोह मा. डॉ. महावीर शास्त्री, प्राध्यापक, वालचंद महाविद्यालय सोलापुर इनके करकमलों द्वारा किया गया ।

दिनांक 28 सितंबर, 2012 को अपरान्ह 4.00 बजे कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा 2012 का समापन समारोह का आयोजन किया गया था । श्री सुनील शिनखेडे, कार्यक्रम अधिकारी एवं कार्यालय प्रमुख अध्यक्ष, तथा श्री इरेश स्वामी, पूर्व कुलगुरू, सोलापुर विश्वविद्यालय, के सोलापुर मुख्य अतिथी थे। कार्यालय के कर्मचारियों के बीच निबंध प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता, फिल्मी अंताक्षरी प्रतियोगिता तथा सामान्य ज्ञान केवल घ कर्मचारियों के लिए आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया था । इन सभी प्रतियोगिता में कर्मचारियों ने बड़ी मात्रा में हिस्सा लिया ।

अतिथि महोदय ने अपने भाषण के माध्यम से मन में हिंदी के प्रति प्रेम जागरण करने के सुझाव दिए । उन्होंने अपने भाषण के जरिए हिंदी भाषा का महत्व, उसकी सरलता आदि के ऊपर विचार प्रस्तुत किए थे । उन्होंने कहा कि हिंदी सरल भाषा है इसमें काम करने से हिंदी में काम करते वक्त आने वाली कठिनाईयां दूर हो जाएंगी । सिर्फ प्रयास जारी रखना है ।

अतिथि महोदय ने आयोजित सभी प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगिताओं और प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी को पुरस्कार प्रदान करके सम्मानित किया ।

राष्ट्रीय औषधीय शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (नाईपर), सैक्टर-67, एस. ए. एस. नगर

राष्ट्रीय औषधीय शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (नाईपर), सैक्टर-67, एस. ए. एस. नगर (मोहाली) में 31 अगस्त से 14 सितम्बर तक राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए 'हिंदी पखवाड़ा' का आयोजन किया गया । हिंदी पखवाड़ा के आयोजन का मुख्य उद्देश्य, संस्थान में हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार तथा राजभाषा के प्रयोग को अधिक से अधिक प्रोत्साहित करना है ।

31 अगस्त से प्रारंभ हुए हिंदी पखवाड़ा के दौरान 7 विभिन्न प्रतियोगिताओं में 360 से अधिक प्रतिभागियों ने अपनी सहभागिता निभाई ।

14 सितंबर, 2012 को आयोजित हिंदी पखवाड़ा के समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री आशीष गोयल, निदेशक, पत्र सूचना कार्यालय, चण्डीगढ़ कहा कि हिंदी विश्व में तीसरे स्थान पर सबसे अधिक बोले जाने वाली भाषा है । देश में हिंदी बोलने वालों की कमी नहीं है । यह एक सरल भाषा है जिसे हम आसानी से दूसरों को समझा सकते हैं । उन्होंने कहा कि न केवल हिंदी का प्रयोग कार्यालयीन कार्य में करें, बल्कि हर जगह हिंदी का प्रयोग करें क्योंकि यह जनमानस को समझ आने वाली सबसे आसान भाषा है । उन्होंने यह भी कहा कि आजकल की पीढ़ी हिंदी में बात करने में झिझकती है, लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिए । अपनी बात को रखते हुए उन्होंने कहा कि देश भर में हिंदी समाचार पत्रों को आम जनता ज्यादा महत्व देती है । हिंदी अखबार लोगों को ज्यादा प्रभावित करता है । इसलिए हमें हिंदी को हिंदी पखवाड़ा तक सीमित न रखकर, हर कार्य में और अपनी दिनचर्या में इसका प्रयोग करना चाहिए ।

प्रो. क. कु. भूटानी, कार्यवाहक निदेशक, नाईपर ने अपने विचार रखते हुए कहा कि केवल हिंदी का ज्ञान होना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि हमें हिंदी का प्रयोग अपने दैनिक कार्यों में करना चाहिए । उन्होंने संस्थान के वैज्ञानिकों से भी कहा कि वह अपने कार्य का कुछ प्रतिशत काम हिंदी में करें, धीरे-धीरे इसका प्रयोग करने की आदत बन जायेगी । अपनी बात रखते हुए उन्होंने कहा कि हम सबने अपनी शिक्षा अंग्रेजी माध्यम से उत्तीर्ण की है और प्रारंभिक रूप से हमें हिंदी में काम करने की दिक्कत भी आ सकती है, लेकिन कोई भी काम असंभव नहीं है ।

डॉ. यू.सी. बैनर्जी, डीन, नाईपर ने कहा कि सब को समझ आने वाली भाषा हिंदी है । उन्होंने हिंदी कक्ष को बधाई देते हुए कहा कि जिस प्रकार संस्थान राजभाषा के क्षेत्र में प्रगति कर रहा है, तो वह दिन दूर नहीं जब हम लोग बोलचाल के अतिरिक्त अपने कार्यक्षेत्र में भी हिंदी का प्रयोग करेंगे ।

संस्थान के कुलसचिव विंग कमांडर पी.जे.पी. सिंह वड़ैच (से.नि.) ने मुख्य अतिथि, निदेशक महोदय, डीन महोदय, हिंदी पखवाड़ा आयोजन समिति, समस्त अधिकारी एवं कर्मचारियों को धन्यवाद व्यक्त किया जिन्होंने हिंदी पखवाड़ा के आयोजन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने सबको अवगत कराया कि सबके सहयोग से संस्थान को राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए काफी पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। और सबसे कहा कि यह सिलसिला यूं ही चलता रहे, इसके लिए हम सबको अपने कार्यालयीन कार्य में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना होगा।

सेमी-कडंक्टर लेबोरेटरी, अंतरिक्ष विभाग, सैक्टर-72, एस. ए. एस. नगर (पंजाब)

सेमी-कंडक्टर लेबोरेटरी में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी हिंदी पखवाड़ा मनाने का सिलसिला 14 सितम्बर, 2012 से आरम्भ हुआ। इस दौरान हिंदी सुलेख प्रतियोगिता-विशेषत: अन्य भाषा-भाषी लोगों के लिए, निबंध प्रतियोगिता एवं हिंदी शब्द-ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 20-9-2012 को किया गया। तत्पश्चात् आशु-भाषण प्रतियोगिता एवं हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 21-9-2012 को किया गया। इन सभी प्रतियोगिताओं में सेमी-कंडक्टर लेबोरेटरी के वैज्ञानिकों तथा कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर सोत्साह भाग लिया। इसके अतिरिक्त पूरे वित्तीय वर्ष में हिंदी में मूल रूप से कार्य करने पर लागू की गई प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत 3 कर्मचारियों को भी पुरस्कृत किया गया।

दिनांक 26 सितम्बर, 2012 को हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़ा समारोह के अवसर पर प्रमुख, कार्मिक एवं सामान्य प्रशासन द्वारा समारोह का शुभारम्भ किया गया। तत्पश्चात् नियंत्रक एससीएल ने हिंदी दिवस के अवसर पर राष्ट्रभाषा के सम्मान में अपने विचार व्यक्त किए और अपने संदेश में सभी कर्मचारियों से राजभाषा में अधिक से अधिक कार्य करने पर जोर दिया।

तदुपरान्त, विभिन्न प्रतियोगिताओं के 25 विजेता कर्मचारियों को पुरस्कार वितरित किए गए और नियंत्रक महोदय द्वारा आभार व्यक्त करते हुए हिंदी दिवस समारोह का सुखद समापन किया गया।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ नंगल मार्ग, रूपनगर, पंजाब-140001

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रोपड़ में दिनांक 14 से 28 सितंबर के दौरान हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता हेतु संस्थान कुलसचिव श्री अ. पलनिवेल ने की।

प्रो. अरविंद कुमार गुप्ता ने अपने स्वागत भाषण में उपस्थित अतिथियों एवं कर्मचारियों का मुक्त हृदय से स्वागत किया एवं सभी को हिंदी दिवस की बधाई दी। उन्होंने कहा कि हिंदी इस देश की सबसे सरल एवं सहज भाषा तथा संपर्क भाषा के रूप में स्थापित हुई है। यह देश के एक बहुत बड़े भाग द्वारा पारस्परिक व्यवहार में प्रयुक्त की जाती है। हिंदी की इसी महत्ता को देखते हुए संविधान सभा के निर्माताओं ने 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में स्वीकार किया है। इसलिए हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए संस्थान कुलसचिव ने अपने संबोधन में सभी कर्मचारियों को हिंदी दिवस की बधाई दी और कर्मचारियों का स्वागत किया। अपने संबोधन में उन्होंने बताया कि हमारा संस्थान अपनी अन्य गतिविधियों के साथ भारत सरकार की राजभाषा नीतियों के कार्यान्वयन के लिए प्रतिबद्ध है। संस्थान के प्रत्येक कर्मचारी का दायित्व है कि वह राजभाषा का प्रचार-प्रसार बढ़ाएं और कहा कि हम थोड़े-थोड़े प्रयासों से निश्चित ही संस्थान में हिंदी की गतिविधियों को बढ़ा सकते हैं।

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला, खड़कवासला, पुणे

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधानशाला, खड़कवासला, पुणे (भारत सरकार, जल संसाधन मंत्रालय) में 14 सितम्बर, 2012 को हिंदी दिवस समारोह मनाया गया। इस अवसर पर अनुसंधानशाला के निदेशक डॉ. ईश्वर दत्त गुप्ता, मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में अनुसंधान शाला के अधिकारियों द्वारा प्रस्तुत काव्यपाठ की सराहना की एवं हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं में विजेता कर्मचारियों को बधाई देकर प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि अनुसंधान शाला में हिंदी का कामकाज संतोषजनक है, लेकिन हमें इसमें ही संतोष नहीं करना चाहिए। हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ स्वयं ही कार्यालयीन कामकाज में पत्राचार बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। अनुसंधान शाला के अधिकारियों को हिंदी में पुस्तक लिखने हेतु प्रेरित किया। उन्होंने सुझाव दिया कि तकनीकी लेखों को आम लोगों की भाषा में लिखने का प्रयास किया जाए। साथ ही उन्होंने यह भी सूचित किया कि अगले हिंदी दिवस पर भूकंप से

संबंधित विषय पर वह स्वयं हिंदी में पुस्तक प्रकाशित करवाएंगे ।

हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित हिंदी निबंध, वाद-विवाद, वार्तालाप, प्रश्नमंच, प्रस्तुतीकरण, टंकण, तकनीकी शब्दों का हिंदी अनुवाद, तकनीकी लेख और हिंदी में मूल रूप से टिप्पण आलेखन योजना में पुरस्कार प्राप्त कर्मचारियों को मुख्य अतिथि द्वारा नकद पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र देकर प्रोत्साहित किया गया ।

उप क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, एस.सी.एफ. 22-23ए, फेस II अरबन इस्टेट, फोकल प्वाइंट, लुधियाना

दिनांक 1 सितंबर, 2012 से 14 सितंबर, 2012 तक की अवधि में राजभाषा पखवाड़ा मनाया गया ।

श्री के. एस. धालीवाल, संयुक्त निदेशक (प्रभारी) ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी दिवस की बधाई दी । उन्होंने कहा कि भारत एक बहुभाषी देश है । हिंदी ने इस देश को एकता के सूत्र में बांध रखा है । जिस प्रकार अंग्रेजी के द्वारा विश्व में एक-दूसरे से सम्पर्क स्थापित किया जाता है । ठीक उसी तरह भारत में हिंदी के माध्यम से एक-दूसरे से सम्पर्क स्थापित किया जाता है । हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं से भी कार्यालय के कर्मचारियों में निकटता आती है तथा हिंदी में अपने कौशल को प्रकट करने का अवसर प्राप्त होता है । उन्होंने आशा व्यक्त की कार्यालय के सभी अधिकारी/कर्मचारी अपना कार्यालयी काम हिंदी में ही करेंगे। तत्पश्चात् उन्होंने इस अवसर पर मुख्यालय से विशेष रूप से भेजी गई महानिदेशक महोदय की अपील का वाचन किया ।

मुख्य अतिथि श्री एन.एस. गरब्याल ने अपने वक्तव्य में कहा कि 14 सितम्बर, 1949 के दिन भारत की संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था । तब से प्रत्येक कार्यालय में आज के दिन हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया जाता है । हिंदी एक सरल भाषा है । हम सब का सांविधिक दायित्व है कि हम अपना कार्यालयी काम हिंदी में करें । उन्होंने हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेता कार्मिकों को बधाई दी । उन्होंने कार्यालय द्वारा हिंदी दिवस समारोह के अच्छे आयोजन की प्रशंसा की तथा मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किए जाने के लिए भी धन्यवाद किया । इसके पश्चात् श्रीमती जसबीर कौर, उच्च श्रेणी लिपिक ने अपने मधुर स्वर में गजल गाकर सभागार को मंत्रमुग्ध कर दिया ।

राजभाषा पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अतिथि एवं संयुक्त निदेशक (प्रभारी) श्री के. एस. धालीवाल के कर-कमलों द्वारा नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए गए ।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम (क्षेत्रीय कार्यालय), पंचदीप भवन, ई.डी.सी. प्लाट सं. 23, पारो, पणजी, गोवा

दिनांक 1-14 सितंबर, 2012 तक की अवधि में राजभाषा पखवाड़े का आयोजन किया गया । 14 सितंबर, 2012 को कार्यालय में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया ।

राजभाषा पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं- हिंदी निबंध, हिंदी टिप्पण/आलेखन, हिंदी वाक प्रतियोगिता एवं हिंदी अंताक्षरी के विजेताओं को प्रशस्ति पत्र एवं नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया जिससे कि कर्मचारियों का हिंदी प्रयोग के प्रति उत्साह बना रहे ।

श्री सी. वी. जोसफ, क्षेत्रीय निदेशक जी ने कहा की हम सभी को राजभाषा नियम का कड़ाई से पालन करना चाहिए । उन्होंने कहा कि हिंदी आज विश्व में सबसे अधिक बोले जाने वाली भाषा है । उन्होंने कहा हमें गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने का गंभीरता से प्रयास करना चाहिए ।

दि न्यू इंडिया एश्योरेन्स कंपनी लि., क्षेत्रीय कार्यालय, चौथी मंजिल, सूर्या टॉवर, 108, दी माल, लुधियाना

दि न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी, क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना में 31 अगस्त, 2012 से 14 सितंबर, 2012 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया । इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया ।

पारितोषिक वितरण समारोह क्षेत्रीय कार्यालय सभागार में दिनांक 14-9-2012 को सांय 3 बजे आयोजित किया गया । इस कार्यक्रम की अध्यक्षता मुख्य क्षेत्रीय प्रबंधक डॉ. एस. एल. खोसा ने की ।

समापन भाषण में डॉ. खोसा ने भारत सरकार की राजभाषा नीति का सही रूप में अनुपालन करने तथा सरकारी

कामकाज में सभी कर्मचारियों को अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया ।

जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास, प्रशासन भवन, सेवा, तालुका-उरण, नवी मुंबई

जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास में हिंदी दिवस के अवसर पर दि. 1 सितम्बर, 2012 से दि. 15 सितम्बर, 2012 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया । इस दौरान हिंदी अनुवाद एवं शब्दावली हिंदी टंकण (आशुलिपिक वर्ग), हिंदी टंकण (अन्य वर्ग), हिंदी कहानी प्रतिलेखन, हिंदी भाषण, रोचक प्रसंग कथन, वर्ग पहेली, हिंदी निबंध लेखन, हिंदी कविता पाठ, गीत गायन, हिंदी अंताक्षरी और हिंदी भाषाज्ञान की कुल मिलाकर 12 प्रतियोगिताएं आयोजित की गई । हिंदी अन्ताक्षरी एवं गीत गायन प्रतियोगिता में कमचारियों/अधिकारियों के परिवारजनों ने भी भाग लिया ।

मुख्य अतिथि अध्यक्ष, श्री एल. राधाकृष्णन ने अपने सम्बोधन में वरिष्ठ अधिकारियों से यह अपील की कि वे अपने कामकाज में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करें तथा कम्प्यूटर प्रणालियाँ भी इस प्रकार तैयार होनी चाहिए कि अंग्रेजी के साथ-साथ उनमें हिंदी में भी कार्य हो सके ।

'क' क्षेत्र

ग्रुप केन्द्र, के. रि. पु. बल, बंगरसिया, भोपाल (म.प्र.)

हिंदी पखवाड़ा/दिवस-2012 के उपलक्ष्य में इस ग्रुप केन्द्र में दिनांक 1 सितंबर, 2012 से 15 सितंबर, 2012 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया तथा विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई । दिनांक 1-8-2012 से 31-8-2012 तक की अवधि में हिंदी में किए गए कार्य संबंधी हिंदी व्यवहार प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ।

दिनांक 14 सितंबर, 2012 को ग्रुप केन्द्र, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, बंगरसिया, भोपाल में स्टेशन स्तर पर हिंदी दिवस समारोह का आयोजन बड़ी धूम-धाम से किया गया । श्री जगजीत सिंह, पुलिस उप महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र भोपाल ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में इस पावन अवसर पर सभी को बधाई देते हुए कहा कि 'इस समारोह की सार्थकता तभी है जब हम अपना सभी सरकारी काम-काज पूरी निष्ठा के साथ आम-बोलचाल की भाषा में करेंगे । राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने में भाषा के योगदान की चर्चा करते हुए, सभी से राजभाषा नीतियों का निष्ठापूर्वक कार्यान्वयन एवं अनुपालन करने का आह्‌वान किया । कवि सम्मेलन की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम ने हम सबका मन मोह लिया है और इसे आगे भी तथा और बड़े स्तर पर आयोजित किया जाएगा ।

कार्यालय मुख्य आयकर आयुक्त (सं.नि.प्रा.), आयकर भवन, होशंगाबाद रोड, भोपाल

मुख्य आयकर आयुक्त (सं. नि. प्रा) कार्यालय, भोपाल में हिंदी पखवाड़े का विस्तृत आयोजन 14 सितम्बर, 2012 से 28 सितम्बर, 2012 तक किया गया । पखवाड़े का विधिवत् उद्‌घाटन हिंदी दिवस के अवसर पर दिनांक 14 सितम्बर, 2012 को माननीय श्री ए.के. जैन, मुख्य आयकर आयुक्त ने माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलित कर किया ।

हिंदी पखवाड़े के औपचारिक उद्‌घाटन की उद्‌घोषणा करते हुए माननीय श्री ए. के. जैन, मुख्य आयकर आयुक्त ने कहा कि हम हिंदी के प्रति अपने संवैधानिक दायित्व को याद करते हुए राजभाषा के प्रति अपने संकल्प को दोहराएं और अन्य पर्वो की ही तरह और अधिक ऊर्जावान एवं उत्साहित होकर निज भाषा का प्रचार-प्रसार कर सकें । हिंदी दिवस इसलिए मनाया जाता है कि हम हिंदी के प्रति अपने संवैधानिक दायित्व को याद करते हुए राजभाषा के प्रति अपने संकल्प को दोहराएं और अन्य पर्वों की ही तरह और अधिक ऊर्जावान एवं उत्साहित होकर निज भाषा का प्रचार-प्रसार कर सकें । उन्होंने कहा कि विश्व के अनेक देशों में हिंदी के पठन-पाठन के लिए वहां के विश्वविद्यालयों, पुस्तकालयों में विशेष सुविधाएँ प्रदान की जा रही हैं जो हिंदी के विश्व मंच पर बढ़ते प्रभाव को दर्शाता है हिंदी के बढ़ते अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव के बीच देश में आज भी यह प्रमाणित तथ्य है कि राष्ट्रीय एकता एवं अक्षुणता बनाये रखने के साथ-साथ राष्ट्र निर्माण में भी हिंदी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है । साथ ही हिंदी को संविधान ने राजकाज की भाषा के रूप में सहर्ष स्वीकार किया है इसलिए वित्त विभाग के राजस्व कर्मचारी होने के नाते हमारा महत्वपूर्ण दायित्व है कि राष्ट्र निर्माण के लिए राजस्व पूर्ति के साथ ही देश के भाषाई राजस्व को सहेजने का कार्य भी हमें प्रमुखता से करना है और हिंदी की प्रगति में निरंतर विकास लाने के लिए सेवापर्यन्त प्रयासरत रहना होगा । इस कड़ी में आगामी हिंदी पखवाड़े में हम सभी पूर्ण रूप से भाग लेकर अपने संवैधानिक एवं सामाजिक कर्तव्य को उत्तरदायित्व के बोध के साथ निभा सकते हैं ।

भारत सरकार, श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, खान सुरक्षा महानिदेशालय, ग्वालियर क्षेत्र, ग्वालियर

खान सुरक्षा महानिदेशालय के ग्वालियर क्षेत्रीय कर्यालय में दिनांक 01-09-2012 से 14-09-2012 तक हिंदी पखवाड़ा पूर्ण उत्साह के साथ मनाया गया । पखवाड़े के दौरान सभी कार्य हिंदी में करने की अपील जारी की गई तथा हिंदी में कार्य करने में आने वाली कठिनाईयों पर विचार किया गया। वैसे तो ग्वालियर क्षेत्रीय कार्यालय में अधिकांश कार्य हिंदी में किए जाते हैं फिर भी इस पखवाड़े के दौरान सभी टिप्पणी, प्रारूपण, फाईलों पर नाम, विषय , प्राप्त पत्रों का उत्तर तथा अन्य लेखन कार्य हिंदी में किए गए। ऐसे वैज्ञानिक एवं तकनीकी पत्र जिनका हिंदी रूपांतरण तत्क्षण सम्भव नहीं है उसका अग्रसण पत्र हिंदी में भेजा गया तथा भविष्य में भी सभी कार्य हिंदी में करने का संकल्प लिया गया ।

हिंदी पखवाड़े में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालय के सभी कर्मचारियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया । प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतियोगिओं को पुरस्कृत किया गया।

हिंदी पखवाड़े का मुख्य समारोह खान सुरक्षा महानिदेशालय के ग्वालियर क्षेत्रीय कार्यालय में खान सुरक्षा निदेशक श्री ए.के. जैन की अध्यक्षता में दिनांक 14-9-2012 को अपराह्न 04.00 बजे आयोजन किया गया। पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के पुरस्कार पाने वाले प्रतियोगिओं का निर्णय श्री ए. के. जैन निदेशक द्वारा किया गया।

मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, उत्तर पश्चिम रेलवे, जोधपुर

जोधपुर मंडल पर दिनांक 10 से 14 सितम्बर, 2012 तक राजभाषा पखवाड़ा मनाया गया ।

राजभाषा पखवाड़े के दौरान विभिन्न कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी निरीक्षण किया गया ।

निरीक्षण के दौरान सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने के लिए अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रोत्साहित किया गया । 21 सितंबर को वरिष्ठ अधीनस्थों के लिए रेल सेवा आचरण एवं अनुशासन एवं अपील नियम पर कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

दिनांक 24 सितम्बर, 2012 को मंडल रेल प्रबंधक महोदय की अध्यक्षता में मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया । जिसमें मंडल रेल प्रबंधक महोदय द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं/संगोष्ठियों में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर विजेता रहे कुल 22 कर्मचारियों तथा वर्ष 2011-12 के दौरान सरकारी कामकाज में हिंदी का सराहनीय व प्रशंसनीय प्रयोग करने वाले कुल 35 कर्मचारियों को नकद पुरस्कार तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए ।

फिल्म प्रभाग, सूचना भवन, सी.जी.ओ. कंप्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली

फिल्म प्रभाग, नई दिल्ली कार्यालय में हिंदी पखवाड़े का आयोजन दिनांक 14 सितंबर, 2012 से 28 सितम्बर, 2012 तक किया गया । इस अवधि में अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी में कामकाज करने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से अनेक हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। श्री अमृत पाल सिंह, उप महानिदेशक (प्रभारी) की अध्यक्षता में पखवाड़े के मुख्य समारोह का आयोजन दिनांक 28 सितम्बर 2012 को किया गया।

पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में चयनित अधिकारियों/कर्मचारियों को समारोह में मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कार व प्रमाण पत्र प्रदान किए गए ।

कार्यालय पुलिस उप महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र, के. रि. पु. बल, 70-आर मॉडल टाऊन, आर्य समाज चौक, एटलस रोड, सोनीपत

ग्रुप केन्द्र, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, सोनीपत में आज दिनांक 14-09-2012 को "हिंदी दिवस समारोह" मनाया गया । श्री सूरज भान काजल पुलिस उप महानिरीक्षक महोदय ने इस अवसर पर अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि आजादी के समय से लेकर आज तक इस विविधता वाले विशाल राष्ट्र में राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के लिए "राजभाषा हिंदी" विशेष भूमिका निभा रही है। राष्ट्र स्वाधीनता के पूर्व हमारे वीरों, वीरांगनाओं और नेताओं के मस्तिष्क में स्पष्ट कल्पना थी कि राष्ट्र स्वाधीनता के पश्चात् हिंदी को राष्ट्र भाषा का दर्जा दिया जाए। राष्ट्रीय एकता के लिए हमें एक ऐसी भाषा की आवश्यकता थी जो संपर्क सूत्र

का काम करे। वह भाषा सिर्फ हिंदी ही हो सकती है संविधान समिति द्वारा हर प्रकार से विचार और गहन चिंतन के पश्चात् 14 सितम्बर, 1949 को हिंदी भाषा को संविधान में राजभाषा का दर्जा दिया गया और इसी उपलक्ष्य में ही केन्द्रीय सरकार के सभी कार्यालयों/उपक्रमों में प्रत्येक वर्ष हिंदी दिवस मनाया जाता है । उन्होंने कहा कि हमें अपनी राजभाषा पर गर्व होना चाहिए। प्रत्येक देशवासी को अपनी मातृभूमि संस्कृति, मातृभाषा का सम्मान करना चाहिए क्योंकि ये तीनों ही हमारी प्रसन्नता व अच्छे भविष्य के कारक हैं उन्होंने सभी सदस्यों को बल देकर कहा कि अपना शासकीय कार्य हिंदी में ही निपटाएं और देश एवं राजभाषा का गौरव बढ़ाएं पुलिस उप महानिरीक्षक महोदय ने इस अवसर पर आगे कहा कि आज "हिंदी" आम बोल-चाल की भाषा बन गई है और रेडियो, टेलीविजन, समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं, विज्ञापनों, चलचित्रों एवं व्यावसायिक जगत में अत्यन्त लोकप्रिय हो चुकी है राजभाषा के रूप में हिंदी के उपयोग के लिए बनाए गए अधिनियम, नियमों तथा समय-समय पर जारी किए गए आदेशों का अनुपालन करते हुए, हमें अपने काम-काज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने का प्रयास करना चाहिए ।

हिंदी पखवाड़े के दौरान विभिन्न हिंदी प्रतियोगताओं में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों को नकद पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र वितरित किए ।

भारत-तिब्बत सीमा पुलिस बल महानिदेशालय खण्ड-2, केन्द्रीय कार्यालय परिसर, लोधी रोड, नई दिल्ली

भा.ति.सी.पु. बल महानिदेशालय में 14 से 28 सितंबर तक हिंदी पखवाड़ा मनाया जा रहा है इस वर्ष श्री रणजीत सिन्हा आई.पी.एस. के निर्देशन में प्रयोग भा.ति.सी.पु. बल महानिदेशालय में 14 से 28 सितम्बर, 2012 तक "हिंदी पखवाड़ा" का आयोजन किया गया।

"हिंदी पखवाड़े" के दौरान राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं अधिकारियों तथा कर्मचारियों में हिंदी के प्रयोग के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के लिए राजभाषा हिंदी संबंधी विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया ।

"हिंदी पखवाड़े" के समापन पर हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र वितरित करने के लिए " पुरस्कार वितरण समारोह" 28 सितम्बर, 2012 को आयोजित किया गया । समारोह के मुख्य अतिथि श्री रणजीत सिन्हा, भा.पु.से. महानिदेशक ने विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि मुझे यह देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में हिंदीतर भाषी कार्मिकों ने भी बढ़-चढ़कर भाग लिया । उन्होंने संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी के प्रयोग में हुई प्रगति हमारी टीम भावना से कार्य करने एवं सकारात्मक सोच का परिणाम है । इसके परिणामस्वरूप ही, हम गृह मंत्रालय की राजभाषा शील्ड योजना में कई बार "प्रथम" स्थान प्राप्त कर सके हैं । उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र में अन्य विभाग भी प्रयासरत हैं और हमें उनसे चुनौती मिल रही है । अत: हमें अपने कार्यों में पहले की अपेक्षा और अधिक प्रयास करने होंगे । उन्होंने इच्छा व्यक्त की कि अधिकारी स्वयं सारा काम हिंदी में करें ताकि स्टाफ भी अपना समस्त काम हिंदी में करने के लिए प्रेरित हो । उन्होंने प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बधाई दी और आशा व्यक्त की कि राजभाषा के क्षेत्र में सभी निष्ठा, लगन एवं ईमानदारी के साथ कार्य करते हुए भा.ति.सी. पुलिस बल का यश बढ़ाएंगे ।

उप क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, सैक्टर-57, नोएडा

निगम के उप क्षेत्रीय कार्यालय, नोएडा में 01सितम्बर से 14 सितम्बर, 2012 तक राजभाषा पखवाड़े का आयोजन किया गया । राजभाषा पखवाड़े के आयोजन के पूर्व ही राजभाषा शाखा से परिपत्र जारी कर उप क्षेत्रीय कार्यालय एवं उप क्षेत्रीय कार्यालय के नियंत्रणाधीन सभी शाखा कार्थालयों के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से पूरे पखवाड़े के दौरान अधिकाधिक कार्य हिंदी में निपटाने का अनुरोध किया गया ।

राजभाषा पखवाड़े की सार्वजनिक सूचना हेतु उप क्षेत्रीय कार्यालय के मुख्य द्वार पर बड़े बैनर लगवाए गए । पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार चार हिंदी प्रतियोगिताओं क्रमश: हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता, हिंदी वाक् प्रतियोगिता, हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता एवं हिंदी अंताक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ।

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र, जे.एस. ए.एम.बी. भूतल, ए.एम.वाई., पण्डरा, रांची-834005

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र, हेहल, राँची में हिंदी दिवस सह पखवाड़ा का आयोजन दिनांक

14-09-2012 से 28-09-2012 तक किया गया । दिनांक 14-09-2012 को हिंदी दिवस सह पखवाड़े का उद्घाटन किया गया तथा साथ ही हिंदी दिवस भी मनाया गया । पखवाड़े का उद्घाटन दीप प्रज्वलित करके मुख्य अतिथि श्री बी.एन. बर्डियार, निदेशक (प्रभारी), सेवानिवृत्त, केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नगड़ी, राँची एवं केंद्र के वैज्ञानिक—डी (प्रभारी) डॉ. मो. मजहर आलम ने किया । कार्यक्रम में क्षे.रे.उ.अ.के, राँची के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी ने सक्रिय रूप से भाग लिया । मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी एक समृद्ध भाषा है जो भारत में सर्वत्र बोली एवं समझी जाती है । उन्होंने हिंदी पखवाड़ा मनाये जाने के परिप्रेक्ष्य में विशेष तौर पर प्रकाश डाला तथा कर्मचारियों का उत्साहवर्धन करते हुए शत-प्रतिशत कार्य हिंदी में करने पर बल दिया केंद्र के वैज्ञानिक-डी (प्रभारी) डॉ. मो. मजहर आलम के द्वारा केंद्रीय रेशम बोर्ड के माननीय अध्यक्ष एवं सदस्य सचिव का संदेश भी पढ़ा गया । अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रभारी ने केंद्र के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा लगातार शत्-प्रतिशत हिंदी में किये जा रहे कार्यों की प्रशंसा की तथा भविष्य में भी राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करते रहने का आह्वान किया । केंद्र के वैज्ञानिक-सी डॉ. ए.एच. नकवी ने हिंदी दिवस सह पखवाड़ा पर विशेष तौर पर प्रकाश डालते हुए राजभाषा के विकास पर बल दिया । उन्होंने तकनीकी कार्यों में हिंदी में शत्-प्रतिशत कार्य करने एवं लक्ष्य पाने को प्रेरित किया ।

राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान, 5 सीरी इंस्टीट्यूशनल एरिया, हौजखास, नई दिल्ली-110016

राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान में 1 से 14 सितम्बर, 2012 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया । श्री सतीश कुमार वरिष्ठ, उप निदेशक (प्रशासन) ने हिंदी पखवाड़े का उद्घाटन किया । हिंदी पखवाड़े के दौरान कार्यालय में अधिकारियों एवं कर्मचारियों की हिंदी के प्रति रुचि बढ़ाने तथा अपना सरकारी काम-काज हिंदी में करने की मानसिकता और वातावरण तैयार करने के उद्देश्य से हिंदी श्रुतलेख प्रतियोगिता तथा हिंदी ज्ञान एवं अनुवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । इस दौरान एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन भी किया गया जिसका उद्देश्य संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों को राजभाषा नीति तथा इससे संबंधित नियमों की जानकारी देना तथा हिंदी में कामकाज करने में उनकी कठिनाइयों को दूर करना था इस कार्यशाला का उद्घाटन डॉ. अशोक कुमार, अपर निदेशक (एमसी) ने किया । इन कार्यक्रमों में प्रत्येक वर्ग के अधिकारियों/कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया ।

कोयला खान भविष्य निधि कार्यालय, क्षेत्र-2, शेटशन रोड, रांची

रांची स्थित कोयला खान भविष्य निधि के तीनों क्षेत्रीय कार्यालयों में हिंदी दिवस 2012 के अवसर पर राजभाषा पखवाड़ा कोयला खान भविष्य निधि, क्षेत्र-दो कार्यालय में संयुक्त रूप से 1 से 15 सितम्बर, 2012 तक मनाया गया ।

"2012 की हिंदी पखवाड़े का समापन, समारोह एवं पुरस्कार वितरण" दिनांक 17 सितंबर, 2011 को संयुक्त रूप से रांची 2 कार्यालय के परिसर में बड़ी ही धूम-धाम से मनाया गया ।

श्री एस.के. दूबे, क्षेत्रीय आयुक्त ने उपस्थित कर्मचारियों को इस पावन अवसर पर अपने भावपूर्ण उद्बोधन में कहा कि हिंदी दिवस हम सबमें एक नया उत्साह और संकल्प पैदा/प्रेरित करता है जिससे हम हर वर्ष अधिक अच्छी तरह से राजभाषा हिंदी का क्रियान्वयन करते हैं । उन्होंने कहा कि शब्द और भाषा जितनी सरल होगी, ज्ञान का प्रसार उतना सुगम होगा । इसलिए सरल और सहज भाषा का नजरअंदाज करना उचित नहीं है अतएव हम सभी को इसके लिए प्रयास करना चाहिए । उन्होंने राजभाषा हिंदी का महत्व बताते हुए कहा कि हिंदी के विकास एवं समृद्धि के लिए पूरे मन से सरकारी काम हिंदी में करना हम सब की राष्ट्रीय जिम्मेदारी है ।

श्री ए.के. सिन्हा, क्षेत्र-एक ने अपने अध्यक्षीय भाषण में संबोधित करते हुए कहा कि संघ की राजभाषा नीति का आधार प्रेरण और प्रोत्साहन है किंतु राजभाषा संबंधी अनुदेशों का अनुपालन दृढ़तापूर्वक किया जाना चाहिए । उन्होंने तीनों कार्यालय में हो रहे राजभाषा हिंदी के प्रयोग पर संतोष व्यक्त किया एवं इस अवसर पर उन्होंने कहा कि राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन कोई समस्या नहीं वह हमारे कारोबार में सहायक भूमिका निभाती है । संबोधन में, राजभाषा विभाग के इस समारोह की सार्थकता की ओर इशारा करते हुए उन्होंने कहा कि इस समारोह से हमारे अंदर की ऊर्जा

प्रज्वलित हो जाए तो समझिए कि हमारा आयोजन सार्थक है ।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण बिरसा मुंडा हवाई अड्डा, रांची

14-09-2012 को हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़ा-2012 का उद्घाटन समारोह--श्री राघवेन्द्र कुमार राजू, विमानपत्तन निदेशक की अध्यक्षता में दि. 14-09-2012 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया एवं 30 सितंबर, 2012 तक चलने वाला हिंदी पखवाड़ा-2012 का भी उद्घाटन किया गया ।

डॉ. मंजू सिन्हा, प्राचार्य, रांची महिला महाविद्यालय, रांची इस समारोह की मुख्य अतिथि थीं । मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में हिंदी के बढ़ते प्रभाव का उल्लेख बहुत ही रोचक ढंग से किया और कहा कि हिंदी सभी के दिलों में बसने वाली भाषा है । श्री रौघवेंद्र कुमार राजू, विमानपत्तन निदेशक ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में भा वि प्रा के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को सलाह दी कि वे पखवाड़े के दौरान आयोजित होनेवाली विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रमों में भाग लें एवं पखवाड़े के बाद भी हिंदी के इस्तेमाल में रुचि बनाए रखें । डॉ. शालीग्राम ओझा ने कहा कि हिंदी बहुत ही वैज्ञानिक भाषा है, यही कारण है कि विदेशों में भी हिंदी अपनी पहचान बना रही है । डॉ. मीरा सिंह ने कहा कि दुनिया भारत को एक उभरता बाजार के रूप में देख रही है और इस बाजार तक पहुंचने का एक मात्र माध्यम है—हिंदी । विमानपत्तन निदेशक द्वारा सभी गणमान्य अतिथियों को स्मृतिचिन्ह प्रदान किए गए । श्री इन्ताज अली, कनिष्ठ कार्यपालक (राजभाषा) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन समारोह संपन्न हुआ ।

दूरदर्शन केंद्र, दिल्ली

दिनांक : 01-09-2012 से 15-09-2012 तक दूरदर्शन केंद्र, दिल्ली में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया । इस केंद्र के अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में काम करने के लिए उत्साहित करने हेतु पखवाड़े के दौरान कई प्रतियोगिताओं और कार्यक्रमों का आयोजन किया गया ।

राजभाषा हिंदी नई संभावनायें विषय पर हिंदी के प्रतिष्ठित विद्वानों, अधिकारियों एवं युवाओं के साथ एक घंटे अवधि की परिचर्चा का सीधा प्रसारण डी.डी. भारती पर दिनांक : 11-09-2012 को किया गया जिसका पुनः प्रसारण दूरदर्शन के राष्ट्रीय चैनल पर दिनांक : 14-09-2012 को किया गया ।

दूरदर्शन केंद्र, लखनऊ

दिनांक 14-09-2012 को दूरदर्शन केंद्र, लखनऊ में हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ किया गया । सर्वप्रथम माननीय डॉ. हरि नारायण नवरंग, उप महानिदेशक ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी दिवस के अवसर पर बधाई दी तथा केंद्रीय गृहमंत्री माननीय श्री सुशील कुमार शिंदे जी का संदेश पढ़कर सुनाया । इस अवसर पर अपील जारी करते हुए उप महानिदेशक महोदय ने कहा कि अपने कार्यों में हिंदी का प्रयोग करना हमारा संवैधानिक एवं नैतिक दायित्व है । दूरदर्शन अपने कार्यक्रमों के माध्यम से हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है । दूरदर्शन द्वारा हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में प्रसारण होता है । भारतीय भाषाओं में उत्कृष्ट प्रसारण के साथ हम भारत के संविधान में निहित भावना के विकास के लिए सतत प्रयत्नशील हैं । उन्होंने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपील की, कि—हिंदी दिवस के अवसर पर हम यह संकल्प लें कि आज से अपने सभी व्यक्तिगत दावे यथा-आकस्मिक छुट्टी, अर्जित छुट्टी, यात्रा भत्ता, छुट्टी यात्रा रियायत, छुट्टी नकदीकरण, शिक्षण शुल्क तथा चिकित्सा प्रतिपूर्ति आदि हिंदी में ही करेंगे ।

आकाशवाणी, जोधपुर

आकाशवाणी, जोधपुर में दिनांक 14 सितम्बर, 2012 से 28 सितम्बर, 2012 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया । दिनांक 14-09-2012 को हिंदी दिवस मनाया गया । हिंदी दिवस पर सभी अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित हुए तथा हिंदी के प्रति अपने विचार व्यक्त किये । सहायक निदेशक (अभियांत्रिकी) एवं केंद्राध्यक्ष श्री रमेश कुमार ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि हिंदी को तहेदिल से अपनाना ही हिंदी के प्रति मान सम्मान होगा तथा हम सभी अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने का संकल्प लें और मिलकर ऐसे वातावरण का निर्माण करें जिसमें सब अपना अधिक से अधिक काम हिंदी में करें । विभिन्न प्रकार की उच्च शिक्षा एवं परीक्षाएं भी राजभाषा हिंदी में होनी चाहिए, ताकि लिखने, पढ़ने एवं समझने में आसानी हो ।

कार्यालय अध्यक्ष महोदय ने माननीय आकाशवाणी महानिदेशक श्री एल. डी. मंडोलोई जी की हिंदी दिवस पर जारी अपील एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री जवाहर सरकार का हिंदी दिवस पर संदेश भी पढ़ कर सुनाया ।

सिंडीकेट बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, आर-1/77, नया राजनगर, गाजियाबाद

14 सितंबर हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में हमारे कार्यालय द्वारा 01 सितंबर, 2012 से 14 सितंबर, 2012 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया । हिंदी पखवाड़े के दौरान स्टाफ सदस्यों के मध्य प्रधान कार्यालय के दिशा-निर्देशों के अनुसार हिंदी में विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई । इन प्रतियोगिताओं में स्थानीय और गाजियाबाद के निकट की शाखाओं के कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया ।

क्षेत्रीय कार्यालय में शुक्रवार, दिनांक 14 सितंबर, 2012 को हिंदी दिवस और पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया । समारोह की अध्यक्षता बैंक के उप महाप्रबंधक, श्री विनोद कुमार गुप्ता ने की । दिल्ली विश्वविद्यालय, हिंदी विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर एवं प्रख्यात साहित्यकार डॉ. राजेंद्र गौतम समारोह में मुख्य अतिथि थे ।

सहायक महा प्रबंधक श्री एस.पी. शर्मा ने हिंदी की उपयोगिता एवं प्रासंगिकता के बारे में अपने विचार प्रकट किये । उन्होंने कहा कि दैनिक कार्यों में जहां भी संभव हो, हिंदी का प्रयोग किया जाना चाहिए ।

मुख्य अतिथि डॉ. राजेंद्र गौतम ने अपने संबोधन में हिंदी को राजभाषा बनाने के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विस्तार से वर्णन किया । उन्होंने राष्ट्रभाषा और राजभाषा के अंतर को भी स्पष्ट किया । लेकिन कहा कि राष्ट्रीय स्तर पर राजभाषा ही महत्वपूर्ण है । उन्होंने कहा कि कोई भी शब्द कठिन या आसान नहीं होता है । कठिन से कठिन शब्द भी लगातार व्यवहार में आते रहने से आसान हो जाता है । शब्द के प्रयोग से कठिन शब्द भी आसान हो जाता है । डॉ. गौतम ने कहा कि यदि भारत की सरकारी तंत्र हिंदी में कार्य करना शुरू करें, तो हिंदी अपने आप आगे बढ़ेगी । उन्होंने हिंदी कार्यशालाएं आयोजित करने के परिणामों के महत्व पर भी प्रकाश डाला ।

अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में उप महा प्रबंधक श्री वी. के. गुप्ता ने कहा कि हिंदी हमारे अंदर से निकलने वाली भाषा है । उन्होंने डॉ. गौतम द्वारा प्रकट किये गए विचारों को अपनाने का आह्वान किया । उन्होंने कहा कि यदि रुचि हो तो कुछ भी असंभव नहीं है । उन्होंने आगे कहा महापुरुषों, चिंतकों के साथ विचार-विमर्श करते हैं, तो उसका अच्छा प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है । उन्होंने कहा कि हिंदी एक समुद्र की तरह है जहां सभी शब्द उपलब्ध हैं ।

भारतीय विमान पत्तन प्राधिकरण, जयपुर

पखवाड़े का शुभारंभ दिनांक 14 सितंबर, 2012 को निदेशक विमानपत्तन, जयपुर हवाई अड्डा श्री डी. पॉल मणिक्कम, श्री जी.डी. गुप्ता, महाप्रबंधक (अभि-सिविल) तथा उपस्थित अनुभागाध्यक्षों द्वारा दीप प्रज्जवलित कर किया गया । श्री निशान्त यादव, कनिष्ठ कार्यपालक (राजभाषा) ने सभी उपस्थितों का स्वागत करते हुए कहा कि हिंदी अब वैश्विक रूप धारण कर रही है और अब हिंदी विश्व की दूसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बन चुकी है । जयपुर एयरपोर्ट पर लगभग 100 प्रतिशत कार्य हिंदी में किया जा रहा है ।

श्री जी.डी. गुप्ता ने अपने संबोधन में सभी को हिंदी दिवस की बधाई देते हुए कहा कि हम सभी को अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में ही करना चाहिए । उन्होंने शिक्षा व्यवस्था में अंग्रेजी के बढ़ते वर्चस्व पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि हमारी उच्च शिक्षा हिंदी माध्यम में भी होनी चाहिए ताकि व्यक्ति की ऊर्जा का उपयोग दूसरी भाषा को सीखने के बजाय विषय को सीखने में हो सके ।

निदेशक विमानपत्तन श्री डी. पॉल मणिक्कम ने अपने संबोधन में हिंदी पखवाड़े के आयोजन के महत्व पर प्रकाश डाला और कहा कि जयपुर एयरपोर्ट पर हिंदी के प्रयोग के लिए अधिक से अधिक संभावनाएं तलाश की जाती हैं । इसी कड़ी में हमने भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण की वेबसाइट पर जयपुर एयरपोर्ट से संबंधित जानकारी जो अभी केवल अंग्रेजी में है उसे द्विभाषी (हिंदी एवं अंग्रेजी) में उपलब्ध कराने का निर्णय लिया है तथा यह कार्य शीघ्र ही संपन्न हो जाएगा ।

हिंदी पखवाड़े के दौरान निबंध लेखन, अनुवाद प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता तथा हिंदी श्रुतलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 55 अधिकारियों व कर्मचारियों ने भाग लिया ।

कर्मचारी राज्य बीमा अस्पताल, नोयडा

निगम के कर्मचारी राज्य बीमा अस्पताल, नोयडा तथा इसके अधीनस्थ क.रा. बीमा औषधालयों में 01 सितंबर से 15 सितंबर, 2012 तक राजभाषा पखवाड़े का आयोजन किया गया। पखवाड़े के संदर्भ में निगम के महानिदेशक महोदय की ओर से प्राप्त अपील सभी निगम कार्मिकों में परिचालित की गई। मुख्यालय के दिशानिर्देशानुसार सभी कार्यालय परिसरों के मुख्य द्वार पर बैनर प्रदर्शित किया गया। अस्पताल कार्मिकों के मन में हिंदी के प्रयोग, प्रचार व प्रसार के प्रति अभिरूचि पैदा करने के लिए इस दौरान विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में पर्याप्त संख्या में हिंदी/अहिंदी भाषी कार्मिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

पखवाड़े की समाप्ति के अवसर पर 14 सितंबर, 2012 की अपराह्न में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन नए भवन परिसर में किया गया।

अस्पताल के निदेशक (चिकित्सा) ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि हिंदी जन-जन की भाषा, देश की संपर्क भाषा और संघ की राजभाषा तो है ही राष्ट्रीय अस्मिता, स्वाधीनता और स्वाभिमान का प्रतीक भी है। सरकारी कामकाज में इसका प्रयोग संकोच और झिझक का नहीं गर्व का विषय होना चाहिए, ताकि बीमाकृत मरीजों को स्वास्थ्य योजनाओं संबंधित पूरी जानकारी मिले तथा वह एवं उसका परिवार पूर्ण रूप से लाभान्वित हो सके।

मुख्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली

कर्मचारी राज्य बीमा निगम के दिल्ली स्थित मुख्यालय में दिनांक 14-09-2012 को हिंदी दिवस समारोह एवं कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। समारोह के आरंभ में निगम के महानिदेशक श्री ए.के. अग्रवाल एवं श्रम और रोजगार मंत्रालय के संयुक्त सचिव श्री चन्द्र प्रकाश ने पंचदीप प्रज्वलित किया। अपने उद्बोधन में महानिदेशक ने कहा कि इसके पहले मैं विभिन्न मंत्रालयों में था, यहां आने पर मुझे पता चला कि निगम में हिंदी में कुछ ज्यादा ही काम हो रहा है। मैं बंगाल में था, वहां ऐसी कोई बंदिश नहीं है कि सारा काम केवल बंगला में हो, वे हिंदी में काम करने के लिए उत्साहित करते हैं। अंग्रेजी जीविका की भाषा बन गई है, इसके प्रयोग के लिए एक नेशनल प्रेशर है किंतु हमें हिंदी का प्रयोग जारी रखना चाहिए ताकि हमारी भाषा कहीं खो न जाए। हिंदी दिवस, हिंदी पखवाड़े आदि के माध्यम से जागरूकता लाई जाए ताकि हिंदी को लोग भूल न जाएं। हमें हिंदी के विकास के लिए निरंतर कोशिश करते रहना चाहिए।

श्री चंद्र प्रकाश ने अपने संबोधन में कहा कि निगम में हिंदी दिवस के इस भव्य आयोजन से उन्हें बहुत खुशी हुई। हिंदी इस देश में सबसे अधिक लोगों द्वारा बोली जाती है। इसीलिए इसे राजभाषा बनाया गया। आप अपने टिप्पण/आलेखन में हिंदी का प्रयोग करें ताकि ऐसे लोग जिनके माता-पिता उन्हें अंग्रेजी माध्यम से पढ़ा नहीं सके, हिंदी में काम करने में शर्मिंदा न हों। हिंदी एक समृद्ध भाषा है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि हमारे देश में अंग्रेजी में बालेने को प्रेस्टिज समझा जाता है। अंग्रेजी तो हमारी गुलामी की निशानी है। उन्होंने बताया कि मार्क तुली ने एक बार कहा था "मैं प्रश्न हिंदी में पूछता हूँ, यहां के लोग उत्तर अंग्रेजी में देते हैं।" विदेशों में ऐसी स्थिति नहीं है। वहां भाषा को आत्मगौरव से जोड़ा जाता है। आप सभी ऐसा प्रभाव पैदा करें कि हिंदी बढ़े। निगम मुख्यालय की हिंदी पत्रिका "पंचदीप भारती" के चौथे अंक का विमोचन करते हुए उन्होंने निगम कार्मिकों की हिंदी के प्रति रुचि की सराहना की।

श्री बी.के. साहू, बीमा आयुक्त ने कहा कि मुख्यालय में पहली बार कवि सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। इससे हिंदी के प्रति लोगों की रुचि बढ़ेगी। निगम द्वारा हिंदी के लिए किए जा रहे कार्यों की सर्वत्र प्रशंसा हुई है। हमारे कार्यालयों को राजभाषा विभाग, नराकास, केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद् द्वारा पुरस्कृत किया है।

इस अवसर पर महानिदेशक एवं संयुक्त सचिव द्वारा हिंदी प्रतियोगिताओं में विजेता कार्मिकों को नकद पुरस्कार प्रदान किया गया। डॉ. पन्ना प्रसाद, संयुक्त निदेशक (रा.भा.) ने कर्मचारी राज्य बीमा निगम में राजभाषा हिंदी की प्रगति से संबंधित आख्या प्रस्तुत की। अंत में एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें डॉ. गोविन्द व्यास, श्री महेन्द्र अजनबी, श्री वेद प्रकाश और डॉ. नूतन कपूर ने काव्य पाठ किया। कार्यक्रम का संचालन राखी सैनी एवं श्याम सुंदर कथूरिया ने किया।

संगोष्ठी/सम्मेलन

9वां विश्व हिंदी सम्मेलन–एक रिपोर्ट

–सुनीति शर्मा, उप सचिव (हिंदी)
विदेश मंत्रालय

महात्मा गांधी जी की कर्मभूमि दक्षिण अफ्रीका के 'जोहान्सबर्ग' शहर में 22-24 सितंबर, 2012 तक 9वें विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया । दक्षिण अफ्रीका में ''हिंदी शिक्षा संघ'' नामक संस्था सम्मेलन में मुख्य सहयोगी संस्था थी । सम्मेलन के समस्त आयोजन में इस संस्था ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया ।

यह सम्मेलन जोहान्सबर्ग के सैंडटन कन्वेंशन सेंटर में आयोजित किया गया । दक्षिण अफ्रीका और भारत के ऐतिहासिक तथा निरंतर मजबूत होते संबंधों के दृष्टिगत आचार-विचार और चिंतन की दृष्टि से इस सम्मेलन को भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी को समर्पित करते हुए सम्मेलन के समग्र स्थल को ''गांधी ग्राम'' नाम दिया गया । सम्मेलन के मुख्य कार्यक्रम जैसे—'उद्घाटन' व 'समापन समारोह' जिस हॉल में आयोजित किए गए उसे ''नेल्सन मंडेला सभागार'' नाम दिया गया । इसी सभागार में पूर्ण प्रारंभिक सत्र, सांस्कृतिक-कार्यक्रम, समापन-पूर्ण सत्र भी आयोजित किए गए । सम्मेलन में मॉरीशस के कला एवं संस्कृति मंत्री श्री मुकेश्वर चुन्नी, दक्षिण अफ्रीका के वित्त मंत्री श्री प्रवीण गोर्धन, माननीय सांसद श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी, दक्षिण अफ्रीका में भारत के उच्चायुक्त श्री वीरेन्द्र गुप्ता, हिंदी शिक्षा संघ की श्रीमती रामबली तथा अन्य विद्वानजन एवं गणमान्य लोग उपस्थित थे ।

उद्घाटन समारोह के बाद माननीय विदेश राज्य मंत्री (भारत सरकार) श्रीमती प्रनीत कौर तथा वित्त मंत्री (दक्षिण अफ्रीका) श्री प्रवीन गोर्धन ने हिंदी पुस्तकों, साहित्य, सूचना प्रौद्योगिकी आदि पर प्रदर्शनी का उद्घाटन किया । ये प्रदर्शनियां केंद्रीय हिंदी संस्थान, गांधी-स्मृति, सी-डैक, राष्ट्रीय अभिलेखागार द्वारा लगाई गई जिसका मुख्य समन्वय कार्य महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के तत्वाधान में किया गया ।

इसके साथ ही, दक्षिण अफ्रीका में हिंदी शिक्षा संघ के संस्थापक जाने-माने समाजसेवी, विचारक, चिंतक स्वर्गीय पंडित नरदेव वेदालंकार की प्रतिमा का अनावरण किया गया ।

इस सम्मेलन की मुख्य विषय वस्तु थी : ''भाषा की अस्मिता और हिंदी का वैश्विक संदर्भ'' । सम्मेलन को दो भागों के रूप में देखा जा सकता है : एक—शैक्षिक सत्र, जो विचार विमर्श का हिस्सा था और दूसरा सांस्कृतिक पक्ष, जिसमें भारत की संस्कृति की झलक थी ।

शैक्षिक सत्र से संबंधित भाग में 9 विषय रखे गए थे जो निम्न प्रकार से थे—

1. महात्मा गांधी की भाषा दृष्टि और वर्तमान का संदर्भ
2. अफ्रीका में हिंदी शिक्षा-युवाओं का योगदान
3. सूचना प्रौद्योगिकी, देवनागरी लिपि और हिंदी का सामर्थ्य
4. हिंदी के विकास में विदेशी/प्रवासी लेखकों की भूमिका
5. लोकतंत्र और मीडिया की भाषा के रूप में हिंदी
6. ज्ञान-विज्ञान और रोजगार की भाषा के रूप में हिंदी
7. विदेश में भारत : भारतीय ग्रंथों की भूमिका
8. हिंदी : फिल्म, रंगमंच और मंच की भाषा
9. हिंदी के प्रसार में अनुवाद की भूमिका

उपर्युक्त तीन-तीन विषयों पर समानान्तर रूप से कुल 9 सत्र चले । इन 9 सत्रों में से प्रत्येक सत्र में मुख्य रूप से विशिष्ट अतिथि, अध्यक्ष, बीज वक्ता तथा कुछ पैनल वक्ता रहे और सभी विषयों पर खुलकर चर्चाएं हुईं । इनके अतिरिक्त, सभागार में उपस्थित सभी प्रतिभागियों ने

अपनी-अपनी रुचि के सत्रों में भाग लिया । प्रत्येक सत्र के लिए ढाई-ढाई घंटे का समय रखा गया ।

इन 9 सत्रों के अलावा समानान्तर रूप से दो-दो ''आलेख पठन'' के सत्र भी चले । इस प्रकार आलेख पठन के कुल 6 सत्र रहे ।

सम्मेलन के शैक्षिक सत्रों के आयोजन के स्थलों को शांति, न्याय, अहिंसा, सत्य, ज्ञान और नीति कक्ष नाम दिया गया ।

साथ ही प्रदर्शनी हॉल के सामने ''पुस्तक विमोचन'' के लिए एक स्थाई मंच रखा गया जिसमें माननीय मंत्री ने विभिन्न लेखकों की पुस्तकों का विमोचन किया । प्रदर्शनी और पुस्तक विमोचन से संबंधित स्थल को ''सत्य मंडप'' के रूप में नामित किया गया ।

सम्मेलन का दूसरा भाग इसका सांस्कृतिक पक्ष था । 22 व 23 सितंबर 2012 को सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया । यह कार्यक्रम ''भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्'', स्थानीय कलाकारों और भारत की सांस्कृतिक संस्था ''टीम वर्क'' के सहयोग से किया गया । इस दौरान शेखर सेन कृत 'कबीर' नामक नाटक का मंचन किया गया । साथ ही, दक्षिण अफ्रीकी कलाकारों द्वारा भारतीय नृत्य की विविध विधाओं की मिली-जुली मनोहारी प्रस्तुति ने सभागार को अनायास ही मंत्रमुग्ध कर दिया । भारतीय नृत्यांगनाओं की शास्त्रीय नृत्य की प्रस्तुति देखते ही बनती थी ।

इसके अतिरिक्त 24 सितंबर को समापन समारोह के बाद भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के सौजन्य से 'कवि सम्मेलन' का आयोजन भी किया गया ।

24 सितंबर, 2012 को समापन समारोह से पूर्व ''समापन पूर्ण सत्र'' आयोजित किया जिसमें विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस तथा महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा द्वारा संक्षिप्त प्रस्तुति रखी गई । माननीय विदेश राज्य मंत्री श्रीमती प्रनीत कौर जी की अध्यक्षता में सम्मेलन का ''मुख्य समापन समारोह'' आयोजित किया गया ।

इस दौरान 20 भारतीय व 20 विदेशी हिंदी विद्वानों को 'विश्व हिंदी सम्मान' से सम्मानित किया गया । विभिन्न शैक्षिक सत्रों के बारे में संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की गयी और तदनुसार संकल्प पारित किए गए—

1. मॉरिशस में स्थापित विश्व हिंदी सचिवालय विभिन्न देशों के हिंदी शिक्षण से संबद्ध विश्वविद्यालयों, पाठशालाओं एवं शैक्षिक संस्थानों से संबंधित एक डाटाबेस का एक वृहत स्रोत केंद्र स्थापित करे ।
2. विश्व हिंदी सचिवालय विश्व भर के हिंदी विद्वानों, लेखकों तथा हिंदी के प्रचार-प्रसार से संबद्ध लोगों का भी एक डाटाबेस तैयार करे ।
3. हिंदी भाषा की सूचना प्रौद्योगिकी के साथ अनुरुपता को देखते हुए सूचना प्रौद्योगिकी संस्थानों द्वारा हिंदी भाषा संबंधी उपकरण विकसित करने का महत्वपूर्ण कार्य जारी रखा जाए । इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हर संभव सहायता प्रदान की जाए ।
4. विदेशों में हिंदी शिक्षण के लिए एक मानक पाठ्यक्रम तैयार किए जाने के लिए महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा को अधिकृत किया जाता है ।
5. अफ्रीका में हिंदी शिक्षण को प्रोत्साहित करने के लिए और बदलते हुए वैश्विक परिवेश, युवा वर्ग की रुचि एवं आकांक्षाओं को देखते हुए उपयुक्त साहित्य एवं पुस्तकें तैयार की जाएं ।
6. सूचना प्रौद्योगिकी में देवनागरी लिपि के प्रयोग पर पर्याप्त सॉफ्टवेयर तैयार किए जाएं ताकि इसका लाभ विश्व भर के हिंदी भाषियों और प्रेमियों को मिल सके ।
7. अनुवाद की महत्ता देखते हुए अनुवाद के विभिन्न आयामों के संदर्भ में अनुसंधान की आवश्यकता है, अतः इस दिशा में ठोस कार्रवाई की जाए ।
8. विश्व हिंदी सम्मेलनों के बीच अंतराल में विभिन्न देशों में विशिष्ट विषयों पर क्षेत्रीय सम्मेलन आयोजित किए जाते हैं । इनका उद्देश्य उनके अपने-अपने क्षेत्रों में हिंदी शिक्षण और हिंदी के प्रसार में आने वाली कठिनाइयों का समाधान खोजना है । सम्मेलन ने इसकी सराहना करते हुए इस बात पर बल दिया कि इस कार्य को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ।
9. विश्व हिंदी सम्मेलनों में भारतीय और विदेशी विद्वानों को सम्मानित करने की परंपरा रही है । इस विशिष्ट सम्मान के अनुरूप ही इन सम्मेलनों में विद्वानों को भेंट किए जाने वाले पुरस्कार अथवा सम्मान को गरिमापूर्ण नाम देते हुए इसे 'विश्व हिंदी सम्मान' कहा जाए ।

10. विगत में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलनों में पारित प्रस्ताव को रेखांकित करते हुए हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ में अधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता प्रदान किए जाने के लिए समयबद्ध कार्रवाई सुनिश्चित की जाए ।

11. दो विश्व हिंदी सम्मेलनों के आयोजन के बीच यथासंभव अधिकतम तीन वर्ष का अंतराल रहे ।

12. दसवां विश्व हिंदी सम्मेलन भारत में आयोजित किया जाए ।

दक्षिण मध्य रेलवे, सिकंदराबाद

यांत्रिक विभाग द्वारा हिंदी में तकनीकी संगोष्ठी आयोजित

दक्षिण मध्य रेलवे, प्रधान कार्यालय के यांत्रिक विभाग द्वारा दिनांक 12-7-2012 को हिंदी में एक तकनीकी संगोष्ठी आयोजित की गई ।

संगोष्ठी में यांत्रिक विभाग के अधिकारियों/कर्मचारियों ने स्नेहन तेल, ईंधन की खपत, ऊर्जा की बचत, दुर्घटनाओं की रोकथाम के उपाय, रेल संरक्षा आदि जैसे विभिन्न विषयों पर पावर-पाइंट के जरिए अपने विचार प्रस्तुत किए । उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर/डीजल श्री दुर्गाप्रसाद ने संगोष्ठी का संचालन करते हुए कहा कि यांत्रिक विभाग राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार में सदैव अग्रसर रहा है और आगे भी रहेगा ।

श्रीमती मंगला अभ्यंकर, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) ने इस अवसर पर अपने संबोधन में कहा कि इस प्रकार की संगोष्ठी के आयोजन का उद्देश्य यही है कि हिंदी का प्रयोग केवल फाइलों तक ही सीमित न रहे, बल्कि विचारों के आदान-प्रदान में भी हो ।

मुख्य अतिथि के रूप में पधारे श्री महेशचंद्र, मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं भंडार नियंत्रक ने अपने संबोधन में कहा कि यांत्रिक विभाग द्वारा इस प्रकार की पहल राजभाषा के प्रयोग-प्रसार की दिशा में उठाया गया एक सराहनीय कदम है । इस संगोष्ठी के आयोजन से दो उद्देश्य सफल होते हैं, एक संबंधित विभाग के कार्यकलापों की जानकारी और दूसरा राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार । इससे हिंदी के लिए अनुकूल वातावरण तैयार होगा, जिससे और अधिकारी व कर्मचारी अपना अधिकाधिक कार्य राजभाषा हिंदी में करेंगे ।

श्री पी. सी. गजभिए, मुख्य यांत्रिक इंजीनियर ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि हिंदीतर भाषी होने के बावजूद वक्ताओं ने राजभाषा अनुभाग के सहयोग के बिना, हिंदी में अपना पावर-पाइंट प्रस्तुतीकरण दिया, जो काफी रोचक और सहज था । उन्होंने आशा व्यक्त की कि आगे भी यांत्रिक विभाग के अधिकारी और कर्मचारी राजभाषा के प्रयोग-प्रसार में अपना योगदान देंगे ।

सुरक्षा विभाग द्वारा हिंदी में तकनीकी संगोष्ठी आयोजित

दक्षिण मध्य रेलवे के सुरक्षा विभाग द्वारा दिनांक 13-7-2012 को रेल सुरक्षा बल प्रशिक्षण केंद्र/मौलाअली में हिंदी में एक संगोष्ठी आयोजित की गई । संगोष्ठी का विषय था 'हिरासत में लिए गए व्यक्ति के मानव-अधिकार' । इस संगोष्ठी की अध्यक्षता रेल सुरक्षा बल प्रशिक्षण केंद्र के प्रिंसिपल श्री बी. बी. मिश्रा ने की । इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में प्रधान कार्यालय से श्रीमती मंगला अभ्यंकर, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) ने इस अवसर पर सरकार की राजभाषा नीति और नियमों की संक्षिप्त जानकारी देते हुए कहा कि सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में, यह सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का दायित्व है कि अपने सरकारी काम-काज हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें और राजभाषा के प्रयोग-प्रसार में अपना योगदान दें ।

रेल सुरक्षा बल प्रशिक्षण केंद्र के प्रिंसिपल श्री बी. बी. मिश्रा ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि रेलों पर रेलवे सुरक्षा बल की भूमिका महत्वपूर्ण है । इस प्रशिक्षण केंद्र में सभी क्षेत्रों से प्रशिक्षणार्थी आते हैं । अतः यहां राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग सार्थक है । उन्होंने कहा कि सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार के लिए सरकार द्वारा चलायी जा रही विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं का लाभ उठाते हुए अपना अधिकाधिक कार्य सरल हिंदी में करना चाहिए । उन्होंने राजभाषा के क्षेत्र में दिए गए सहयोग के लिए राजभाषा संगठन के प्रति आभार व्यक्त किया ।

इंजीनियरी विभाग में हिंदी में संगोष्ठी का आयोजन

दक्षिण मध्य रेलवे, प्रधान कार्यालय के इंजीनियरी विभाग द्वारा दिनांक 19-7-2012 को हिंदी में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया । संगोष्ठी की अध्यक्षता प्रमुख मुख्य इंजीनियर, श्री प्रदीप कुमार ने की । मुख्य अतिथि के रूप में श्री महेश चंद्र, मुख्य राजभाषा अधिकारी व भंडार नियंत्रक उपस्थित थे । इस संगोष्ठी की विशेषता यह थी कि

इसमें न केवल इंजीनियरी विभाग से संबंधित विषयों पर, बल्कि वित्त-प्रबंधन, सूचना अधिकार अधिनियम, स्वास्थ्य आदि से संबंधित विषयों पर भी वक्ताओं ने अपना वक्तव्य दिया ।

श्री महेश चंद्र, मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं भंडार नियंत्रक ने अपने संबोधन में इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि इंजीनियरी विभाग द्वारा, जिसमें मूलत: तकनीकी स्वरूप का काम होता है, स्वास्थ्य, वित्त-प्रबंधन और सूचना अधिकार अधिनियम जैसे जन-सामान्य विषयों पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया । इससे न केवल विविध विषयों की जानकारी मिली, बल्कि जिस सहज और बोलचाल की हिंदी में वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए हैं, उससे अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में काम करने की प्रेरणा भी अवश्य मिलेगी ।

श्री प्रदीप कुमार, प्रमुख मुख्य इंजीनियर ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में संगोष्ठी के वक्ताओं को बधाई देते हुए कहा कि यह संगोष्ठी काफी लाभदायक रही । उन्होंने रेलवे-तर वक्ता डॉ. जयकृष्ण को उनके प्रभावशाली वक्तव्य के लिए धन्यवाद दिया । उन्होंने कहा कि इंजीनियरी विभाग राजभाषा के प्रयोग-प्रसार में अग्रणी रहा है और "ग" क्षेत्र में होते हुए भी, इस कार्यालय में राजभाषा हिंदी में अच्छा कार्य हो रहा है । उन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में सहयोग के लिए राजभाषा संगठन को धन्यवाद दिया ।

मध्य रेल के पुणे मंडल

स्वास्थ्य संगोष्ठी तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

दिनांक 8 अगस्त, 2012 को मध्य रेल के पुणे मंडल पर राजभाषा विभाग द्वारा मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय में "बदलती जीवन शैली और बीमारियां" विषय पर हिंदी एक स्वास्थ्य संगोष्ठी का आयोजन किया गया ।

"बदलती जीवन शैली और बीमारियां" विषय पर मध्य रेल चिकित्सालय, पुणे वरिष्ठ मंडल चिकित्सा अधिकारी (शल्यचिकित्सा) डॉ. राजकुमार ने पॉवर प्वाइंट के माध्यम से अत्यंत आसान हिंदी में आज से पचास साल पहले की जीवन शैली, उपलब्ध सुविधाओं, दवाइयों, बीमारियों तथा आदतों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में तुलना करते हुए रोबोटिक सर्जरी जैसी चिकित्सा विज्ञान की नवीनतम उपलब्धियों पर प्रकाश डाला । स्वास्थ्य संबंधी सावधानियों एव बीमारियों से यथासंभव बचाव के दृष्टिकोण से यह संगोष्ठी मंडल के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए अत्यंत लाभप्रद रही ।

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, शांति मार्ग, श्यामला हिल्स, भोपाल-462002

नराकास के अध्यक्षों/सचिवों का दो दिवसीय सम्मेलन

दिनांक 20 नवंबर, 2012 को मध्य तथा पश्चिम क्षेत्रीय नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के अध्यक्षों/सचिवों का दो दिवसीय सम्मलेन एनआईटीटीटीआर भोपाल में सम्पन्न हुआ । कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. नामवर सिंह ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि आज राजभाषा हिंदी अस्वथ्य होकर अस्पताल में पड़ी है आज हिंदी का नाम राजभाषा सिर्फ औपचारिकता के लिए रह गया है । पूर्व में कार्यालयों में लोग हिंदी में कार्य करते थे लेकिन आज ऐसा लगता है कि वे शासकीय नियमों की बाध्यता के तहत कार्य कर रहे हैं । भूमण्डलीकरण के इस दौर में वैश्विक अर्थतंत्र मजबूत हुआ है एव उसके केंद्र में अंग्रेजी है कोई भाषा पूर्णतया शुद्ध नहीं हैं सभी भाषाऐं मिश्रित हैं । हिंदी की सबसे बड़ी ताकत हमारी बोलियां है । पूर्व में जो शब्दावली बनाई गई थी । उसे आज दीमक चाट रही है । आपने स्थाई हिंदी शब्दकोश बनाने की वकालत की । आपने कहा कि सिर्फ हिंदी दिवस मनाने से काम नहीं चलेगा । हमें समर्पण व प्रतिबद्धता से इसके विकास के लिए कार्य करना होगा । नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष व संस्थान के निदेशक प्रो. विजय अग्रवाल ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि आज पूरे देश में हिंदी के बारे में निराशाजनक स्थिति है और डॉ. नामवर सिंह जी एक प्रेरणा स्रोत की तरह कार्य कर रहे हैं । प्रो. अग्रवाल ने कहा कि भाषा और संस्कृति बहती नदी की तरह है, जिसमें नये-नये शब्द व संस्कृति मिल रही है । भोपाल में हिंदी उर्दू साथ-साथ चलते हैं । हमें दूसरी भाषा से आए हुए शब्दों से परहेज न करते हुए उन्हें आत्मसात करना चाहिए । साहित्य सौहार्द पैदा करता है व हमें संवेदनशील बनाता है । राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली के निदेशक, श्री जयप्रकाश कर्दम ने राजभाषा कार्यान्वयन की दशा एवं दिशा पर व्याख्यान देते हुए कहा कि राजभाषा की नीति का महत्वपूर्ण भाग उसका कार्यान्वयन है । कोई भी नीति तभी सफल होगी जब उसका कार्यान्वयन सकारात्मक हो । बाजार और कार्यालय की हिंदी में अंतर है इसमें समन्वय की आवश्यकता है । भाषा में सरलता और सहजता जरूरी है । यह कहने में गर्व होता है कि तमाम दुष्प्रचार के बाद भी हिंदी तेजी से उभर रही है । आज के कार्यक्रम में प्रो. संजय अग्रवाल ने दैनिक

कामकाज में कम्प्यूटर पर हिंदी का अनुप्रयोग तथा यूनिकोड का प्रयोग, श्री रामनिवास शुक्ला उप निदेशक ने संसदीय राजभाषा समिति की निरीक्षण प्रश्नावली एवं राजभाषा अधिनियम का विवरण देते हुए कहा कि हिंदी संस्कार, सभ्यता एवं संस्कृति की वाहक है । श्री एस. के. स्याल ने राजभाषा की पत्रिकाओं का स्वरूप एवं उसकी उपयोगिता पर व्याख्यान दिया । अंत में खुला मंच का आयोजन किया गया जिसमें विशेषज्ञों ने श्रोताओं के प्रश्नों के उत्तर दिये । आज के कार्यक्रम में मध्य प्रदेश छत्तीसगढ़ एवं राजस्थान के नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के अध्यक्षों व सचिवों सहित श्री उमेश सिंह, अध्यक्ष, नराकास बैंक, श्री एस. एस. सोलंकी, डॉ. पी. के. पुरोहित एवं श्री एस. एस. अस्थाना भी उपस्थित थे । समापन कार्यक्रम का आभार श्रीमती साधना त्रिपाठी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (मध्य क्षेत्र) भोपाल ने किया और कार्यक्रम का संचालन श्रीमती अनिता लाला ने किया । कल दिनांक 21 नवंबर, 2012 को प्रात: 10.30 बजे अंदाज़-ए-बयाँ और ..... कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा ।

बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय, जीवन भारती, लेवल-5, टावर-1, 124, कनॉट सर्कस (नई दिल्ली)

बैंक में हिंदी का प्रगामी प्रयोग अंचल की शाखाओं में कार्यरत सहायक महाप्रबंधक/मुख्य प्रबंधकों हेतु राजभाषा संगोष्ठी

दिनांक 18 अगस्त, 2012 को "सूचना का अधिकार" विषय पर अंचल की शाखाओं में कार्यरत सहायक महाप्रबंधकों/मुख्य प्रबंधकों हेतु राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया ।

संगोष्ठी में श्री प्रदीप कुमार शर्मा, अवर सचिव संसदीय राजभाषा समिति को मुख्य अतिथि ने बैंक ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित ऐसी राजभाषा संगोष्ठी की सराहना की एवं अपने संबोधन के दौरान उन्होंने भारत सरकार एवं संसदीय राजभाषा समिति की अपेक्षाओं एवं नवोन्मेषी योजनाओं से अवगत कराते हुए प्रेरणास्पद उद्धरणों द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन हेतु प्रेरित किया । इस कार्यक्रम में श्री वी. आनन्द, सहायक महाप्रबंधक (विधि) द्वारा "सूचना के अधिकार" विषय पर विस्तार से जानकारी दी । संगोष्ठी के उद्घाटन अवसर पर संबोधित करते हुए श्री आर. सी. खुराना, महाप्रबंधक, नेशनल बैंकिंग समूह (उत्तर) ने भी समस्त प्रतिभागियों को शाखा में हिंदी में अपना कार्य करने हेतु प्रेरित किया ।

'राजभाषा संगोष्ठी' के उपरांत सहायक महाप्रबंधकों/मुख्य प्रबंधकों के बीच 'हिंदी टिप्पण एवं नोटिंग प्रतियोगिता' का आयोजन भी किया गया था । संगोष्ठी में श्री ए. के. वर्मा, आंचलिक प्रबंधक ने भी स्टाफ सदस्यों को हिंदी में कार्य करने हेतु प्रेरित किया ।

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, हरिद्वार रोड, मोहकमपुर, देहरादून

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून के राजभाषा अनुभाग द्वारा समय-समय पर आयोजित कार्यशालाओं, संगोष्ठियों, हिंदी समारोहों तथा स्तरीय हिंदी पत्रिका 'विकल्प' के प्रकाशन की परंपरा की श्रंखला में 'राजभाषा हिंदी विशिष्ट व्याख्यानमाला' के '12वें व्याख्यान' का आयोजन संस्थान के सर सी वी रमन व्याख्यान-कक्ष में किया गया ।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए संस्थान के राजभाषा अनुभाग के प्रभारी एवं संगोष्ठी के संयोजक डॉ. दिनेश चंद्र चमोला ने कहा कि अनुवाद आज के ज्ञान-विज्ञान का सेतु है । संसार के संपूर्ण ज्ञान की अभिव्यक्ति अनुवाद के माध्यम से ही संभव है । भारतीय भाषाओं में एक दूसरे से नैकट्य पाने के लिए भी आज अनुवाद की प्रासंगिकता है । अनुवाद वह गवाक्ष है जिससे हम देश-दुनिया के नवीनतम ज्ञान को आत्मसात कर सकते हैं । अनुवाद व भाषा-विज्ञान की मूलभूत जानकारी सभी के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है ।

मुख्य अतिथि प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी, प्रख्यात भाषा-वैज्ञानिक ने 'अनुवाद और भाषा-विज्ञान' विषय पर अपना विद्वतापूर्ण और सारगर्भित व्याख्यान दिया । प्रो. गोस्वामी ने हिंदी के संदर्भ में सांविधानिक उपबंधों (धारा 343-351) की चर्चा करते हुए बताया कि हिंदी के तीन विशिष्ट संदर्भ हैं--जनपदीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय । जनपदीय संदर्भों में हिंदी देश के दस हिंदी भाषी राज्यों में प्रयुक्त है । राष्ट्रीय संदर्भ में हिंदी के दो स्वरूप हैं--राष्ट्रभाषा व राजभाषा । जहां राष्ट्रभाषा सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान और संपर्क भाषा के रूप में देश के विभिन्न हिस्सों में अपने विशिष्ट स्वरूपों में, जैसे दक्खानी हिंदी के रूप में प्रयुक्त है वहीं राजभाषा के रूप में यह सरकार व जनता के बीच संपर्क-भाषा के रूप में प्रयुक्त है ।

प्रतियोगिता/पुरस्कार

सिंडिकेट बैंक, राजभाषा प्रभाग, प्रधान कार्यालय, मणिपाल-576104

सिंडिकेट बैंक, प्रधान कार्यालय द्वारा प्रति तिमाही 'जागृति' नामक एक हिंदी पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है । इस पत्रिका को पिछले चार वर्षों से प्रति वर्ष भारतीय रिजर्व बैंक से पुरस्कृत होने का गौरव प्राप्त हो रहा है । वर्ष 2010-2011 के लिए इस पत्रिका को सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों एवं वित्तीय संस्थाओं द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिकाओं में तृतीय स्थान प्राप्त करने का गौरव प्राप्त हुआ है ।

आकाशवाणी पणजी (गोवा)

15 अगस्त, 2012 को स्वतंत्रता दिवस पर आकाशवाणी पणजी में केन्द्र निदेशक श्री बी.डी. मजुमदार ने ध्वजारोहण कर भारत सरकार राजभाषा विभाग की हिंदी टिप्पण आलेखन प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत दस अधिकारियों/कर्मचारियों को राष्ट्रध्वज तले पुरस्कार प्रदान किए । श्री बालाजी प्रभुगांवकर समाचार संपादक, श्री संतोष पाडगांवकर प्रसारण निष्पादक, श्रीमती सेलीन एन्ड्रूज प्रसारण निष्पादक, श्री दामोदर आठलेकर प्रसारण निष्पादक, सुश्री एन् फर्नांडिस प्रसारण निष्पादक, श्रीमती सोनिया वेर्लेकर कार्यक्रम सचिव, श्री राजेन्द्र सावंत कैशियर, श्रीमती स्नेहल फोडेकर लेखानुभाग, श्री सीताराम भोगले चैक रायटर और श्री निशाकांत केरकर मल्टी टास्क स्टाफ को वर्ष 2011-2012 के लिए हिंदी में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिए पुरस्कृत किया गया । पुरस्कार प्रदान कर अपने संबोधन में केंद्र निदेशक श्री मजुमदार ने कहा कि भारत की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष और राष्ट्रीय एकता के लिए राष्ट्रभाषा हिंदी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी । राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, डॉ राजेन्द्र प्रसाद और अनेक नेताओं तथा स्वाधीनता सेनानियों की प्रबल अभिलाषा थी कि हिंदी को भारतीय संविधान में राजभाषा का स्थान मिले । भारत की स्वतंत्रता के बाद भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343(1) में हिंदी को भारत सरकार की राजभाषा होने का गौरव प्राप्त हुआ । श्री मजुमदार ने स्वतंत्रता दिवस की शुभकामना देते हुए पुरस्कार प्राप्त करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों की राजभाषा हिंदी से संबंधित सांविधानिक निष्ठा की प्रशंसा की और उन अधिकारियों/कर्मचारियों की भी सराहना की जो हिंदी में काम करते हैं । श्री वेणिमाधव बोरकर सहायक केंद्र निदेशक ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि राष्ट्रध्वज के नीचे राष्ट्रभाषा हिंदी के लिए गर्व का विषय है । यह राष्ट्रध्वज और राष्ट्रभाषा के प्रति हमारे प्रेम का परिचायक है । समारोह का संचालन श्री खगेश्वर प्रसाद यादव, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने किया ।

एनएचपीसी लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता पुरस्कृत

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), द्वारा दिनांक 30-8-2012 को आयोजित वर्ष 2012-13 की पहली छमाही बैठक व पुरस्कार वितरण समारोह में क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता को राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में सराहनीय कार्य किए जाने पर वर्ष 2011-2012 के लिए राजभाषा पुरस्कार प्रदान किया गया । इस पुरस्कार के अंतर्गत इस कार्यालय को राजभाषा शील्ड एवं श्री अजय कुमार बक्सी, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) को प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया ।

यह पुरस्कार विशेष अतिथि के कर कमलों से श्री पी. के. विश्वास, प्रमुख (आई.टी.) एवं श्री अजय कुमार बक्सी, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा संयुक्त रूप से ग्रहण किया गया और श्री अजय कुमार बक्सी, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) को प्रशस्ति पत्र दिया गया ।

प्रशिक्षण

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा अंडमान निकोबार में कंप्यूटर प्रशिक्षण

दिनांक 10 अक्तूबर, 2012 को पोर्ट ब्लेयर में अंडमान निकोबार प्रशासन के राजभाषा विभाग द्वारा भारत सरकार के नई दिल्ली स्थित गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग के तकनीकी कक्ष के सहयोग से यहां के टैगोर राजकीय शिक्षा महाविद्यालय के सभाकक्ष में द्वीप प्रशासन के कर्मचारियों के लिए कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने के बारे में आयोजित तीन दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया । समापन समारोह में अंडमान निकोबार प्रशासन के राजभाषा सचिव श्री वी. के. बेनीवाल मुख्य अतिथि थे । उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों में प्रतिभागिता प्रमाण-पत्रों का वितरण किया ।

अपने संबोधन में राजभाषा सचिव ने प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए दिल्ली से आए विशेषज्ञों का आभार व्यक्त किया । उन्होंने प्रतिभागियों से आग्रह किया कि वे अपने कार्य क्षेत्र में सहयोगी कर्मचारियों के बीच प्रशिक्षण के दौरान हासिल ज्ञान का प्रचार-प्रसार करें ।

टैगोर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. जे. डी. सिंह ने कहा कि यह प्रशिक्षण तब ही उद्देश्यपूर्ण होगा, जब अपने कार्यालयीन कार्यों में प्रशिक्षणार्थी इसे व्यवहार में लाएंगे ।

नई दिल्ली के राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ तकनीकी निदेशक श्री केवल कृष्ण ने कहा कि तीन दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान मास्टर प्रशिक्षकों की पहचान भी की गई है ।

नई दिल्ली के राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ तकनीकी निदेशक श्री केवल कृष्ण तथा नई दिल्ली स्थित गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि श्री हरि ओम शर्मा प्रशिक्षण के स्रोत विशेषज्ञ थे ।

सूचना, प्रचार तथा पर्यटन निदेशालय के हिंदी अनुवादक श्री जय नायर ने समापन समारोह का संचालन किया ।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग तकनीकी कक्ष,
नई दिल्ली-110001 के दिनांक 21-9-2012 का

सं. 12015/4/2012-रा.भा. (त.क.)

विषय : राजभाषा विभाग द्वारा केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के माध्यम से कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम-वर्ष 2012-13

कंप्यूटर पर सामान्यत: प्रयोग होने वाले सॉफ्टवेयरों एमएस वर्ड, एमएस एक्सेल, पावर प्वाइंट तथा सी-डैक द्वारा विकसित सॉफ्टवेयरों यथा श्रुतलेखन, मंत्रा, प्रवाचक तथा वाचांतर व एक अन्य उपयोगी ई-महाशब्दकोश आदि के प्रयोग द्वारा कुशलतापूर्वक हिंदी में कार्य करने संबंधी जानकारी देने के अतिरिक्त कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग के लिए प्रासंगिक अन्य उपयोगी जानकारी देने के लिए राजभाषा विभाग द्वारा केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के माध्यम से पांच दिवसीय कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कराये जाते हैं । वर्ष 2012-13 के दौरान हिंदी में कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सूची अनुलग्नक-क पर दी गई है ।

1.1 इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भारत सरकार के मंत्रालयों/विभागों, राष्ट्रीयकृत बैंकों और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के अधिकारी/कर्मचारी भाग ले सकते हैं ।

2. इन कार्यक्रमों का पाठ्यक्रम, उद्देश्य एवं पात्रता संबंधी विवरण अनुलग्नक-ख पर दिया है । सामान्यत: प्रशिक्षण कार्यक्रमों का समय प्रात: 9.00 बजे से सायं 5.00 बजे तक रहेगा एवं कार्यक्रम की अवधि पांच दिनों की होगी ।

3. प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए नामांकन-प्रपत्र का प्रारूप संलग्न है (अनुलग्नक-ग) । प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के लिए नामित किए जाने वाले कर्मचारी/अधिकारी के वर्तमान कंप्यूटर ज्ञान को देखते हुए आवश्यकता एवं उपयुक्तता के अनुसार उपरोक्त कार्यक्रमों में नामांकन नामांकन-प्रपत्र भरकर कार्यक्रम के आरम्भ होने से कम से कम एक माह पूर्व डाक या ई-मेल द्वारा सूची में दिखाए गए संस्था के संबंधित प्रतिनिधि को भेज दें ।

3.1 प्रशिक्षण केंद्र को भेजे गए नामांकन की प्रति संबंधित मुख्यालय को डाक या ई-मेल द्वारा भेजी जा सकती है ।

4. प्रशिक्षण कार्यक्रम का कैलेण्डर और नामांकन-प्रपत्र राजभाषा विभाग की वेबसाइट (www.rajbhasha.gov.in) पर भी उपलब्ध है । कार्यक्रमों से संबंधित अन्य जानकारी/निर्देश नीचे दिए गए हैं :

- आवास एवं यात्रा खर्च की व्यवस्था प्रशिक्षार्थी के विभाग को वहन करनी होगी ।
- जहां तक संभव हो कृपया अपने निकटतम प्रशिक्षण केंद्र पर प्रशिक्षण के लिए ही प्रशिक्षार्थियों को नामित करें ।
- संबंधित संस्थान से नामांकन स्वीकार हो जाने का पत्र प्राप्त होने पर ही प्रशिक्षार्थियों को प्रशिक्षण में भाग लेने के लिए कार्यमुक्त किया जाए ।
- आवेदन पत्र प्रशिक्षार्थियों के प्रशासनिक कार्यालय से अग्रेषित होकर संबंधित संस्थान में पहुंचना चाहिए ।
- नामांकित प्रशिक्षार्थियों को कार्यालय में काम करने के लिए कंप्यूटर सुविधा उपलब्ध होनी चाहिए तथा वे कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने के लिए इच्छुक हों ।
- नामांकन मंजूर होने पर कार्यालय विशिष्ट के प्रशिक्षणार्थी के लिए सीट आरक्षित कर दी जाती है परंतु कार्यमुक्त न होने या अन्य कारण से प्रशिक्षण के प्रथम दिन बिना अग्रिम सूचना के प्रशिक्षणार्थी के न आने से प्रशिक्षणार्थियों की संख्या क्षमता से कम रह जाती है तथा कभी-कभी संख्या बहुत कम होने पर प्रशिक्षण रद्द करने की स्थिति पैदा हो जाती है जिससे अन्य नामांकित प्रशिक्षणार्थियों को बड़ी असुविधा होती है । अत: प्रशिक्षण कार्यक्रम में नामांकन मंजूर होने के पश्चात्, प्रशिक्षण अवधि के दौरान यदि नामांकित कर्मचारी/अधिकारी को कार्यमुक्त करने में समस्या आती है तो उसके स्थान पर कृपया किसी दूसरे पात्र कर्मचारी/अधिकारी को प्रशिक्षण के लिए भेजा जाए ।

5. सभी मंत्रालयों/विभागों/सरकारी उपक्रमों/राष्ट्रीयकृत बैंकों तथा सभी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों से अनुरोध है कि वह संलग्न हिंदी कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अपने अधीनस्थ/संबद्ध कार्यालयों में व्यापक रूप से प्रचार-प्रसार करवाने का कष्ट करें जिससे अधिक से अधिक अधिकारी/कर्मचारी इन कार्यक्रमों का लाभ उठा सकें । कृपया की गई कार्रवाई से अधोहस्ताक्षरी को सूचित करें ।

अनुलग्नक 'क'

कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने के लिए बेसिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का स्थानवार कैलेंडर

क्रम संख्या	स्थान	दिनांक	
		से	तक
1.	चंडीगढ़	05-11-2012	09-11-2012
		17-12-2012	21-12-2012
		04-02-2013	08-02-2013
2.	पुणे	05-11-2012	09-11-2012
		17-12-2012	21-12-2012
		04-02-2013	08-02-2013
		11-03-2013	15-03-2013
3.	बेंगलुरु	05-11-2012	09-11-2012
		03-12-2012	07-12-2012
		17-12-2012	21-12-2012
		14-01-2013	18-01-2013
		04-02-2013	08-02-2013
		11-03-2013	15-03-2013
4.	विशाखापट्टनम	05-11-2012	09-11-2012
		03-12-2012	07-12-2012
		10-12-2012	14-12-2012
		17-12-2012	21-12-2012
		04-02-2013	08-02-2013
		11-03-2013	15-03-2013
5.	कानपुर	05-11-2012	09-11-2012
		04-02-2013	08-02-2013
		11-03-2013	15-03-2013
6.	जबलपुर	05-11-2012	09-11-2012
		17-12-2012	21-12-2012
		04-02-2013	08-02-2013
		11-03-2013	15-03-2013

कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने के लिए बेसिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का स्थानवार कैलेंडर (जारी)

क्रम संख्या	स्थान	दिनांक	
		से	तक
7.	कोलकाता	05-11-2012	09-11-2012
		03-12-2012	07-12-2012
		10-12-2012	14-12-2012
		17-12-2012	21-12-2012
		04-02-2013	08-02-2013
		11-03-2013	15-03-2013
8.	मुंबई	05-11-2012	09-11-2012
		03-12-2012	07-12-2012
		17-12-2012	21-12-2012
9.	हैदराबाद	19-11-2012	23-11-2012
		10-12-2012	14-12-2012
		04-02-2013	08-02-2013
10.	नई दिल्ली	03-12-2012	07-12-2012
		17-12-2012	21-12-2012
		14-01-2013	18-01-2013
		11-02-2013	16-02-2013
		18-02-2013	22-02-2013
		18-03-2013	22-03-2013
11.	चेन्नै	03-12-2012	07-12-2012
		10-12-2012	14-12-2012
12.	गोवा	03-12-2012	07-12-2012
13.	बड़ोदरा (गुजरात)	03-12-2012	07-12-2012
14.	मैसूर	10-12-2012	14-12-2012
15.	गुवाहाटी	10-12-2012	14-12-2012

नोट : संपर्क अधिकारियों के नाम पते एवम् फोन नंबर राजभाषा विभाग की वैबसाइट www.rajbhasha.nic.in पर दिए गए हैं ।

विषय : कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने के लिए बेसिक प्रशिक्षण कार्यक्रम

अवधि : पांच पूर्ण कार्य दिवस

पात्रता : भारत सरकार के मंत्रालयों/विभागों, राष्ट्रीयकृत बैंकों और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों/उद्यमों/निगमों/निकायों के अधिकारी/कर्मचारी

क्रमांक	दिन	विषय
1.	प्रथम दिवस	• पंजीकरण • कंप्यूटर परिचय-हार्डवेयर/सॉफ्टवेयर की जानकारी, फाइल प्रबंधन • विंडोज वातावरण परिचय • मानक भाषा एनकोडिंग एवं इसके लाभ - कंप्यूटर पर द्विभाषी सुविधा सक्रिय करना • नोटपैड/वर्डपैड में हिंदी भाषा का प्रयोग • फोंट व टाइपिंग संबंधी समस्याएं एवं उनका निवारण • नॉन-यूनिकोड हिंदी सामग्री को यूनिकोड सामग्री में परिवर्तित करने संबंधी सॉफ्टवेयर का उपयोग • अभ्यास
2.	द्वितीय दिवस	• माइक्रोसॉफ्ट वर्ड
3.	तृतीय दिवस	• माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल तथा अभ्यास • माइक्रोसॉफ्ट पॉवर प्वाइंट तथा अभ्यास
4.	चतुर्थ दिवस	• इंटरनेट ई-मेल • पी.डी.एफ./इमेज प्रोसेसिंग • हिंदी टंकण अभ्यास
5.	पंचम दिवस	• राजभाषा विभाग द्वारा विकसित लीला (LEARN INDIAN LANGUAGES THROUGH ARTIFICIAL INTELLIGENCE) के माध्यम से - प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ की जानकारी ज्ञान एवं अभ्यास • मंत्र तथा श्रुतलेखन सॉफ्टवेयरों की जानकारी एवं अभ्यास • प्रशिक्षणार्थियों द्वारा बतायी गयी सामान्य समस्याओं की चर्चा और निवारण • सामान्य परीक्षा/सामापन

नामांकन-प्रपत्र

टिप्पण : 1. यह कार्यक्रम उन अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए है, जिनके पास कंप्यूटर सुविधा उपलब्ध है, लेकिन उन्हें कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग संबंधी जानकारी कम है ।

2. प्रशिक्षण कार्यक्रम आरंभ होने से एक माह पूर्व नामांकन-प्रपत्र केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान/हिंदी शिक्षण योजना में प्राप्त हो जाने चाहिए ।

3. केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान/हिंदी शिक्षण योजना से नामांकन स्वीकार किए जाने के संदर्भ में विनिर्दिष्ट सूचना/पुष्टि प्राप्त किए जाने से पूर्व किसी भी अधिकारी को प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के लिए निर्मुक्त नहीं किया जाना चाहिए ।

(क) **कार्यक्रम**

शीर्षक : कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग (जो लागू नहीं हो उसे काट दें)

तिथि : संस्था : स्थान :

(ख) **नामांकन**

(1) (i) नाम ....

(ii) पदनाम ....

(iii) हिंदी ज्ञान का स्तर (कार्य साधक) ....

(iv) ई-मेल ....

(v) टेलीफोन नं. ....

(vi) मोबाइल नं. ....

(vii) उपलब्ध कंप्यूटर सुविधा का विवरण (आपरेटिंग सिस्टम, इन्टरनेट की उपलब्धता, क्या आपका ई-मेल एकाउंट है? आदि) ....

(2) यदि पिछले 3 वर्ष में राजभाषा विभाग द्वारा प्रायोजित कंप्यूटर प्रशिक्षण या हिंदी प्रयोग संबंधी सॉफ्टवेयरों का प्रशिक्षण प्राप्त किया है तो उसका विवरण (अवधि, साफ्टवेयर) दिनांक सहित ....

(3) अभ्यर्थी द्वारा किए जाने वाले कार्यों का संक्षिप्त विवरण ....

(4) प्रयोग किए जा रहे कंप्यूटर सॉफ्टवेयरों के नाम व इनमें काम करने का अनुभव ....

(5) क्या मुख्यतया: आप हिंदी में टिप्पणी लिखते हैं? ....

(6) क्या हिंदी टाइपिंग जानते हैं? ....

अभ्यर्थी के हस्ताक्षर ....

नोट : प्रशिक्षणार्थी कृपया अपना ई-मेल पता और संपर्क फोन नं. अवश्य दें ताकि नामांकन की मंजूरी एवं अन्य आवश्यक सूचना समय से देना सुनिश्चित किया जा सके ।

(ग) **अभ्यर्थी के कार्यालय द्वारा भरे जाने के लिए**

1. पूरा पता (नामांकन की स्वीकृति जिस पर भेजी जानी है)

नाम/पद ....

मंत्रालय/विभाग/संगठन ....

पता ....

पिन .... दूरभाष : .... ई-मेल ....

2. प्रमाणित किया जाता है कि

(1) कार्यालय अभिलेख के अनुसार अभ्यर्थी द्वारा दिया गया ब्यौरा सही है;

(2) नामांकन स्वीकार हो जाने पर अभ्यर्थी को प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित होने के लिए निर्मुक्त कर दिया जाएगा;

(3) अभ्यर्थी कंप्यूटर पर कार्य कर रहा है ।

नामांकन भेजने वाले कार्यालय की संदर्भ संख्या ....

स्थान ....

तिथि ....

(अधिकारी के हस्ताक्षर एवं मोहर)

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली के दिनांक 6 सितंबर, 2012 के पत्र सं 19011/15/2012/ के. हि. प्र. सं/ अल्प. ग. प्रशि/1962 से 2461

विषय–संघ सरकार के मंत्रालयों/विभागों तथा उनके नियंत्रणाधीन संबद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों, सार्वजनिक क्षेत्रों के उपक्रमों/सांविधिक निकायों/उद्यमों/अभिकरणों/निगमों तथा राष्ट्रीयकृत बैंकों आदि के कार्यालयों के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए संस्थान द्वारा आयोजित गहन हिंदी कार्यशालाओं का विवरण-वर्ष 2013

महोदय/महोदया,

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा भरत सरकार के मंत्रालयों/विभागों, उनके नियंत्रणाधीन संबद्ध, अधीनस्थ कार्यालयों, सार्वजनिक क्षेत्रों के उपक्रमों/सांविधिक निकायों/उद्यमों/अभिकरणों/निगमों तथा राष्ट्रीयकृत बैंकों आदि के अधिकारियों तथा कर्मचारियों के लिए गहन हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है । इन कार्यशालाओं में सभी कार्यालयों के अधिकारी/कर्मचारी भाग ले सकते हैं ।

वर्ष 2013 में आयोजित की जाने वाली गहन हिंदी कार्यशालाओं का विवरण तिथियों सहित अनुलग्नक-1 में दिया जा रहा है, ताकि सभी संबंधित कार्यालय प्रतिभागियों की सुविधा को ध्यान में रखकर कार्यशाला के वार्षिक कैलेंडर के अनुसार पूरे वर्ष के लिए उन्हें एक साथ नामित कर सकें ।

प्रशिक्षण की संक्षिप्त जानकारी

क्र. सं.	कार्यक्रम का नाम	उद्देश्य	अवधि	भारत सरकार के कार्यालय जिनके लिए प्रशिक्षण अनिवार्य है
1.	गहन हिंदी कार्यशाला	(क) विभागीय अधिकारियों/कर्मचारियों को सरकारी कार्य हिंदी में करने के लिए अभिप्रेरित करना । (ख) विभागीय अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा कार्यालयीन काम को हिंदी में करने की झिझक को दूर करना । (ग) कार्यालयीन कार्य को करने की दक्षता (लेखन कौशल) प्रदान करना । (घ) राजभाषा विभाग द्वारा विकसित यांत्रिक उपकरणों/साफ्टवेयरों की जानकारी प्रदान करना ।	पाँच पूर्ण कार्य दिवसीय	संघ सरकार के मंत्रालय/विभाग तथा उनके नियंत्रणाधीन संबद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालय, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम/सांविधिक निकाय/उद्यम/अभिकरण/निगम तथा राष्ट्रीयकृत बैंक आदि ।

पात्रता

- राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन के लिए सभी कार्यालयों से कहा गया है कि उन सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को कार्यालयीन हिंदी का प्रशिक्षण दिया जाए, जिन्हें हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान *या प्रवीणता **प्राप्त है । (कार्यसाधक ज्ञान एवं प्रवीणता की परिभाषाएँ अलग से * / * * में दी गई हैं ।)
- जो हिंदीतर भाषा-भाषी अधिकारी/कर्मचारी गृह मंत्रालय द्वारा आयोजित प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ पाठयक्रमों में प्रशिक्षण ले चुके हैं, परंतु जिन्हें इसके बावजूद भी हिंदी में कार्यालय का कार्य करने में कठिनाई होती है, उन्हें इन कार्यशालाओं में भेजा जा सकता है ।
- उन अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रवेश में प्राथमिकता दी जाएगी, जिन्होंने अभी तक संस्थान द्वारा संचालित हिंदी कार्यशाला में प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया है ।

* हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त उसे कहा जाएगा जिस कर्मचारी ने :–

- मैट्रिक परीक्षा या उसके समतुल्य या उससे उच्चतर कोई अन्य परीक्षा हिंदी विषय के साथ उत्तीर्ण की है

या

- केंद्र सरकार की हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत आयोजित प्राज्ञ अथवा सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के संबंध में उस योजना के अंतर्गत वांछित परीक्षा उत्तीर्ण की है

या

- यदि वह राजभाषा नियम, 1976 के साथ संलग्न फार्म में यह घोषण करता है कि उसने कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उसके बारे में यह कहा जाएगा कि उसे हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है ।

** हिंदी में प्रवीणता प्राप्त उसे कहा जाएगा जिस कर्मचारी ने :–

- मैट्रिक परीक्षा या उसके समतुल्य या उससे उच्चतर कोई अन्य परीक्षा हिंदी माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है

या

- स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा के समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिंदी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया था

या

- यदि वह राजभाषा नियम, 1976 के साथ संलग्न फार्म में यह घोषणा करता है कि उसे हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है तो उसके बारे में यह कहा जाएगा कि उसे हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है ।

नामांकन विधि एवं प्रपत्र

- उपर्युक्त प्रशिक्षण के लिए नामित किए जाने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों के ब्यौरे अनुलग्नक "3" में दिए गए प्रपत्र में यथा समय इस कार्यालय को भिजवाएं ताकि पत्राचार में किसी प्रकार की कोई कठिनाई न हो ।
- प्रशिक्षण के लिए नामित अधिकारी को यथासमय इस कार्यालय द्वारा अलग से पुष्टि पत्र भेजा जाएगा ।
- केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा पुष्टि दिए जाने के उपरांत ही संबंधित कार्यालय नामित अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षण में प्रवेश के लिए कार्यमुक्त करें ।
- कार्यशालाओं का समय सुबह 9.30 बजे से सायं 6.00 बजे तक निर्धारित है ।
- **प्रशिक्षण केंद्र का पता :** अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण एकक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, 2.ए, पृथ्वीराज रोड़ (जे एंड के हाउस के सामने/राजस्थान भवन के नजदीक) नई दिल्ली-110011

विशेष

- गहन हिंदी कार्यशालाओं के वार्षिक विवरण के लिए अनुलग्नक 'I' देखें ।
- सभी मंत्रालयों, विभागों, उपक्रमों, बैंकों, निगमों आदि के प्रशासनिक प्रमुखों से अनुरोध है कि इस पत्र को सभी संबद्ध एवं अधीनस्थ कार्यालयों/इकाइयों/शाखाओं में शीघ्र परिचालित करवाने का कष्ट करें ।
- यात्रा/दैनिक भत्ता आदि जो भी नियमानुसार देय होगा वह नामित प्रतिभागी के कार्यालय/संगठन द्वारा ही वहन किया जाएगा, इस संस्थान द्वारा नहीं ।
- कृपया यह सुनिश्चित करने का कष्ट करें कि इस कार्यक्रम में जिन अधिकारियों के नामों की पुष्टि इस कार्यालय द्वारा भेजी जाती है उन्हें अवश्य कार्यमुक्त किया जाए । यदि किसी कारणवश उन्हें छोड़ना संभव न हो तो उनके स्थान पर किसी अन्य अधिकारी को भेजा जा सकता है । नामित अधिकारी को ऐसे ही किसी अगले कार्यक्रम में भिजवाने की व्यवस्था करना भी सुनिश्चित करें ।
- प्रशिक्षण पूरा करने के उपरांत प्रत्येक प्रतिभागी को इस संस्थान द्वारा प्रमाण-पत्र तथा कार्यमुक्ति आदेश दिया जाएगा ।
- **संस्थान के अधिकारियों के संपर्क सूत्र प्रशिक्षण केंद्र, हॉस्टल का पता एवं उनके बस रूट/निकटतम मेट्रो स्टेशन आदि के लिए अनुलग्नक-2 देखें ।**
- प्रशिक्षण से संबंधित अन्य वांछित जानकारी के लिए संबंधित प्रभारी सहायक निदेशक से फोन नं. 011-23793521 पर संपर्क करें ।

अनुलग्नक-1

प्रशिक्षण कार्यक्रम कलैंडर - वर्ष 2013
गहन हिंदी कार्यशालाएँ
(पांच पूर्ण कार्य दिवसीय)

क्रम संख्या	कार्यशाला सं.	प्रशिक्षण-अवधि
1.	386	07-01-2013 से 11-01-2013
2.	387	04-02-2013 से 08-02-2013
3.	388	04-03-2013 से 08-03-2013
4.	389	18-03-2013 से 22-03-2013
5.	390	01-04-2013 से 05-04-2013
6.	391	20-05-2013 से 24-05-2013
7.	392	03-06-2013 से 07-06-2013
8.	393	17-06-2013 से 21-06-2013
9.	394	01-07-2013 से 05-07-2013
10.	395	15-07-2013 से 19-07-2013
11.	396	02-09-2013 से 06-09-2013
12.	397	23-09-2013 से 27-09-2013
13.	398	21-10-2013 से 25-10-2013
14.	399	18-11-2013 से 22-11-2013
15.	400	02-12-2013 से 06-12-2013

संपर्क सूत्र

1.	2.
निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, सातवाँ तल, पर्यावरण भवन, सी.जी.ओ.कॉम्पलैक्स, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003 दूरभाष - 011-24361852 फैक्स-011-24361852 ई-मेल dirchti-dol@nic.in	प्रभारी सहायक निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण एकक, 2-ए, पृथ्वीराज रोड, नई दिल्ली- 110011 दूरभाष - 011-23793521 फैक्स-011-23018740 ई-मेल adwschti-dol@nic.in

प्रशिक्षण केंद्र, हॉस्टल का पता तथा उनके बस रूट/निकटतम मेट्रो स्टेशन

प्रशिक्षण केंद्र	हॉस्टल
केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण एकक, 2-ए, पृथ्वीराज रोड, नई दिल्ली-110011 दूरभाष - 011-23793521 **बस रूट** - नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से संघ लोक सेवा आयोग, शाहजहाँ रोड तक बस नं.- एम-13, 56 पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से पृथ्वीराज रोड बस नं.-502 अ.रा.बस. अड्डे से पृथ्वीराज रोड तक बस नं-501, 503, 533, 621 **मेट्रो स्टेशन : खान मार्किट अथवा जोर बाग**	वार्डन (हॉस्टल), केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, फ्लैट नं. 2 गवर्नमेंट हॉस्टल, तीसरा तल, देवनगर, करोल बाग के पास, नई दिल्ली - 110005. दूरभाष - 011-28716509 **बस रूट** - नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से खालसा कॉलेज बस नं. 181 पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से लिबर्टी सिनेमा बस नं.-926 हॉस्टल से संघ लोक सेवा आयोग, शाहजहाँ रोड तक (पृथ्वीराज रोड) बस नं. 450, 181

प्रपत्र

अधिकारी/ कर्मचारी का नाम	पदनाम	मातृभाषा	वर्तमान तैनाती का स्थल	शैक्षिक/ तकनीकी अर्हता	हिंदी का ज्ञान	टेलीफोन न.(कार्यालय /मोबा.)	ई मेल आई डी

प्रायोजक अधिकारी के हस्ताक्षर

पदनाम

कार्यालय का पूरा पता .....

टेलीफोन नं ..... फैक्स नं .....

ई मेल आई डी..

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली के दिनांक 6 सितंबर, 2012 के पत्र सं. 19011/16/2012/ के. हि. प्र. सं/ अल्प. ग. प्रशि/3962 से 5461

विषय—संघ सरकार के समस्त मंत्रालय/विभाग/सरकारी उपक्रम/बैंक/निगम/निकाय/लोक उद्यम/संगठन आदि के प्रबंधक (राजभाषा), संयुक्त/उप/सहायक निदेशक (राजभाषा)/हिंदी अधिकारियों के लिए 05 पूर्ण कार्य दिवसीय अभिमुखी कार्यक्रम का आयोजन वर्ष-2013

महोदय/महोदया,

राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन में राजभाषा अधिकारी अपनी भूमिका का सफलतापूर्वक निर्वाह कर सके इसके लिए प्रशिक्षण की अनिवार्यता को देखते हुए भारत सरकार तथा सार्वजनिक क्षेत्रों के हिंदी अधिकारियों के लिए केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा अभिमुखी कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। वर्ष 1999 से 2012 तक कुल 45 (पैंतालीस), अभिमुखी कार्यक्रम आयोजित किए जा चुके हैं।

यह देखा गया है कि उक्त कार्यक्रम के लिए नामित अनेक अधिकारी प्रशासनिक, व्यक्तिगत या आकस्मिक कारणों से इसमें शामिल नहीं होते, साथ ही अभी भी ऐसे अधिकारियों की संख्या काफी अधिक है जिन्हें किसी भी प्रशिक्षण कार्यक्रम में नामित नहीं किया गया है। इसलिए वर्ष 2013 में भी दो अभिमुखी कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। आपसे अनुरोध है कि अपने अधीनस्थ राजभाषा अधिकारियों को उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम में नामित करने का कष्ट करें।

प्रशिक्षण की संक्षिप्त जानकारी

क्र. सं.	कार्यक्रम का नाम	उद्देश्य	अवधि	नामित अधि. की पात्रता/पदनाम	भारत सरकार के कार्यालय जिनके लिए प्रशिक्षण अनिवार्य है।
1.	अभिमुखी कार्यक्रम	राजभाषा हिंदी की अद्यतन जानकारी देना। राजभाषा संबधी दायित्वों से परिचित कराना। राजभाषा नीति का सफल कार्यान्वयन करना	11-03-2013 से 15-3-2013 तक (पाँच पूर्ण कार्य दिवसीय)	भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन/अनुवाद से जुड़े संयुक्त/उप सहायक निदेशक (रा.भा.), हिंदी अधिकारी, उप/सहा. प्रबंधक (रा.भा.)	भारत सरकार के मंत्रालय, विभाग अधीनस्थ कार्यालय/बैंक/उपक्रम/निगम/निकाय बीमा कंपनी/लोक-उद्यम आदि।
2.	-वही-	-वही-	07-10-2013 से 11-10-2013 तक	-वही-	-वही-

नामांकन विधि एवं प्रपत्र

- उपर्युक्त प्रशिक्षण के लिए नामित किए जाने वाले अधिकारियों के ब्यौरे अनुलग्नक '2' में दिए गए प्रपत्र में यथा समय इस कार्यालय को भिजवाएं ताकि पत्राचार में किसी प्रकार की कोई कठिनाई न हो ।
- प्रशिक्षण के लिए नामित अधिकारी को इस कार्यालय द्वारा अलग से यथासमय पुष्टि पत्र भेजा जाएगा ।
- केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा पुष्टि दिए जाने के उपरांत ही संबंधित कार्यालय नामित अधिकारियों को प्रशिक्षण में प्रवेश के लिए कार्यमुक्त करें ।
- कार्यक्रम का समय सुबह 9.30 बजे से सायं 6.00 बजे तक निर्धारित है ।
- **प्रशिक्षण केंद्र का पता :** अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण एकक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, 2-ए पृथ्वीराज रोड, (जे एंड के हाउस के सामने/राजस्थान भवन के नजदीक) नई दिल्ली-110011

विशेष

- सभी मंत्रालयों, विभागों, उपक्रमों, बैंकों, निगमों आदि के प्रशासनिक प्रमुखों से अनुरोध है कि इस पत्र को सभी संबद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों/इकाइयों/शाखाओं में शीघ्र परिचालित करवाने का कष्ट करें ।
- यात्रा/दैनिक भत्ता आदि जो भी नियमानुसार देय होगा वह नामित प्रतिभागी के कार्यालय/संगठन द्वारा ही वहन किया जाएगा, इस संस्थान द्वारा नहीं ।
- कृपया यह सुनिश्चित करने का कष्ट करें कि इस कार्यक्रम में जिन अधिकारियों के नामों की पुष्टि इस कार्यालय द्वारा भेजी जाती है उन्हें अवश्य कार्यमुक्त किया जाए । यदि किसी कारणवश उन्हें छोड़ना संभव न हो तो उनके स्थान पर किसी अन्य अधिकारी को भेजा जा सकता है । नामित अधिकारी को ऐसे ही किसी अगले कार्यक्रम में भिजवाने की व्यवस्था करना भी सुनिश्चित करें ।
- प्रशिक्षण पूरा करने के उपरांत प्रत्येक प्रतिभागी को प्रमाण-पत्र तथा कार्यमुक्ति आदेश दिया जाएगा ।
- प्रशिक्षण से संबंधित अन्य वांछित जानकारी के लिए संबंधित एकक के प्रभारी सहायक निदेशक से फोन नं. 011-23793521 पर संपर्क करें ।
- संस्थान के अधिकारियों के संपर्क सूत्र प्रशिक्षण केंद्र, हॉस्टल का पता एवं उनके बस रूट/निकटतम मेट्रो स्टेशन आदि के लिए अनुलग्नक-1 देखें ।

अनुलग्नक-1

संपर्क सूत्र

1.	2.
निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, सातवाँ तल, पर्यावरण भवन, सी.जी.ओ.कॉम्प्लैक्स, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003 दूरभाष - 011-24361852 फैक्स-011-24361852 ई-मेल dirchti-dol@nic.in	प्रभारी सहायक निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण एकक, 2-ए, पृथ्वीराज रोड, नई दिल्ली- 110011 दूरभाष - 011-23793521 फैक्स-011-23018740 ई-मेल adwschti-dol@nic.in

प्रशिक्षण केंद्र, हॉस्टल का पता तथा उनके बस रूट/निकटतम मेट्रो स्टेशन

प्रशिक्षण केंद्र	हॉस्टल
केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण एकक, 2-ए, पृथ्वीराज रोड, नई दिल्ली-110011 दूरभाष - 011-23793521 **बस रूट** - नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से संघ लोक सेवा आयोग, शाहजहाँ रोड तक बस नं.- एम-13, 56 पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से पृथ्वीराज रोड बस नं.-502 अ.रा.बस. अड्डे से पृथ्वीराज रोड तक बस नं-501, 503, 533, 621 **मेट्रो स्टेशन : खान मार्किट अथवा जोर बाग**	वार्डन (हॉस्टल), केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, फ्लैट नं. 2 गवर्नमेंट हॉस्टल, तीसरा तल, देवनगर, करोल बाग के पास, नई दिल्ली - 110005. दूरभाष - 011-28716509 **बस रूट** - नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से खालसा कॉलेज बस नं 181 पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से लिबर्टी सिनेमा बस नं.-926 हॉस्टल से संघ लोक सेवा आयोग, शाहजहाँ रोड तक (पृथ्वीराज रोड) बस नं. 450, 181

अनुलग्नक-2

प्रपत्र

अधिकारी का नाम	पदनाम	मातृभाषा	वर्तमान तैनाती का स्थल	शैक्षिक/ तकनीकी अर्हता	हिंदी का ज्ञान	टेलीफोन न.(कार्यालय)/ मोबा.	ई मेल आई डी

प्रायोजक अधिकारी का नाम एवं हस्ताक्षर

पदनाम

कार्यालय का पूरा पता .....

टेलीफोन नं ..... **मोबाइल नं** .....**फैक्स नं** .....

ई मेल आई डी.

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली के दिनांक 6 सितंबर, 2012 के पत्र सं 19011/17/2012/ के. हि. प्र. सं/अल्प. ग. प्रशि./2462 से 3961

विषय–भारत सरकार के विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों के प्रशिक्षकों द्वारा हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण देने के संबंध में – पांच पूर्ण कार्य-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन वर्ष-2013.

महोदय/महोदया,

भारत सरकार के विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों के प्रशिक्षक (Faculty Members) अपने संस्थानों में चलाए जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अंग्रेजी भाषा के साथ-साथ हिंदी भाषा के माध्यम से भी प्रशिक्षण प्रदान कर सकें इसी उद्देश्य के लिए केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा इन प्रशिक्षकों के लिए हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। वर्ष 2012 तक इस संस्थान द्वारा 38 (अड़तीस) प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा चुके हैं। कार्यालयों/प्रशिक्षण संस्थानों में अभी भी ऐसे संकाय सदस्यों (Faculty Members) की संख्या काफी है, जिन्हें यह प्रशिक्षण दिया जाना शेष है इसलिए इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों को वर्ष 2013 में भी चलाने का निर्णय लिया गया है।

अतः आपसे अनुरोध है कि अपने संस्थानों/कार्यालयों के प्रशिक्षकों को उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम में नामित करने का कष्ट करें।

प्रशिक्षण की संक्षिप्त जानकारी

क्र. सं.	कार्यक्रम का नाम	उद्देश्य	अवधि	नामित अधि. की पात्रता/पदनाम	भारत सरकार के प्रशि. : संस्थान/कार्यालय जिनके लिए प्रशिक्षण अनिवार्य है
1.	प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम	विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों के प्रशिक्षकों द्वारा अंग्रेजी तथा क्षेत्रीय भाषाओं के साथ-साथ हिंदी भाषा के माध्यम से भी अनिवार्य रूप से प्रशिक्षण देना ! उनकी हिंदी भाषा की अभिव्यक्ति को अधिक सशक्त बनाना।	06-05-2013 से 10-05-2013 तक (पाँच पूर्ण कार्य दिवसीय)	ऐसे संकाय सदस्य (Faculty Members) जो अंग्रेजी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में प्रशिक्षण दे रहे हैं पर जिन्हें हिंदी भाषा के माध्यम से प्रशिक्षण देने में कठिनाई हो रही है।	भारत सरकार के विभिन्न प्रशिक्षण संस्थान, मंत्रालय, विभाग, सरकारी उपक्रम, बैंक, निगम, सांविधिक निकाय, लोक उद्यम, संगठन आदि।

नामांकन विधि एवं प्रपत्र

- उपर्युक्त प्रशिक्षण के लिए नामित किए जाने वाले अधिकारियों के ब्यौरे अनुलग्नक '2' में दिए गए प्रपत्र में यथा-समय इस कार्यालय को भिजवाएं ताकि पत्राचार में किसी प्रकार की कोई कठिनाई न हो ।
- प्रशिक्षण के लिए नामित अधिकारी को इस कार्यालय द्वारा अलग से यथासमय पुष्टि पत्र भेजा जाएगा ।
- केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा पुष्टि दिए जाने के उपरांत ही संबंधित कार्यालय नामित संकाय सदस्यों (Faculty members) को कार्यक्रम में प्रवेश करने के लिए कार्यमुक्त करें ।
- कार्यक्रम का समय सुबह 9.30 बजे से सायं 6.00 बजे तक निर्धारित है ।
- **प्रशिक्षण केंद्र का पता :** अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण एकक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, 2-ए, पृथ्वीराज रोड, (जे एंड के हाउस के सामने/राजस्थान भवन के नजदीक) नई दिल्ली-110011

विशेष

- सभी मंत्रालयों, विभागों, उपक्रमों, बैंकों, निगमों आदि के प्रशासनिक प्रमुखों से अनुरोध है कि इस पत्र को सभी संबद्ध अधीनस्थ कार्यालयों/इकाइयों/शाखाओं में शीघ्र परिचालित करवाने का कष्ट करें ।
- यात्रा/दैनिक भत्ता आदि जो भी नियमानुसार देय होगा वह नामित प्रतिभागी के कार्यालय/संगठन द्वारा ही वहन किया जाएगा, इस संस्थान द्वारा नहीं ।
- कृपया यह सुनिश्चित करने का कष्ट करें कि इस कार्यक्रम में जिन अधिकारियों के नामों की पुष्टि इस कार्यालय द्वारा भेजी जाती है उन्हें अवश्य कार्यमुक्त किया जाए । यदि किसी कारणवश उन्हें छोड़ना संभव न हो तो उनके स्थान पर किसी अन्य अधिकारी को भेजा जा सकता है । नामित अधिकारी को ऐसे ही किसी अगले कार्यक्रम में भिजवाने की व्यवस्था करना भी सुनिश्चित करें ।
- प्रशिक्षण पूरा करने के उपरांत प्रत्येक प्रतिभागी को इस संस्थान द्वारा प्रमाण-पत्र तथा कार्यमुक्ति आदेश दिया जाएगा ।
- संस्थान के अधिकारियों के संपर्क सूत्र प्रशिक्षण केंद्र, हॉस्टल का पता एवं उनके बस रूट/निकटतम मेट्रो स्टेशन आदि के लिए अनुलग्नक-1 देखें ।
- प्रशिक्षण से संबंधित अन्य वांछित जानकारी के लिए संबंधित प्रभारी सहायक निदेशक से फोन नं. 011-23793521 पर संपर्क करें ।

अनुलग्नक-1

संपर्क सूत्र

1	2
निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, सातवाँ तल, पर्यावरण भवन, सी.जी.ओ. कॉम्पलैक्स, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003 दूरभाष - 011-24361852 फैक्स-011-24361852 ई-मेल dirchti-dol@nic.in	प्रभारी सहायक निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण एकक, 2-ए, पृथ्वीराज रोड, नई दिल्ली-110011 दूरभाष - 011-23793521 फैक्स-011-23018740 ई-मेल adwschti-dol@nic.in

प्रशिक्षण केंद्र, हॉस्टल का पता तथा उनके बस रूट/निकटतम मेट्रो स्टेशन

प्रशिक्षण केंद्र	हॉस्टल
केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण एकक, 2-ए, पृथ्वीराज रोड, नई दिल्ली-110011 दूरभाष - 011-23793521 **बस रूट** - नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से संघ लोक सेवा आयोग, शाहजहाँ रोड तक बस नं. एम-13, पृथ्वीराज रोड 56 पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से बस नं.-502 अ.रा. बस अड्डे से पृथ्वीराज रोड तक बस नं-501, 503, 533, 621 **मेट्रो स्टेशन : खान मार्किट अथवा जोर बाग**	वार्डन (हॉस्टल), केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, फ्लैट नं. 2 गवर्नमेंट हॉस्टल, तीसरा तल, देवनगर, करोल बाग के पास, नई दिल्ली - 110005. दूरभाष - 011-28716509 **बस रूट** - नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से खालसा कॉलेज बस नं. 181 पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से लिबर्टी सिनेमा बस नं.-926 हॉस्टल से संघ लोक सेवा आयोग, शाहजहाँ रोड तक (पृथ्वीराज रोड) बस नं. 450, 181

अनुलग्नक-2

प्रपत्र

प्रशिक्षक का नाम	पदनाम	मातृभाषा	वर्तमान तैनाती का स्थल	शैक्षिक/ तकनीकी अर्हता	हिंदी का ज्ञान	टेलीफोन नं. (कार्यालय)/ मोबा.	ई मेल आई डी.

प्रायोजक अधिकारी का नाम एवं हस्ताक्षर

पद

संस्थान का पूरा पता .....

टेलीफोन नं. ..... **मोबाइल नं.** ..... **फैक्स नं.** .....

ई मेल आई डी.

कार्यालय ज्ञापन

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
नई दिल्ली, दिनांक 30 अक्तूबर, 2012 का
का.ज्ञा. सं 11/12013/01/2011-रा.भा.(नीति/के.अनु.ब्यूरो)

कार्यालय ज्ञापन

विषय :–सरकारी कामकाज (टिप्पण/आलेखन) मूल रूप से हिंदी में करने तथा अधिकारियों द्वारा हिंदी में डिक्टेशन देने के लिए प्रोत्साहन राशि में वृद्धि ।

राजभाषा विभाग के दिनांक 16 फरवरी, 1988 के कार्यालय ज्ञापन सं. 11/12013/3/87-रा.भा.(क-2) के तहत सरकारी कामकाज में मूल हिंदी में आलेखन/टिप्पण के लिए पहले से चलाई जा रही प्रोत्साहन योजना पर वित्त मंत्रालय, व्यय विभाग की सहमति के आधार पर उक्त कार्यालय ज्ञापन में दर्शाई गयी नगद पुरस्कार राशि को राजभाषा विभाग के दिनांक 16 सितम्बर, 1998 के कार्यालय ज्ञापन सं. 11/12013/ 18/93-रा.भा. (नी. 2) के तहत पहले के मुकाबले दोगुना कर दिया गया था ।

2. उपरोक्त योजना के अंतर्गत दी जाने वाली पुरस्कार राशि को बढ़ाने का प्रस्ताव सरकार के पुन: विचाराधीन था । वित्त मंत्रालय, व्यय विभाग की सहमति के आधार पर पुरस्कार राशि को पुन: दोगुना कर दिया है । बढ़ाई गई पुरस्कार राशि निम्न प्रकार है :–

(क)केंद्रीय सरकार के प्रत्येक मंत्रालय/विभाग/संबद्ध कार्यालय के लिए स्वतंत्र रूप से :

पहला पुरस्कार (2 पुरस्कार)	:	प्रत्येक रु. 2000
दूसरा पुरस्कार (3 पुरस्कार)	:	प्रत्येक रु. 1200
तीसरा पुरस्कार (5 पुरस्कार)	:	प्रत्येक रु. 600

(ख) केंद्रीय सरकार के किसी विभाग के प्रत्येक अधीनस्थ कार्यालय के लिए स्वतंत्र रूप से :

पहला पुरस्कार (2 पुरस्कार)	:	प्रत्येक रु. 1600
दूसरा पुरस्कार (3 पुरस्कार)	:	प्रत्येक रु. 800
तीसरा पुरस्कार (5 पुरस्कार)	:	प्रत्येक रु. 600

उक्त योजना के बारे में दिनांक 16 फरवरी, 1988 के कार्यालय ज्ञापन के तहत बनाए गए सभी नियम एवं शर्तें पूर्ववत रहेंगी । पुरस्कार की बढ़ी हुई राशि तत्काल प्रभाव से लागू मानी जाएगी ।

3. ठीक इसी प्रकार इस विभाग के दिनांक 6 मार्च, 1989 के कार्यालय ज्ञापन सं. 11/12013/1/89-रा.भा.(क-2) के तहत अधिकारियों को हिंदी में डिक्टेशन देने के लिए प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत मार्गदर्शी सिद्धांत जारी किए गए थे । उक्त मार्गदर्शी सिद्धांतों में पुरस्कार राशि दिनांक 16 सितम्बर, 1998 के कार्यालय ज्ञापन सं. 11/12013/18/93-रा.भा.(नी. 2) में दिए गए निर्देशों द्वारा 1000 रु. कर दी गई थी । इस योजना में दी जाने वाली राशि अब 2000 रु. कर दी गई है जोकि तत्काल प्रभाव से लागू मानी जाएगी । उक्त मार्गदर्शी सिद्धांत में वर्णित सभी शर्तें पूर्ववत् रहेंगी ।

4. यह कार्यालय ज्ञापन वित्त मंत्रालय, व्यय विभाग की सहमति से उनके दिनांक 09-11-2011 के यू.ओ. सं 1(18)/E.Coord./2011 के अनुसार जारी किया जा रहा है ।

पाठकों के पत्र

राजभाषा भारती अंक 132(अक्तूबर-दिसंबर, 2012) में हिंदी के विषयों में नवीनतम जानकारी, दशा व दिशा के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिली । वास्तव में यह पत्रिका समूचे देश में हिंदी का प्रचार-प्रसार कर रही है । डॉ. बालशैरी रेड्डी का लेख हिंदी क्षेत्र में संभावनाओं को दर्शाता है । डॉ. एम.सी. पाण्डेय का लेख प्रभावशाली लगा । एन गुरुमूर्ति का अनुवादित लेख हिंदी के क्षेत्र में अपना महत्व दर्शाता है । प्रो. डा. तुका राम दौड़ का लेख, मोबाइल पर हिंदी का प्रयोग का संदेश देता है ।

–लक्ष्मण दास कामरा
क्रांति मौहल्ला सीवन, सब तह. सीवन, जिला-कैथल-736033 (हरियाणा)

राजभाषा भारती अंक 133 की सारी साहित्य सामग्री पठनीय एवं संग्रहणीय है । खासतौर पर डॉ. माया दुबे जी बहन का शोधपत्र विशेष मौलिक गुणोकर लेखन संग्रहणीय है ।

–इरफान अहमद खान
2-बी/696, वसुंधरा, गाजियाबाद

त्रैमासिक पत्रिका राजभाषा भारती अंक 133(जनवरी-मार्च, 2012) सुंदर साज-सज्जा, विभिन्न गतिविधियों की झांकी एवं चित्रों द्वारा कही गई व्यथा-गाथा से युक्त हिंदी पर गंभीर चिंतकों से सजी यह पत्रिका मनमोहक लगी ।

–एम. प्रभु
प्रधान संपादक 'विवरण पत्रिका' हिंदी प्रचार सभा हैदराबाद, श्री राम हिंदी भवन, एल. एन. गुप्त मार्ग, नाम पल्ली स्टेशन रोड, हैदराबाद-500001

राजभाषा भारती अंक 133 पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं स्तरीय, पठनीय एवं ज्ञानवर्धक है । भूमण्डलीकरण के दौर में हिंदी के बढ़ते कदम, तथा 'हिंदी के अनन्य सेवक फादर कामिल बुल्के' अत्यंत रोचक, सारगर्भित एवं ज्ञानवर्धक है ।

–अर्जुन केवट
सहायक निदेशक (राजभाषा), मुख्य पोस्टमास्टर जनरल का कार्यालय बिहार सर्किल पटना-800001

त्रैमासिक पत्रिका 'राजभाषा भारती' अंक 133(जनवरी-मार्च, 2012) पत्रिका का कलेवर उच्चकोटि का है तथा इसकी पाठ्य-सामग्री आम लोगों के लिए सहज, सुगम, रोचक एवं ज्ञानवर्धक है । पत्रिका प्रकाशन से जुड़े सभी लोगों को मैं हार्दिक धन्यवाद सम्प्रेषित करता हूँ ।

–डॉ. पुरुषोतम कुमार
वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, राष्ट्रीय धातुकर्म प्रयोगशाला, जमशेदपुर-831007

राजभाषा भारती अंक 133 पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख अत्यंत रोचक एवं आकर्षक है । इसके प्रकाशन से जुड़े सभी व्यक्तियों को उत्कृष्ट कार्य के लिए हार्दिक बधाई ।

–आर महेश्वरी अम्मा
हिंदी अधिकारी, विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र, तिरूवनन्तपुरम

राजभाषा भारती (जनवरी-मार्च, 2012) पत्रिका की सामग्री पठनीय है । काफी जानकारी प्राप्त होती है । 'असम के तुलसी : शंकर देव' लेख बहुत अच्छा है । यह लेख तीर्थाटन पर जाने वालों को मार्गदर्शन देने के तौर पर है ।

–बी. एस. शांताबाई
प्रधान सचिव
कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति, चामराज पेट, बैंगलूर-18

राजभाषा भारती (जनवरी-मार्च, 2012) 133 वां अंक पत्रिका में सभी लेख उच्च कोटि के हैं । लेखकों की सृजन कला को बखूबी से दर्शाया गया है । असम के तुलसी, शंकर देव का लेख पढ़कर बहुत अच्छा लगा ।

–आर. ए. गुप्ता
सहायक वैज्ञानिक अधिकारी
इलेक्ट्रॉनिकी परीक्षण तथा विकास केंद्र, 1/2 फ्लोर, सेन्ट्रल ब्लाक
हाउसफिड कंप्लेक्स, बेलतला, वशिष्ट रोड, गुवाहाटी-781006

राजभाषा भारती अंक 133 का संपादकीय पढ़कर ऐसा लगा मानो पत्रिका की भूमिका से रूबरू हो रहे हैं, अच्छा लगा । स्थाई स्तंभ के अंतर्गत सभी प्रकाशित लेख रुचिकर, ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय हैं । आवरण साज-सज्जा के साथ अनेक कार्यालयों में विविध राजभाषा कार्यक्रमों संबंधित गतिविधियों एवं छाया चित्रों तथा प्रेरक एवं हृदयग्राही विचारों से ओत प्रोत पत्रिका के उत्कृष्ट एवं सारगर्भित प्रकाशन के लिए मेरी ओर से शुभकामनाएं ।

–मंजूषा भटनागर
महा प्रबंधक (भा.सं.वि.)
मंगलूर रिफाइनरी एण्ड पेट्रोकेमिकल्स लि., कुत्तेत्तूर पोस्ट, मंगलूर-575030

राजभाषा भारती अंक 133 राजभाषा हिंदी से संबंधित गतिविधियों से परिचित करने-कराने का एक अच्छा माध्यम है । इस पत्रिका में राजभाषा हिंदी के विषय में सारगर्भित जानकारियां दी गई हैं । विषयों के अंतर्गत उपयोगी सामग्री का संचयन किया गया है ।

–बबीता श्रीवास्तव
ई-305, होस्टल ब्लॉक, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली

राजभाषा भारती अंक 133 में आचार्य शंकर देव पर केंद्रित आलेख उस युगांतरकारी महापुरुष के बहुमूल्य अवदान को रेखांकित करता है । राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों, सम्मेलनों, कार्यशालाओं की रिपोर्टों का प्रकाशन भी अच्छा प्रयास है । इन प्रतिवेदनों से राजभाषा संबंधी गतिविधियों की जानकारी प्राप्त होती है ।

–वीरेन्द्र परमार
1091/टाइप V, एन.एच-4, फरीदाबाद-121001

राजभाषा भारती पूरे भारत के विभिन्न विभागों द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में किए गए उल्लेखनीय कार्यों को प्रतिबिंबित करती है । यह पत्रिका एक दर्पण के रूप में हमारे सामने आती है, जिसमें हम पूरे भारतवर्ष की छवि देखते हैं ।

–इन्ताज अली
कनिष्ठ कार्यपालक (राजभाषा)
विमानपत्तन निदेशक का कार्यालय, बिरसा मुँडा, हवाई अड्डा, रांची

राजभाषा भारती अंक 133 पत्रिका में राजभाषा हिंदी के संबंध में विविध ज्ञानवर्धक सामग्री जैसे राजभाषा का विकास, भारत का वर्तमान समाजिकार्थिक परिदृश्य और हिंदी, भूमण्डलीकरण के दौर में हिंदी के बढ़ते कदम आदि दी गई है । इसके अलावा पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी से संबंधित अद्यतन सूचनाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं ।

–महेश कुमार
तकनीकी सहायक (हिंदी)
ज्वार अनुसंधान निदेशालय, राजेन्द्र नगर हैदराबाद- 500030

MGIPRRND—4780 HA/2012—5,000

भाषण देते हुए श्री मधुकांत गिरधरलाल संघवी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, सिंडिकेट बैंक, (कुर्सी पर बैठे हुए) दायें से बायें सर्वश्री टी. मुरलीधरन, महा प्रबंधक, सिंडिकेट बैंक, श्री सी.पी. ढौंडियाल, संयुक्त निदेशक, वित्तीय सेवाएं विभाग, भारत सरकार, डॉ. रमाकांत गुप्ता, उप महा प्रबंधक, भारतीय रिज़र्व बैंक, श्री एम.वी. अशोकन, उप महा प्रबंधक, भारतीय रिज़र्व बैंक तथा अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के ठीक पीछे बैठे हुए डॉ. श्याम किशोर पाण्डेय, सहायक महा प्रबंधक (राजभाषा)।

ग्रुप केंद्र के.रि.पु. बल, सोनीपत में आयोजित 'हिंदी दिवस समारोह' में पुरस्कार ग्रहण करते हुए एक जवान।

प.सं. 3246/77
आई एस एम एन 0970-9398

"यदि हम अंग्रेजी के आदी नहीं हो गए होते, तो यह समझने में देर नहीं लगती कि अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाने से हमारी बौद्धिक चेतना जीवन से कट कर दूर हो गई है । हम अपनी जनता से अलग हो गए हैं, जाति के सर्वश्रेष्ठ विभागों का विकास रुक गया है और जो विचार हमें अंग्रेजी के माध्यम से मिले, उन्हें हम जनता में फैलाने में नाकामयाब रहे हैं । जो विरासत हमें अपने-अपने बाप-दादा से हासिल हुई, उसके आधार पर नवनिर्माण करने के बदले हमने उस विरासत को भूलना सीखा है । इस दुर्गति की मिसाल सारी दुनिया के इतिहास में नहीं है । यह तो राष्ट्रीय शोक का विषय है । आज की सबसे पहली और सबसे बड़ी समाज सेवा यह है कि हम अपनी देशी भाषाओं की ओर मुड़े और हिंदी को राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करें ।"

–महात्मा गांधी

भारत सरकार, राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय), एनडीसीसी-II भवन, नई दिल्ली-110003 के लिए शान्ति कुमार स्याल, सहायक संपादक द्वारा प्रकाशित तथा प्रबंधक, भारत सरकार मुद्रणालय, रिंग रोड, मायापुरी, नई दिल्ली-110064 द्वारा मुद्रित ।